UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182967
UNIVERSAL
LIBRARY

मृणाल-मञ्जूषा

काव्य

डॉ. ब्रजकिशोर मिश्र

OUP—68—11-1-68—2,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 B57B Accession No. PG H2411

Author भूषण.

Title भूषण मञ्जूषा. संपा. ब्रजकिशोर मिश्र

This book should be returned on or before the date last marked below.

भूषण-मञ्जूषा

सम्पादक

ब्रजकिशोर मिश्र, एम० ए०, पी-एच० डी०

प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग,

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

C विश्वविद्यालय प्रकाशन

मूल्य—दो रुपया

Checked 1969

प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, नखास चौक, गोरखपुर
मुद्रक—ओमप्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस) ५२१४—१९

पूर्व-परिचय

युग—हिन्दी-साहित्य के इतिहास में सं० १७०० से १९०० विक्रमीय का युग शृंगार अथवा रीतियुग के नाम से प्रसिद्ध है। काव्य-कला का सर्वाङ्गीण विकास ही इस युग की विशेषता है। शृङ्गार को प्रधान विषय के रूपमें ग्रहण करके कवियों ने कलात्मक शैली में उसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन करना ही इस युग में अपना आदर्श बनाया था। केशव, चिन्तामणि, जोधपुर नरेश महाराज जसवन्त सिंह, बिहारी, मतिराम, भूषण, देव, दास, पद्माकर, घनानन्द, ठाकुर, बोधा आदि कितने ही कवियों ने इस युग में रीति-शृङ्गार-काव्य की रचना को अपना लक्ष्य बनाया। कल्पना, आलंकारिकता तथा भाषा-सौष्ठव इन कवियों की विशेषता थी और इनकी सहायता से उस युग में जिस प्रकार का काव्य रचा गया, उसकी तुलना का कलात्मक-साहित्य अन्यत्र दृष्टि-गत नहीं होता।

कवि अपने युग की प्रतिकृति होता है। शृंगारयुग में इस प्रकार की कलात्मक रचना होने के भी कुछ विशेष कारण थे। अवश्य ही यह आश्चर्य की बात है कि तत्कालीन शासन-व्यवस्था में जनसाधारण की स्थिति अत्यन्त दयनीय होते हुए भी, इस प्रकार का शृंगारी काव्य रचा गया, जिसमें वासना की उच्छृंखलता स्पष्टतया दृष्टिगत होती है, किन्तु इस प्रश्न का समाधान सर-लता पूर्वक हो सकता है यदि हम तटस्थ दृष्टि से इस पर विचार करें। इसके लिए तत्कालीन परिस्थितियों पर एक दृष्टि डाल लेने से बात बहुत-कुछ स्पष्ट हो जायगी।

ऐतिहासिक दृष्टि से अकबर, जहाँगीर तथा शाहजहाँ का शासन अपनी सुख-समृद्धि, कला-प्रेम तथा ज्ञानवृद्धि के लिए प्रसिद्ध है। ये मुगल सम्राट् प्रजापालक तथा न्यायप्रिय थे। इनके समय में काव्य, साहित्य. नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि की भी पर्याप्त उन्नति हुई, किन्तु सन् १६५८ ई० में औरंगजेब

का शासन आरम्भ होने के साथ-साथ परिस्थितियों में बहुत-कुछ परिवर्तन हो गया। उसका मूल कारण था औरंगजेब का आतंकवाद तथा उसकी धर्मान्धता। कला की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि अनधिकारी हाथों में पड़कर वह अति शीघ्र विकृत रूप धारण कर लेती है। अकबर आदि के समय में विकसित कला-प्रेम इस युग में विकृत होकर जनता को पतन की ओर खींचने लगा। स्त्रैणता का साम्राज्य हो उठा, विलास के तप्त झोंके जनता के हृदय की सरसता को सुखाने लगे। उधर अकालों तथा राजकरों की मार से साधारण जनता बुभुक्षित ही बनी रही; न तो उसे शारीरिक शान्ति मिल रही थी और न मानसिक, क्योंकि शासकों की धर्मान्धता उन्हें अपने धर्म में जीने भी नहीं देना चाहती थी। उन्हें निरन्तर धर्म-परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाता था। इसी अभावग्रस्त दशा में उन्हें शासनाधिकारियों की सब प्रकार की सेवा करनी पड़ती थी। छोटे-छोटे राजे-महाराजे अपने शासकों का अनुकरण करते थे, उन्हीं के मार्ग का अनुगमन करते थे। उनके दरबारी कवि उनका यशगान करते थे, उनकी साधारण विशेषताओं को वृहत् आकार देकर उन्हें इन्द्र, वरुण, यम, कुबेर, युधिष्ठिर, कृष्ण आदि से संतुलित करते थे। क्योंकि उनसे जीविका चलती थी।

जीवन अरक्षित था। केवल सम्राट की आज्ञा ही कानून थी। राजकोप किसी भी व्यक्ति को तत्क्षण समाप्त कर सकता था। आपस में युद्ध चलते रहते थे, छीन झपट मची रहती थी। कविगण जिस रजवाड़े में पहुँच गए, उसी की प्रशंसा के गीत गाने लगे! अथवा यदि शान्ति का समय हुआ तो उसे शृंगार रस की चटकीली कविता सुनाकर उसका 'मनोरंजन' करने लगे। यह मनोरंजन साधारण काव्य-चमत्कार से लेकर विकृत वासना की परिणति तक में देखा जा सकता है। दरबारी वातावरण तथा रूढ़िवादिता ही इस कविताका मूलाधार बन गई।

इस युग के पूर्ववर्ती कवियों ने प्रशस्ति-काव्य तथा निर्गुण-सगुण उपासना सम्बन्धी काव्य की समृद्ध परम्पराएँ छोड़ी थीं। शृंगारयुग के कवियों ने उन परम्पराओं को जाने-अनजाने, अपनाया ही था। अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा करने में वे चन्द आदि चारणकालीन काव्य-भाषा तथा शैली को भी

अपनाते थे और अपने जीवन के भक्तिपक्ष को चरितार्थ करने के लिए वे प्रचुर परिमाण में राम तथा कृष्ण सम्बन्धी काव्य की भी रचना करते थे। अपने भक्तिभाव को व्यक्त करने के लिए ही किसी कवि ने कहा था "आगे के सुकविरीझि हैं तौ कबिताई, न तौ राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।" तात्पर्य यह है कि जो सत्कवि मेरे काव्य को श्रेष्ठ नहीं समझता, वह न समझे, मैं अपनी भक्ति भावना को चरितार्थ करके ही संतोष कर लूँगा। मेरे लिए काव्य-रचना भक्ति की तुष्टि का माध्यम ही सही। यह बात अवश्य है कि कृष्ण-काव्य में भक्ति का आधार शृङ्गारिक था, और जैसा हमने कहा है कि अनधिकारी हाथों में पड़कर कला विकृत हो जाती है, यह कृष्ण का आदर्श भी, भक्तिभाव की न्यूनता तथा शृङ्गारभाव की प्रबलता के कारण, विकृत हो गया। उन्हें इस युग के कवियों ने केवल एक सामान्य नायक बनाकर छोड़ दिया। हाँ, यह भी कहा जा सकता है कि इस कृष्ण के नायकत्व के पीछे केवल इस शृङ्गारी युग के कवि ही नहीं थे; इसके पीछे एक सुदीर्घ परम्परा भी थी जिसका आदि रूप हिन्दी-साहित्य में विद्यापति जैसे कवियों में दृष्टिगत होता है और जिसमें कृष्ण का विलासी रूप बहुत कुछ स्पष्ट लक्षित होता है। दूसरी ओर काव्य-शास्त्र के विद्वान् कवियों ने साहित्य-क्षेत्र में शास्त्रीय परम्पराएँ भी छोड़ी थीं। रस-विवेचन, नायिका-भेद, अलंकार-शास्त्र, शब्दशक्ति-विवेचन आदि परम्पराएँ संस्कृत-कवियों द्वारा स्थापित की जा चुकी थीं और इस युग के कवि अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करने के लिए इन्हीं में से किसी एक साहित्यशैली को चुन लेते और उस पर काव्य-रचना करते थे। यही काव्य-रचना की तत्कालीन परिपाटी थी, ऐसा कहना अनुचित न होगा।

कृष्ण-काव्य के मनोरम वातावरण, आनन्दमयी क्रीड़ाओं का चित्रण सूर आदि कवियों ने जिस भाषा में किया था, उसकी मधुरता का प्रभाव कवि वर्ग के ऊपर पूर्णतया पड़ चुका था और इस युग तक आते-आते व्रजभाषा ही काव्य की प्रमुख भाषा बन गई थी। ऐसा लगता है कि व्रजभाषा और कृष्णकाव्य अविच्छिन्न से हो गए थे और इसीलिए शृङ्गारयुग भी इन दोनों को एक साथ लेकर चलता रहा। तुलसी की अवधी के माध्यम से जिस मर्यादावाद का चित्रण किया गया था, सामाजिक दृष्टि से शृङ्गारयुग में उसका विशेष महत्त्व

नहीं रहा, फलतः अवधी को केवल सन्त कवियों ने अपनी धार्मिक अथवा आध्यात्मिक विचारधारा को व्यक्त करने का माध्यम बनाया।

एक ओर इस प्रकार का राजनैतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक वातावरण काव्य-रचना का मूलाधार बना हुआ था, स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थितियों में तत्कालीन कवि को अपने वातावरण से प्रभावित होना अनिवार्य ही था—दूसरी ओर हिन्दू-राष्ट्र को दृष्टि में रखते हुए, दूसरी प्रकार की परिस्थितियाँ सम्मुख आती हैं।

औरंगजेब के अत्याचारपूर्ण शासन की प्रतिक्रिया में हिन्दू-संगठन को आधार मिला। मुगल-साम्राज्य पतनोन्मुख था। इस परिस्थिति से लाभ उठाकर शिवाजी, महाराज जसवंतसिंह (जोधपुर नरेश), महाराणा राजसिंह, चंपतराय बुन्देला तथा उनके पुत्र छत्रसाल, बाजीराव पेशवा आदि वीर-शिरोमणि हिन्दू राजाओं ने एकबार फिर प्रयत्न करके आर्य-साम्राज्य की स्थापना की। शृंगारयुग की काव्य-रचना के बीच में वीरभाव के लिए पर्याप्त आलम्बन, इन महापुरुषों के रूप में, उपस्थित हुआ। इनमें से अनेक राजे स्वयं अच्छे कवि तथा साहित्य-प्रेमी थे, अतः सत्कवियों को आश्रय देकर उन्हें प्रोत्साहित करने को प्रस्तुत रहते थे। इस प्रकार शृंगार और वीर दोनों रसों की काव्य-रचना के लिए पर्याप्त पृष्ठभूमि इस युग में प्रस्तुत थी और ऐसे ही वातावरण में हमारे चरितनायक, वीर कवि भूषण का आविर्भाव हुआ था। यदि उक्त सारी परिस्थितियों पर दृष्टि रखते हुए हम इस शृंगारयुग के काव्य की परीक्षा करें तो यह स्पष्ट हो जायगा कि कवियों ने उस समय जो कुछ लिखा, वही उनके लिए स्वाभाविक था; उसके अतिरिक्त वह और लिख ही क्या सकते थे ? उन्हें जिस प्रकार का आधार मिला उसी प्रकार की कृतियाँ उन्होंने प्रस्तुत कीं—इस ऐतिहासिक दृष्टि से देखते हुए हमें इस युग की कृतियों की परीक्षा करनी चाहिए।

जीवनी—कविवर भूषण की जीवनी पर बहुत वाद-विवाद चल चुका है। कुछ सज्जनों ने ऐसे मतभेद उपस्थित किए हैं जिनके कारण भूषण के जन्म तथा आविर्भाव-काल में अनावश्यक भ्रम उत्पन्न हो गया है। आदरणीय श्री मिश्रबन्धु, पं० भगीरथप्रसाद दीक्षित, पं० कृष्णबिहारी मिश्र तथा आचार्य

पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने भूषण की जीवनी पर विशेष खोज-पूर्ण लेख लिखे हैं। आचार्य मिश्र का कार्य इस विषय में अभी तक अन्तिम है। हम इन तथा अन्य विद्वानों के आधार पर भूषण का संक्षिप्त जीवन-परिचय यहाँ पर दे देना उपयुक्त समझते हैं।

जिला कानपुर में घाटमपुर तहसील के अन्तर्गत, यमुना के बाएँ तट पर, तिकवांपुर (त्रिविक्रमपुर) नामक ग्राम है। कविवर भूषण का जन्म इसी ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी अथवा रतिनाथ त्रिपाठी था। ये कश्यप गोत्र, त्रिपाठी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। प्रसिद्ध है कि इस ग्राम के निकट ही 'अकबरपुर बीरबल' नामक ग्राम में प्रसिद्ध राजा बीरबल का जन्म हुआ था और इसी ग्राम के निकट सड़क के किनारे देव बिहारेश्वर महादेव का मन्दिर है। तिकवाँपुर, कानपुर से हमीरपुर रोड पर, प्रायः ४० मील की दूरी पर है। कानपुर से घाटमपुर प्रायः तीस मील है। और उससे आगे ७-८ मील 'सजेती' नामक ग्राम है, तिकवाँपुर इससे प्रायः दो मील रह जाता है। इसी क्षेत्र में भूषण के घर का ध्वंसावशेष 'कबिन का घर' और उनके बाग़ के कुछ पेड़ 'कबिन का बाग' नाम से अब भी विद्यमान् है।

रत्नाकर जी बड़े देवी-भक्त थे और गाँव से थोड़ी दूर पर, देवी मन्दिर में नित्य पाठ करते थे। कहते हैं कि देवी ने इन्हें स्वप्न में पुत्रवान् होने का आशीर्वाद दिया और इनके, चिंतामणि, भूषण, मतिराम और नीलकंठ (उपनाम जटाशंकर) चार पुत्र हुए। कविवृत्त लेखकों ने चिंतामणि, भूषण तथा मतिराम के नाम तो लिए हैं, किन्तु जटाशंकर का नाम प्रायः नहीं मिलता।

भूषण का जन्मकाल प्रायः सभी विद्वानों ने सामान्यतः १६१४ ई० माना है। भूषण इनका वास्तविक नाम नहीं था। विद्वानों ने इनके नाम पतिराम, मनिराम तथा घनश्याम अनुमान किए हैं। जो भी हो, चित्रकूटपति हृदयराम ने इन्हें 'कवि भूषण' की पदवी प्रदान की थी। संभव है इनका वास्तविक नाम भूषण ही हो और हृदयराम ने इन्हें कोरे भूषण से 'कवि-भूषण' बना दिया हो।

चारों भाइयों में चिंतामणि तथा मतिराम, क्रमशः मुगल दरबार तथा

बूँदी दरबार में रहते थे। भूषण घर पर ही रहते थे और अकर्मण्य थे। भोजन के समय भाभी से नमक माँगने पर जब व्यंग्य मिला तो भोजन छोड़कर घर से निकले, यह कथा प्रसिद्ध है। एक कथा और प्रसिद्ध है कि भूषण की पत्नी गणेश चतुर्थी को गणेश-पूजा करने नहीं गई तब उसकी जेठानी ने व्यंग्य किया कि पति से कहकर जीवित गणेश मँगा लो। कहते हैं कि भूषण ने प्रचुर मात्रा में नमक तथा कई हाथी इन व्यंग्यों को चरितार्थ करने के लिए भेजे थे।

किंवदंती है कि घर से निकल कर भूषण ने अपनी जिह्वा काटकर देवी पर चढ़ाई और खूब अध्ययन किया ; थोड़े दिनों में ये श्रेष्ठ कवि हो गए।

इतिहास-ग्रंथों से ऐसा पता चलता है कि भूषण सबसे पहले चित्रकूटपति हृदयराम सोलंकी के पुत्र रुद्रराम के दरबार में रहे। १६६६ ई० के लगभग इन्हें वहीं 'कविभूषण' की उपाधि मिली। इसके उपरान्त उनका शिवाजी के दरबार में जाना ज्ञात होता है। १६६७ ई० के अन्त में उनका वहाँ जाना कुछ विद्वान् मानते हैं। कुछ समय वहाँ रहने के उपरान्त वे घर लौटे और फिर अपने भाई चिन्तामणि के साथ औरंगजेब के दरबार में पहुँचे। वहाँ उन्होंने औरंगजेब को वीर-रस की कविता सुना कर मुग्ध कर लिया। मूँछों पर बरबस ताव देने की प्रेरणा उन्होंने शर्त लगाकर उत्पन्न कर दी। औरंगजेब की प्रशंसा उसके दरबारी कवि करते ही रहते होंगे; एक दिन उसने अपनी निन्दा सुननी चाही; भूषण इस शर्त पर प्रस्तुत हो गए कि उन्हें क्षमा प्रदान की जाय तो वे कुछ कहें। क्षमा मिलने पर उन्होंने दो छन्द (पृष्ठ ४१-१२५-२६) पढ़े जिन्हें सुनकर औरंगजेब क्रुद्ध तो बहुत हुआ किन्तु उसे इनको क्षमा करना ही पड़ा। भूषण तुरंत ही वहाँ से शिवाजी के यहाँ के लिए चल दिए। शिवाजी ने छद्मवेश में, "इन्द्र जिमि जम्भ पर·····" वाला छन्द रायगढ़ के बाहर देवालय में टिके हुए भूषण जी से ५२ बार सुना और उनको ५२ गाँव, ५२ हाथी तथा ५२ लाख रुपया दिया, ऐसी जनश्रुति है। कुछ विद्वान् ५२ के स्थान पर केवल १८ बार छंद का पढ़ा जाना कहते हैं। इतना तो निश्चित है कि इस अवसर पर भूषण का पर्याप्त सम्मान हुआ और उन्हें पर्याप्त धन मिला। दूसरे दिन वे दरबार में उपस्थित हुए और शिवाजी के राजकवि हो गए। उस समय से १६७३ ई० तक 'शिवराज-भूषण' की रचना हुई।

१६७४-७५ के लगभग भूषण जी घर लौटे। मार्ग में वे छत्रसाल बुन्देला के यहाँ गए। इसी अवसर पर कवि को विदा करते समय छत्रसाल ने उनकी पालकी का डंडा कन्धे पर रख लिया और भूषण जी ने पालकी से कूदकर उनकी प्रशंसा में कई छन्द पढ़े। छत्रसाल इस समय २४-२५ वर्ष के युवक थे।

कुछ समय के बाद भूषण जी कुमाऊँ नरेश के यहाँ गए और फिर घर लौटकर पुनः शिवाजी के यहाँ जाकर रहे। १६८० ई० में शिवाजी स्वर्गवासी हुए। भूषण जी घर आ गए और छत्रसाल के यहाँ आते-जाते रहे। १७०७ ई० में साहूजी औरंगजेब के कारागार से छूटे और सिंहासन पर बैठे। भूषणजी उनके दरबार में गए। वहाँ से ससम्मान वे वापस आए और घर पर रहने लगे।

१७१० ई० के लगभग भूषण जी प्रायः ७० वर्ष की आयु में मतिराम जी के साथ बूँदी नरेश रावबुद्धसिंह के यहाँ गए और उनके प्रपितामह छत्रसाल हाड़ा की प्रशंसा की (छन्द १२४), शिवाजी की तुलना में यहाँ इनका उतना सम्मान नहीं हुआ। १७१५ में ये एकबार फिर साहूजी के दरबार में गए, ऐसा विद्वानों का अनुमान है। लगभग १७४० ई० तक इनकी काव्य-रचना के प्रमाण विद्यमान् हैं। भगवन्तराय खीची इस समय के लगभग, अवध के नवाब सआदत खाँ से युद्ध करके मारे गए (छन्द १२७)। इसके उपरान्त भूषण की कविता के प्रमाण नहीं हैं अतः इस समय तक उनका जीवित रहना स्वीकार किया जा सकता है। लगभग १०५ वर्ष की आयु तक वे जीवित रहे।

आश्रयदाता—अपने जीवनकाल में भूषण अनेक राजा महाराजाओं से मिले और उनकी प्रशंसा भी की। बाजीराव पेशवा, शिवाजी के सेनापति चिमणा जी, रीवाँ नरेश अवधूत सिंह, जयपुर नरेश जयसिंह, इनके पुत्र रामसिंह, अलीगढ़ के पौरच नरेश अनिरुद्ध सिंह, बूँदीनरेश बुद्धराव आदि अनेक राजाओंकी प्रशस्तियाँ इनके काव्य में मिलती हैं। परन्तु प्रधानतया इनके आश्रयदाता चित्रकूटपति हृदयराम सोलंकी, महाराज क्षत्रसाल, महाराज शिवाजी तथा उनके पौत्र साहू जो थे।

हृदयराम सोलंकी परगना गहोरा (बाँदा)के राजा थे। चित्रकूट सम्भवतः

इसी के अन्तर्गत था। ये रुद्रशाह के पुत्र थे। इन्हींने भूषण को 'कवि भूषण' की पदवी प्रदान की [छन्द २८] यह सन् १६६६ ई० की घटना है।

महाराज छत्रसाल का जन्म १६५० ई० में हुआ था। ये सूर्यवंशी गहरवार क्षत्रिय थे। इनके पिता का नाम चंपतिराय था और ये बुँदेलखंड के एक जागीरदार थे। शाहजहाँ से इनका बराबर युद्ध होता रहा। एक बार एक बड़ी सेना का सामना न कर सकने के कारण ये शाहजहाँ के अधीन हो गए और कोंच का परगना इन्हें जागीर में मिला। औरंगजेब और दारा के युद्ध में इन्होंने औरंगजेब का साथ दिया जिससे प्रसन्न होकर उसने इन्हें एक बड़ी जागीर और बारह हजारी मनसब दिया। परन्तु स्वाधीनता प्रेमी छत्रसाल ने उसे बहुत शीघ्र छोड़ दिया। वे स्वतंत्रता के लिए युद्ध करने लगे। इन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े। और अंत में विश्वासघातियों के हाथ इनकी मृत्यु हुई।

छत्रसाल का लालन-पालन अपने मामा के यहाँ हुआ था परन्तु १३ वर्ष की आयु में ये पिता के साथ रहने लगे थे। पिता की मृत्यु के समय ये १५ वर्ष के थे। इसके उपरान्त ये अपने चाचा सुजानराय के पास महेवा पहुँच गए और वहीं उनकी समुचित शिक्षा हुई। अपने पिता के शत्रुओं को उचित दण्ड देने का यह अवसर खोजते रहे। सुजानराय इनकी बातों से घबराते थे, अतः ये उनको छोड़कर चल पड़े। अपने भाई अंगदराय के परामर्श से इन्होंने महाराज जयसिंह के अधीन मुगल सेना में कार्य करना आरम्भ किया किंतु जब इन्हें उचित सम्मान न मिला तो ये स्वाधीनता-स्थापन का उद्योग करने लगे। सन् १६७१ में ये शिवाजी से मिले किन्तु उन्होंने उन्हें बुन्देलखंड में ही कार्य करने का परामर्श दिया। छत्रसाल मुगलों से लड़ने का आयोजन करने लगे। धीरे-धीरे उन्होंने सेना-संग्रह किया और कुछ बुंदेले सरदारों को अपने पक्ष में किया। उन्होंने लूटमार आरम्भ कर दी।

१६७१ ई० धंधेरा सरदार कुँअरसेन को परास्त करके इन्होंने उसकी भतीजी से विवाह किया। सिरौंज के थानेदार मुहम्मद अमीन खाँ (मुहम्मद हाशिम खाँ) के हाथों से इन्होंने शाही खजाना लूट लिया। धामुनी के सरदारों तथा बाँसी के केशवराय को परास्त किया। ग्वालियर के सूबेदार सैयद बहादुर खाँ ने इन्हें पकड़ना चाहा किन्तु सफल न हो सका। उलटे इन्होंने ग्वालि-

यर के पवाँय स्थान को लूट लिया—सूबेदार के आक्रमण करने पर उसे ग्वालियर तक खदेड़ कर नगर भी लूट लिया।

सन् १६७८ में छत्रसाल ने पन्ना नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया। औरंगजेब इनसे आतंकित हो रहा था। उसने रनदूला खाँ को इन पर आक्रमण करने भेजा। उसे इन्होंने वीरतापूर्वक युद्ध करके भगा दिया। सेनापति तहव्वर खाँ को इन्होंने दो बार परास्त किया और इसके उपरान्त कालिंजर का किला मुगलों से छीन लिया। अन्य कई मुगल सेनापतियों को इन्होंने बार-बार बुरी तरह हराया। सबसे इन्होंने भेंट की अच्छी रकम तथा चौथ वसूल की।

सन् १६८७ ई० में छत्रसाल ने राजा की उपाधि ग्रहण की। योगिराज प्राणनाथ की आज्ञा से इनका राज्याभिषेक हुआ। औरंगजेब ने १६९० ई० में अमीर अब्दुस्समद को इन पर आक्रमण करने भेजा। मौदहा में इन्होंने उसे बुरी तरह हराया। सूबेदार बहलोल खाँ ने इन पर, भेलसा के निकट, तीन बार आक्रमण किया किन्तु उसे इन्होंने समाप्त कर दिया। सन् १७०० में इन्होंने सैयद अफगन तथा शाह कुली को परास्त किया और मुगलों से इनके युद्धों का अन्त हुआ। यमुना और चंबल के दक्षिण की ओर का सारा देश अब इनके अधीन हो गया। सन् १७०७ में औरंगजेब की मृत्यु के बाद इनका शासन अत्यन्त दृढ़ हो गया। ये शिवाजी की शासन-प्रणाली को अपनाते थे। वृद्धावस्था में राज्य का अपने पुत्रों में विभाजन कर दिया और शान्तिपूर्वक ८५ वर्ष की आयु तक जीवित रहे। १७३३ में इनका देहान्त हुआ।

फर्रुखाबादका फौजदार मुहम्मद खाँ बंगश सन् १७२२ में बहुत प्रबल हुआ। इनके पुत्र जगतराय के इलाके जैतपुर पर उसने आक्रमण किया। छत्रसाल प्रायः ७५-७६ वर्ष के थे। उन्होंने पेशवा बाजीराव से सहायता माँगी और उन्होंने सहायता देकर १७२९ ई० में बंगश को परास्त कर दिया।

छत्रसाल ने आजीवन हिन्दू स्वतंत्रता के लिए युद्ध किया—घोर संकट सहन किये और जाति-संगठन के लिए प्रयत्नशील रहे। वे शौर्यवान् तथा साहसी व्यक्ति थे। विद्वान् तथा सत्पुरुष थे और गुणियों का आदर करते

थे; श्रेष्ठ कवि थे। भूषण ने यदि "साहू को सराहौं, कै सराहौं छत्रसाल को" कहा तो वह अतिशयोक्ति नहीं थी।

छत्रपति शिवाजी भूषण के सर्वप्रसिद्ध आश्रयदाता थे। सिसौदिया वंश के गौरव महाराणा प्रताप के वंश में भोंसा जी की सन्तान भोंसले कहलाई। ये दक्षिण में आ बसे। इन्हीं के वंशज मालोजी (मालमकरन्द) थे। इनके पुत्र शाहजी हुए। जिनकी पत्नी जीजी बाई शिवाजी की माता थीं। शिवाजी का जन्म सन् १६२७ में पूना के निकट शिवनेरी गढ़ में हुआ था। इसी से इनका नाम, उस किले की इष्टदेवी 'शिवाई' के नाम पर, शिवाजी रक्खा गया। उस समय महाराष्ट्र प्रदेश युद्धों के कारण अशान्त था। इनका शैशव काल माता के साथ बीता परन्तु इनकी शिक्षा-दीक्षा शाहजी के प्रबन्ध कर्ता दादाजी कोणदेव तथा माता जीजा बाई के संरक्षण में, पूना के निकट, अपनी जागीर पर हुई। इस शिक्षा में प्रधानता युद्ध-कला तथा राजकीय शिक्षा की थी। माता के प्रभाव से इनका हृदय धार्मिक भावों से ओतप्रोत हो उठा और ये अत्यन्त धर्मनिष्ठ तथा जातिसेवक बन गए।

नवयुवावस्था में ही अपनी मावली जाति के युवकों का एक छोटा सा दल बनाकर ये युद्धों में संलग्न हो गए। तोरना का दुर्ग इन्होंने १९ वर्ष की अवस्था में जीता और फिर अनेक दुर्ग जीतते गए। बीजापुर से इनका संघर्ष हुआ और फलतः इनके पिता को बीजापुर में कैद होना पड़ा। शिवाजी कुछ समय के लिए शान्त हो गए, परंतु पिता के मुक्त होते ही फिर युद्ध आरम्भ कर दिए।

सन् १६५६ में इन्होंने जावली प्रान्त को जीत कर अपना प्रतापगढ़ नामक किला वहीं बनवाया। औरंगजेब उस समय दक्षिण आया और बीजापुर पर आक्रमण करके उसे जीतने को प्रस्तुत हुआ। शिवाजी ने उसका साथ दिया, किन्तु औरंगजेब के जीत जाने के उपरान्त इनका बीजापुर से मेल हो गया, फलतः जीते हुए बेदर और कल्याण के किले इन्होंने ले लिए, इसपर औरंगजेब बड़ा क्रुद्ध हुआ। शिवाजी यथावत् लूटमार कर रहे थे। औरंगजेब ने सेनापति नौसेरीखाँ को शिवाजी को दबाने भेजा किन्तु उसे सफलता न मिली।

औरंगजेब के उत्तर लौट जाने पर बीजापुर से फिर इनका युद्ध होने लगा।

सन् १६५९ में इन्होंने बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को जिस चतुराई, छल और कूटनीति का सहारा लेकर मारा वह प्रसिद्ध घटना है।

इसके बाद इनका मुग़लों से युद्ध आरम्भ हुआ। १६६३ ई० में शाइस्ता खाँ तथा जोधपुर नरेश जशवंत सिंह ने इन पर चढ़ाई की। इस समय शिवाजी रायगढ़ छोड़ सिंहगढ़ में रहने लगे थे। शाइस्ता खाँ पूना में इन्हीं के पिता के बनवाए हुए महल में रहने लगा। एक दिन छद्मवेश में, अपने साथियों के साथ, शिवाजी महल में घुस पड़े और यदि शाइस्ता खाँ खिड़की से कूद कर भाग न जाता तो ये उसे अवश्य समाप्त कर देते।

१६६४ ई० में इन्होंने सूरत नगर को खूब लूटा और उसे जलाकर राख कर दिया। वहाँ से लौटने पर इन्हें अपने पिता के देहान्त का समाचार मिला। इन्होंने विधिवत् उनका श्राद्ध आदि किया।

१६६६ ई० में औरंगजेब ने इनको आगरे बुलाया। इस समय औरंगजेब से इनकी सन्धि हो गई थी। ये अपने पुत्र संभाजी के साथ आगरे गए, परन्तु वहाँ इनका अपमान हुआ। ये क्रुद्ध होकर दरबार में ही बिगड़ पड़े। औरंगजेब ने इनको कैद कर लिया, परन्तु ये मिठाई के टोकरों में बैठ कर बड़ी चतुराई से वहाँ से निकल भागे; यह विख्यात घटना है।

सन् १६६९ में औरंगजेब ने हिन्दुओं के मंदिरों को ध्वस्त करना आरम्भ किया। काशी का विश्वनाथ मंदिर तथा मथुरा का केशवराय का देहरा इसी समय तोड़े गए। शिवाजी ने इस समय औरंगजेब को बड़े निर्भीक पत्र लिखे थे।

१६७० ई० में शिवाजी ने फिर सूरत को लूटा। उसी वर्ष सिंहगढ़ को भी उन्होंने जीत लिया। इस युद्ध में उनके प्रिय वीर सरदार तानाजी मालसुरे को वीर गति प्राप्त हुई। यह किला कोंडाना का किला कहलाता था। विजय करने के बाद शिवाजी ने कहा "गढ़ आया, पर सिंह गया"—तभी से इसका नाम सिंहगढ़ पड़ा।

सन् १६७४ में शिवाजी ने अपना अभिषेक कराया और असीम सम्पत्ति दान-पुण्य में दे डाली।

महापुरुष शिवाजी का जीवन निरन्तर संघर्ष से पूर्ण रहा। वे परम-पुरु-

पार्थी, असीम शौर्यवान् तथा चरित्रवान् व्यक्ति थे। वे अपने धर्म पर अटल आस्था रखते थे और साथ ही अन्य धर्मों के प्रति उनके हृदय में गम्भीर आदर था। वे रणकुशल योद्धा तथा दयालु शासक थे। उनकी शासन-प्रणाली बड़ी ही सुसंगठित तथा नीतिपूर्ण थी। वे अद्भुत कर्मा थे और उन्हें भगवान् शंकर का अवतार कहना, श्रद्धालु हिन्दू जाति की दृष्टि से, उचित ही है।

शिवाजी के पौत्र साहूजी को मुगल कारागार में रहना पड़ा था। १७०७ ई० में औरंगजेब की मृत्यु हो जाने पर औरंगजेब उत्तराधिकारी बहादुरशाह ने उन्हें छोड़ दिया, वे अपने मंत्री पेशवाओं की सहायता से शासन करते रहे। सन् १७४९ ई० में साहूजी का देहान्त हुआ। इस समय तक मराठों की शक्ति प्रबल थी, मुगल क्षीण हो चुके थे। साहूजी की दानशीलता का संकेत भूषण के काव्य में मिलता है।

उपर्युक्त नरेश, भूषण के प्रमुख आश्रयदाता थे। स्पष्ट है कि भूषण ने हिन्दू राष्ट्रके उन्नायक महापुरुषों को ही अपना आदर्श बनाया था, केवल मात्र अर्थोपार्जन उनका उद्देश्य नहीं था। इस दृष्टि से उनका गौरव सामान्य चाटुकार कवियों से कहीं ऊँचा है।

इतिहास—आश्रयदाताओं के परिचय में यह स्पष्ट हो गया है कि उनका जीवन व्यक्तिगत सुखों से बहुत दूर, त्याग, सेवा और राष्ट्रप्रेम का जीवन था। जातीय संगठन के लिये निरन्तर युद्ध करते हुए उन्होंने जनता को अत्याचारी शासन से मुक्त करने का प्रयत्न किया। इसके लिए उन्हें असीम कष्टों का सामना करना पड़ा, राज-सुखों को छोड़कर वन-वन भटकना पड़ा, किन्तु वे अपनी आन पर दृढ़ रहे। कविवर भूषण ने ऐसे कवियों का आश्रय ग्रहण करके अपने काव्य को अत्युक्ति-दोष से बचा लिया। उनके आश्रयदाता देवतुल्य अद्भुत कर्मा थे, फलतः उनकी प्रशंसा में उन्होंने जो कुछ कहा है वह काव्य होते हुए भी सत्य है, उसका आधार ठोस भूमि, इतिहास है।

शिवाजी का दुर्ग रायगढ़ वास्तव में इतना विशाल तथा ऊँचा था, और इस प्रकार से सुसज्जित था कि उसका वर्णन आलंकारिक होकर भी सत्य ही कहा जा सकता है।

जावली-विजय (१६५६), बेदर-कल्याण-विजय (१६५७), शाइस्ता खाँ

की पराजय (१६६३), सूरत की लूट (१६६४–७०), शिवाजी का आगरे जाना, अपमानित होना, क्रोध करना (१६६६), सिंहगढ़-विजय (१६७०), इखलास खाँ, मुहकमसिंह आदि सेनापतियों की सलहेरि में पराजय (१६७२) तथा अन्य युद्धादि के बहुत कुछ यथारूप उल्लेख भूषणजी ने अपने काव्य में किए हैं। इन पर कल्पना का रंग चढ़ाकर उन्होंने इन्हें सजीव तथा कलापूर्ण बना दिया है, परन्तु इतिहास के साथ उनका निकट सम्बन्ध कभी छिन्न नहीं हुआ। इस दृष्टि से भूषण का इने-गिने कवियों के साथ अपना महत्त्व है।

काव्य-ग्रन्थ—भूषण की चार कृतियों के नाम शिवसिंह सेंगर ने अपने शिवसिंह सरोज नामक ग्रन्थ में दिये हैं। (१) शिवराजभूषण, (२) भूषण हजारा, (३) भूषण उल्लास तथा (४) दूषण उल्लास। इन ग्रंथों में आज केवल प्रथम ग्रन्थ ही प्राप्त होता है। शिवराजभूषण अथवा शिवभूषण की रचना संवत् १७३० में सम्पूर्ण हुई। सं० १७२४ के लगभग इस ग्रंथ का आरम्भ माना जा सकता है और प्रायः ६ वर्ष में यह पूरा हुआ। इसमें सन् १६५६ ई० से लेकर सन् १६७३ तक की घटनाओं का वर्णन है।

ग्रन्थ का विषय है शिवाजी का यश-वर्णन, और वर्णन-शैली है अलंकार-लक्षण-ग्रंथ रचना। रीतियुगीन शैली के अनुसार अलंकारों के लक्षण दोहों में दिये गये हैं और उनके उदाहरण, कवित्त, सवैया तथा छप्पय आदि छन्दों में। ये अलंकार शिवाजी की कृतियों पर घटित किये गये हैं।

यह स्पष्ट है कि भूषण का उद्देश्य प्रमुखतया शिवाजी का यश-वर्णन था, अलंकार ग्रन्थ की रचना नहीं। विद्वानों का कथन है कि इनका अलंकार-वर्णन त्रुटिपूर्ण है—यह बात सत्य भी है, किन्तु इसका कारण, भूषण के अलंकार-ज्ञान की कमी न होकर उनका शिवाजी का यश-वर्णन करने का आग्रह ही जान पड़ता है। वास्तव में भूषण के युग में काव्य-रचना की शैली रीति-बद्ध ही मानी जाती थी। विद्वत्ता का परिचय उसी में मिलता था, अतः कविगण उसी को अपना लेते थे। भूषण ने भी वही शैली अपनाई किन्तु उसकी सफलता का बहुत ध्यान नहीं रखा।

काव्य की दृष्टि से यह प्रशंसनीय ग्रंथ है। वीर, रौद्र तथा भयानक रसों का अच्छा वर्णन इस ग्रन्थ में मिलता है। भयानक रस ही पूर्णता के साथ

अधिक वर्णित हुआ है। शिवाजी की शत्रुओं पर जमी धाक का बड़ा ही आंतकपूर्ण चित्रण कवि ने किया है। कुछ छन्द शृङ्गार रस के भी मिल जाते हैं।

शिवाजी का चरित्र इस ग्रन्थ में बड़ा ऊँचा वर्णित हुआ है। उन्हें शंकर का अवतार, महान् भक्त, गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक, दीन-रक्षक, धर्म-संस्थापक के रूप में चित्रित किया गया है। दूसरी ओर उनको सर्वगुण-सम्पन्न शासक के रूप में भी अंकित किया है। निस्सन्देह शिवराजभूषण हिन्दी-साहित्य का एक श्रेष्ठ ग्रंथ है।

'शिवा-बावनी' भूषण का दूसरा उपलब्ध ग्रन्थ है। यह शिवाजी की प्रशंसा में रचे ५२ छन्दों का संग्रह है। यह पुस्तक, विद्वानोंके मत से, बहुत बाद में शायद सन् १८९० में, संगृहीत होकर प्रकाशित हुई। इस संग्रह में समय-समय पर संशोधन भी होते रहे हैं। कुछ छन्द ऐसे भी हैं जो दूसरे कवियों के नाम से भी प्रसिद्ध मिलते हैं। कुछ छन्द ऐसे भी हैं जो विशेष सुरुचि-पूर्ण नहीं कहे जा सकते, जैसे शत्रु-नारियों की दुर्दशा का वर्णन।

काव्य की दृष्टि से यह पुस्तक विशेष उत्तम है। इसमें रसपरिपाक विशेष सफलता के साथ हुआ है, क्योंकि, कवि के ऊपर रीति-शैली का बन्धन नहीं है। अधिकांश काव्य ओजगुण से पूर्ण है और बड़ा ही प्रभावशाली है।

'छत्रसाल-दशक' भी इसी प्रकार का एक संग्रह है। बुंदेला वीर छत्रसाल का शौर्यवर्णन इसका विषय है। छत्रसाल हाड़ा (बूँदी नरेश) की प्रशंसा का भी एक छन्द इसमें आ गया है। यह ग्रंथ भी शिवा बावनी के समान श्रेष्ठ-काव्य से युक्त है।

स्फुट काव्य भी भूषण का थोड़ा-बहुत मिलता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न राजाओं की प्रशंसा तथा शृंगार-रस का काव्य आता है। इसके कुछ छन्द संदिग्ध भी हैं परन्तु साधारणतः ये भूषण के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। इन छन्दों से भूषण की बहुमुखी प्रतिभा का परिचय भी प्राप्त होता है।

आचार्यत्व—हम कह चुके हैं कि आचार्यत्व की दृष्टि में भूषण का विशेष महत्त्व नहीं है। 'शिवराजभूषण' के आधार पर इन्हें श्रेष्ठ काव्य-शास्त्र का पण्डित नहीं कहा जा सकता। अलंकारशास्त्र पर लिखा हुआ इनका ग्रंथ केवल परम्परा-पालन का प्रयत्न मात्र कहा जा सकता है। फिर भी अधिकांश अलंकारों

के लक्षण और उदाहरण बहुत-कुछ स्पष्ट हैं। कहीं-कहीं पर छन्द के चारों या तीन या दो चरणों में एक ही अलंकार का उदाहरण प्राप्त होता है। कहीं-कहीं पर अलंकार के सारे भेद न देकर कुछ ही दे दिए गए हैं; कुछ बिलकुल ही छूट गए हैं, शायद कवि ने उन्हें अनावश्यक समझा है। तद्रूपरूपक का वर्णन इन्होंने नहीं किया। कहीं-कहीं लक्षण तो ठीक दिए हैं, किन्तु उदाहरण अशुद्ध हो गए हैं। कुछ स्थानों पर अलंकार का निर्धारण इन्होंने अपने ही मत से किया है, अतः उनका लक्षण सर्वस्वीकृत लक्षण से भिन्न हो गया है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यद्यपि शास्त्रीय दृष्टि से भूषण की रचना बहुत शुद्ध अथवा स्पष्ट नहीं है, फिर भी इनका शास्त्रीय ज्ञान कम नहीं था। वास्तव में शास्त्रीयता की ओर इन्होंने विशेष ध्यान नहीं दिया; इन्हें तो शिवाजी का यशवर्णन करना था; शिवराजभूषण के प्रत्येक छन्द में यही विषय विद्यमान् है। सम्पूर्ण ग्रन्थ इनके चरितनायक शिवाजी का प्रशस्ति-काव्य है, तब इन्हें अलंकार-शास्त्र की ओर ध्यान देने का अवसर ही कहाँ था ? सम्पूर्ण ग्रंथ में अपने नायक का यश-वर्णन इनसे पहले सम्भवतः किसी ने नहीं किया। वास्तव में रीति-शैली का उस समय सामान्य प्रचलन होने के कारण भूषण को यही विधि अपनानी आवश्यक थी, अतः अलंकार-शास्त्र के माध्यम से उन्होंने यह प्रशस्ति-काव्य लिखा है।

रसात्मकता—भूषण की कविता प्रधानतया परुष रसों से युक्त है। वीर, भयानक, रौद्र तथा बीभत्स रसों को ही कवि ने प्रमुख रूप से ग्रहण किया है। अद्भुत का प्रयोग भी कहीं-कहीं पर घटनाओं अथवा चरित्र की अलौकिकता व्यक्त करने के लिए कर लिया गया है। शृंगार, हास्य, करुण तथा शान्त का प्रयोग गौण रूप में ही मिलता है।

वीर, भयानक तथा रौद्र रसों में भयानक रस की प्रमुखता इनके काव्य में मिलती है। परन्तु वास्तव में रौद्र और भयानक, वीर रस के सहायक रूप में प्रयुक्त होते रहे हैं।

वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' है। यह उत्साह प्रधानतया चार क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होता है—युद्धवीर, दानवीर तथा धर्मवीर। दयावीर के इन स्वरूपों का आलम्बन शिवाजी को बनाकर भूषण ने अनेक सहायक भावों के

संयोग से बहुत श्रेष्ठ वर्णन किए हैं। कहीं पर हास्य के संयोग से, कहीं पर अद्‌भुत अथवा शान्त के संयोग से शिवाजी के बहुमुखी वीरत्व का चित्रण किया गया है, यद्यपि प्रधानता युद्धवीर की ही दृष्टिगत होती है।

रौद्र और भयानक रसों के द्वारा शिवाजी का शत्रुओं पर क्रोध तथा उनका व्यापक आतंक चित्रित किया गया है। क्रोध-वर्णन के स्थल उतने अधिक नहीं हैं जितने आतंक-वर्णन के। आतंक का बहुत ही सजीव तथा मार्मिक-वर्णन भूषण ने किया है। इन स्थलों की ओर प्रस्तुत-संग्रह के टीका-भाग में संकेत किया गया है। अद्‌भुत का वर्णन भी सहायक रूप में कर लिया गया है और अरि-नारियों के रुदन आदि के माध्यम से करुण का भी उपयोग हो गया है। इसी प्रकार उनकी दुर्दशा में उनका शृंगार भी वर्णित हो गया है।

शृंगार का वर्णन बहुत कुछ स्वतंत्र रूप में मिलता है। इस क्षेत्र में भूषण बहुत कुछ रूढ़िवादी दृष्टिगोचर होते हैं। वियोग-वर्णन की सारी ऊहात्मकता का उपयोग उन्होंने अपने युग के अन्य कवियों के समान ही किया है। कुछ रूपक शृंगार-वीर के भी मिलते हैं, किन्तु ऐसे स्थल अधिक नहीं हैं, शृंगार के परिपाक में वीर की सहायता दो ही एक छन्दों में मिलती है।

शान्त का वर्णन भी परम्परागत शैली में मिलता है। श्मशान-वैराग्य के द्वारा निर्वेद उत्पन्न करने का प्रयत्न प्रमुख है। शान्त के अधिक छन्द भूषण ने नहीं लिखे; एकमात्र छंद इस संग्रह में विद्यमान है।

कल्पना—कवि के उर्वर मस्तिष्क का परिचय उसकी कल्पनाशीलता से मिलता है। भावुकता को सँवारने का कार्य कल्पना ही करती है, अतः इसे कला की श्रेणी में स्थान प्रदान किया जाता है। कविवर भूषण ने प्रचुर कल्पनाओं से अपने काव्य को सुसज्जित किया है।

इनकी कल्पनाओं में पौराणिकता की प्रधानता है। इन्द्र, कुबेर, शिव, चन्द्र, सूर्य आदि देवताओं की पुराणोक्त शक्तियों के आधार पर अपने चरित-नायक की शक्ति की मनोरम कल्पना की गई है।

उपर्युक्त कल्पनाओं को कवि ने विस्तृत तथा सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत किया है, फलतः उसने अधिकतर रूप अलंकार के माध्यम से उन्हें विस्तार प्रदान किया

है। इस प्रकार उसकी पुराण सम्बन्धी कल्पनाएँ बहुत सांगोपांग चित्रित हुई हैं। कवि की प्रतिभा का इससे स्पष्ट पता चलता है।

प्राकृतिक दृश्यों के आधार पर भी सुन्दर कल्पनाएँ की गई हैं। सेना आदि की वर्षा सम्बन्धी रूप-कल्पना इसी के अन्तर्गत आती है। दरबारी दृश्यों की कल्पना करके कवि ने शत्रु-सरदारों का उपहासास्पद रूप चित्रित किया है। ऐसे चित्रों में वार्तालाप-शैली, प्रलाप-शैली अथवा स्वगत-कथन-शैली का उपयोग किया गया है। औरंगजेब और उसके दरबारियों के ऐसे कई चित्र प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार अनेक नाटकीय दृश्यों की कल्पना बड़े सरल रूप में कवि ने प्रस्तुत की है, जिसके द्वारा उसने अपने चरितनायक या उसके योद्धाओं का व्यक्तित्व स्पष्ट किया है। शिवाजी का औरंगजेब के दरबार में क्रुद्ध होना ऐसा ही कल्पना-दृश्य है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भूषण की कल्पना-शक्ति उर्वर थी और इस कल्पना के उपयोग में उन्होंने अपनी व्यापक विद्वत्ता का भी परिचय दिया है और सहृदयता का भी।

आलंकारिकता—अलंकार-शास्त्र के अतिरिक्त अलंकार का काव्य-पक्ष भी है और एक सफल कवि के लिए उसका उचित उपयोग आवश्यक भी है। यद्यपि भूषण ने अपना प्रमुख ग्रन्थ, शिवभूषण, अलंकार-शैली में ही निर्मित किया है तथापि उन्होंने अपने काव्य में कुछ अलंकारों का प्रधान रूप में व्यवहार किया है। रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, लोकोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि बहुप्रचलित अलंकारों का प्रयोग इनके काव्य में बार-बार किया गया है।

इन अलंकारों का उद्देश्य वाणी को आकर्षक तथा कर्णप्रिय बनाना ही है। अतः अपने चरितनायक के व्यक्तित्व को विभिन्न रूपों में चित्रित करने के लिए कवि ने इनका उपयोग किया है। जहाँ तक अनावश्यक रूप से कवि अलंकार के प्रति आग्रही नहीं हो जाता, उसका उद्देश्य अवश्य सफल होता है अन्यथा अस्वाभाविकता आ जानेपर अवश्य ही उसे लक्ष्यभ्रष्ट होना पड़ता है।

पौराणिक तथा प्राकृतिक उपमानों को ग्रहण करके कवि ने अपने वर्ण्य नायक शिवाजी, का आलंकारिक चित्रण किया है।

शब्दालंकार का उपयोग रस-परिपाक, भाषा-सौष्ठव, संगीतात्मकता,

वातावरण आदि की सृष्टि करना है। अनुप्रास की सहायता से कवि ने जहाँ एक ओर माधुर्यपूर्ण भाषा में रायगढ़ का मनोरम वर्णन कर दिया है वहाँ दूसरी ओर अमृतध्वनियों के द्वारा वीर, भयानक आदि रसों का परिपाक और युद्ध सम्बन्धी वातावरण की सृष्टि भी कर दी है। यमक और श्लेष प्रधानतया कलात्मकता, चमत्कार-प्रदर्शन में ही विशेष सहायता करते हैं, अतएव काव्य में इनके प्रयोग से न्यूनाधिक मात्रा में अस्वाभाविकता उत्पन्न होना अनिवार्य ही है। फिर भी रीतियुग में इस प्रकार की आलंकारिकता का व्यवहार भी अनिवार्य ही था। भूषण ने उसे मुक्तहस्त होकर अपनाया है किन्तु यथासम्भव उसका दुरुपयोग नहीं किया। कुल मिलाकर इनके अलंकार-प्रयोग ने इनके काव्य की श्रीवृद्धि ही की है, जो उसका उद्देश्य है।

भाषा—भूषण की भाषा साहित्यिक व्रजभाषा है। सूर अथवा जायसी की भाषा में जो प्रान्तीयता की स्पष्ट छाप मिलती है वह इस युग के कवियों में प्रायः नहीं थी। इस युग के कवियों ने अपनी भाषा को अत्यन्त उदार तथा व्यावहारिक बनाने का प्रयत्न किया था। इस दृष्टि से इन्होंने खड़ी बोली, बुन्देली आदि हिन्दी बोलियों की शब्दावली को स्वच्छन्दता के साथ अपनाया, साथ-ही-साथ विदेशी भाषा अरबी, फारसी के प्रचलित शब्दों को भी स्वतन्त्रता के साथ ग्रहण किया। इस प्रकार इनकी भाषा का स्वरूप यद्यपि मिश्रित है तथापि उसकी सर्वग्राह्यता तथा अभिव्यंजना-शक्ति बढ़ गई है, छन्दनिर्वाह अथवा पादपूर्ति के लिए कहीं-कहीं शब्दों की तोड़-मरोड़ भी करनी पड़ गई है, जिससे अर्थ में दुरूहता आ गई है, किन्तु इतने अधिक काव्य में विकृत शब्दों की संख्या बहुत अधिक नहीं है। कहीं-कहीं पर परम्परागत शब्दावली को ग्रहण करके भाषा को रसानुकूल बनाने का प्रयत्न किया गया है।

भूषण की भाषा की शब्दावली बहुत कुछ व्यावहारिक है। व्रजभाषा होते हुए भी उसमें विदेशी तथा प्रान्तीय शब्दों का ग्रहण निस्संकोच किया गया है। छिया, काल्हि, कलींदा आदि बैसवारी शब्द हैं [छन्द ५६, ५८, १०७]। उक्त छन्दों में भाषा का खड़ीबोली-स्वरूप भी दृष्टिगत होता है। छन्द ८८ में फारसी शब्दों का प्रचुर प्रयोग है। कुरुख, जंपत, चकत्ता, खुमान, ऐल आदि विकृत शब्द हैं जिन्हें कवि ने सुविधानुसार तोड़-मरोड़ लिया है। वीर-काव्य

की चन्द-युगीन भाषा-परम्परा के आधार पर इन्होंने संयुक्ताक्षरों तथा रेफयुक्त शब्दों का प्रयोग सफलता के साथ किया है—अमृतध्वनि छन्दों में इसका रूप दृष्टिगत होता है। छप्पय छन्दों में भी इस प्रकार की शब्दावली प्रयुक्त हुई है। वीररस के लिए उक्त छन्द तथा भाषा बहुत उपयुक्त होते हैं [छन्द ८६, ८७]। शृंगार अथवा कोमल रसों के वर्णन में अथवा प्रकृति-चित्रण के लिए मधुर वर्णों तथा शब्दों का प्रयोग किया गया है। रायगढ़-वर्णन तथा शृंगार रस के छन्द उदाहरणरूप में लिए जा सकते हैं। यश-वर्णन के लिए भी इस प्रकार की शब्दावली प्रयुक्त हुई है [छन्द ७३]। आतंक-वर्णन में करुण अथवा अद्भुत का मिश्रण करके इसी प्रकार की कोमल भाषा के द्वारा भावाभिव्यंजना की गई है [छन्द ४७]। प्रायः तद्भव शब्दों का ही प्रयोग अधिक है। ओज, प्रसाद और यथास्थान माधुर्य, ये तीनों गुण भूषण की भाषा में प्राप्त होते हैं।

अनुप्रासमयता के कारण भाषा में प्रवाह भी खूब है। रायगढ़-वर्णन इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। छन्द ९७ भी ओजपूर्ण प्रवाह का अच्छा उदाहरण है। यमक के द्वारा भी इस गुण को सिद्ध किया गया है; किन्तु इतने पर भी इनके काव्य में अनुप्रास, यमक का अनावश्यक आडम्बर अधिक नहीं मिलता। भाषा की स्वाभाविकता की ओर इनका ध्यान विशेष रहा है।

लोकोक्तियों तथा मुहाविरों का प्रयोग भी इनकी भाषा का श्रेष्ठ गुण है। छन्द १०, ४१, ५९, ६५, ७९, ८३, ८९ ९४, ९७, १०६, १११, १२२ इत्यादि में इनके सुन्दर उदाहरण विद्यमान हैं। स्पष्ट है कि कहावतों तथा मुहाविरों के प्रयोग से इन्होंने भाषा को सुष्ठु, मार्मिक तथा लाक्षणिक बना दिया है। इस प्रकार इनकी भाषा सशक्त, प्रभावशाली, अर्थव्यक्तगुणसम्पन्न तथा स्वाभाविक है। छोटी-मोटी त्रुटियाँ इन गुणों के सामने नगण्य हैं। अपने युग के ये श्रेष्ठ भाषाधिकारी थे।

शैली—भूषण की शैली अत्यन्त प्रौढ़ तथा मार्मिक है। भाषा पर पूर्ण अधिकार होने के कारण उसमें संक्षिप्त-गुण तथा सफल भावाभिव्यंजना की शक्ति विद्यमान् है। उनका शब्द-क्षेत्र व्यापक था और अभिव्यंजना सरल थी अतः उनकी शैली में स्वाभाविकता का गुण स्पष्ट दृष्टिगत होता है। ओज निर्भीकता, आस्था, स्वाभाविकता, अलंकरण, कलात्मकता उनकी शैली के

प्रधान गुण कहे जा सकते हैं और ये ही गुण सम्भवतः भूषण के व्यक्तित्व में विद्यमान थे।

भूषण का युग मुक्तक काव्य का युग था। दरबारों की संस्कृति ही उस समय प्रधान थी। काव्य आदि कलाओं को राजाश्रय प्राप्त होता था और शासकों की छाया में ही वे पनपती थीं। ऐसी स्थिति में शासकों के सम्मुख पहुँच कर अपनी चमत्कार-वृत्ति से उन पर तत्काल अपनी कलात्मकता की छाप छोड़ देना ही उस समय के कवि की सफलता थी। इस सफलता का माध्यम मुक्तक काव्य ही प्रमुख रूप से बन सकता था। ऐसे छन्द जो स्वतः अपने में पूर्ण हों, जिनका अपने आगे-पीछे के छन्दों से कोई सम्बन्ध (विषय, कथासूत्र आदि की दृष्टि से) न हो, मुक्तक कहे जाते हैं। उस युग में मुक्तक-रचना ही प्रधान थी। भूषण ने भी मुक्तक-शैली ही अपनाई है; उनका प्रत्येक छन्द शिवाजी के चरित्र, यश, शौर्य आदि का स्वतन्त्र चित्र है—वह अपने में पूर्ण है।

मुक्तक-शैली में रचित इस काव्य में अनेक विशेषताएँ हैं। कुछ प्रधान विशेषताओं की ओर हम यहाँ संकेत करेंगे।

आलंकारिकता भूषण की शैली का प्रधान गुण है। अलंकार-शास्त्र का आधार लेने के कारण भी यह विशेषता आ सकती है, परन्तु उनके काव्य में आद्यन्त इसका समावेश दृष्टिगोचर होता है। इसके अन्तर्गत कवि ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति आदि प्रमुख अलंकारों की शैली में तो शिवाजी का यश-वर्णन किया ही है, शब्दालंकारों की भी अच्छी छटा का प्रदर्शन किया है। चित्र-काव्य का भी थोड़ा-बहुत सहारा लिया गया है। समतामूलक अलंकार बड़े ही व्यापक तथा सूक्ष्म हैं। सम्पूर्ण काव्य में आलंकारिकता समान रूप से व्याप्त है।

ओजस्विता इनकी शैली का दूसरा गुण है। शिवाजी अथवा छत्रसाल अथवा अन्य वीर आश्रयदाताओं का यशवर्णन करने के लिये इन्होंने इस गुण को अपने काव्य में अनिवार्यतः अपनाया है। यह भी इनके काव्य का व्यापक गुण है। वीर, रौद्र, भयानक रसों में इसका प्रदर्शन विशेष सफलता के साथ हुआ है। छन्द, ३७, ५१, ७१ आदि में इस गुण का स्पष्ट दर्शन होता है। भूषण तथा शिवाजी के संयुक्त व्यक्तित्वों की छाप ऐसे छन्दों में मिलती है।

वस्तु-वर्णन-शैली के अन्तर्गत रायगढ़ के महलों की सजावट आदि का बड़ा ही उदात्त वर्णन कवि ने किया है। इसके साथ आलंकारिक शैली का समावेश अनिवार्यतः मिलता है। इसके अन्तर्गत वाटिका-वर्णन के प्रसंग में कवि ने प्रकृति-चित्रण भी किया है, किन्तु उसे उसमें विशेष सफलता नहीं मिली है। केवल पुष्पों, वृक्षों तथा पक्षियों के नाम गिना देने में प्रकृति के साथ किसी प्रकार की संवेदना उत्पन्न नहीं होती, किन्तु इसे केवल युग-प्रभाव ही कहेंगे। दुर्ग का वर्णन भी कवि ने बड़े उदात्त रूप में किया है (छन्द ३५), तथा दान में दिये गये हाथियों का वर्णन भी बड़ा गम्भीर है (छन्द ८३)।

रूप-चित्रण भूषण ने अधिक नहीं किया है, अपने आश्रयदाताओं के यश, आतंक-वर्णन के बीच, उनका स्वरूप-चित्रण करने की आवश्यकता उन्हें नहीं प्रतीत हुई, फिर भी कहीं-कहीं उन्होंने शिवाजी का बहुमुखी रूप चित्रित करने का प्रयत्न किया है (छन्द ९०) और अधिकतर केवल आंशिक चित्र खींचकर ही सन्तुष्ट हो गए हैं (छन्द ५०, ८९, ९४)। कहीं-कहीं शृङ्गार का मिश्रण करके अरि-नारियों का रूप-चित्रण करने का प्रयत्न किया गया है (छन्द ११४)।

दृश्य-चित्रण की शैली को भूषणजी ने विशेष महत्त्व प्रदान किया है। वास्तव में अनेक युद्धों के काल्पनिक दृश्यों का सजीव चित्रण करके कवि ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। युद्ध-वर्णन, आतंक-वर्णन, उसके अन्तर्गत अरि-नारियों के भय का वातावरण, औरंगजेब की सशंकता आदि के चित्र कवि ने सजीव रूप में उपस्थित किए हैं। छन्द ९२, ९४, ९५, ९७ आदि में युद्ध, रणक्षेत्र आदि के प्रभावशाली वर्णन कवि ने किए हैं। इनमें सूक्ष्मदर्शिता तथा विस्तार की प्रवृत्ति स्पष्ट देखी जा सकती है।

वातावरण-चित्रण की शैली का प्रयोग भी कवि ने सफलता-पूर्वक किया है। काव्य में यश का वर्ण श्वेत माना गया है। शिवाजी का यश-वर्णन करते हुए भूषण ने छन्द ७३, ७७ में उसकी व्यापक श्वेत आभा के वातावरण में विश्व की सारी श्वेत वस्तुओं को दिग्भ्रमित करवा दिया है। यद्यपि यह भाव संस्कृत-काव्य से ग्रहण किए गए हैं, फिर भी भूषणजी ने उनका निर्वाह सफलतापूर्वक किया है। शिवाजी के आतंक का वर्णन भी कवि ने बड़ी सफलता के

साथ किया है; छन्द ८९, १०६, १०७, १२४ ऐसे वातावरण चित्रण के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। दानवर्णन में भी वातावरण-चित्रण का प्रयोग है।

नाटकीय शैली का प्रयोग भी भूषण ने प्रधानतया घटना अथवा दृश्य-चित्रण के लिए किया है। शिवाजी के क्रोध का वर्णन छन्द ६६, १११ आदि में इसी शैली में किया गया है। अफजल-वध का चित्रण भी नाटकीय शैली में ही किया गया है। पात्र के अंग-संचालन, मुख-मुद्रा को अंकित करके कवि ने उसे सजीव सक्रियता प्रदान कर दी है। वार्तालाप-शैली के द्वारा इस नाटकीयता को और भी व्यावहारिक तथा सप्राण बना दिया गया है। छन्द ६०, १०९ इस वार्तालाप की शैली के उदाहरण है।

व्यंग्य-विनोद-मयी शैली का प्रयोग शत्रु का उपहास करने के लिए किया गया है। औरंगजेब का शिवाजी का नाम मात्र सुन मूर्च्छित हो जाना प्रदर्शित करके कवि ने उसका उपहास किया है (छन्द ४४)। आतंक-वर्णनके प्रसंग में ही इस व्यंग्य-विनोद का उपयोग विशेष रूप से किया गया है (छन्द ७४, ७९, १०७)।

उपर्युक्त शैली-विभाजन से स्पष्ट है कि भूषण, भाषा के साथ शैली के भी अधिकारी हैं। उनके काव्य में और भी सूक्ष्म शैली-भेद देखे जा सकते हैं, परन्तु उनकी पटुता प्रदर्शित करने के लिए उपर्युक्त उदाहरण पर्याप्त हैं।

छन्द—हमने कहा है कि रीति अथवा श्रृंगार-युग, मुक्तक-रचना का युग था। इस युग में कुछ छन्द विशेष रूप से प्रचलित हुए—इनमें मनहरण कवित्त तथा सवैया के नाम अग्रगण्य हैं। सामान्यतया कवित्त का प्रयोग वीर, भयानक आदि परुष रसों के लिए भी उतना ही उपयुक्त प्रमाणित हुआ था जितना श्रृंगार आदि कोमल रसों के लिए। सवैया अवश्य ही केवल कोमल रसों के लिए उपयुक्त रहा। मनहरण को तो कुछ विद्वानों ने हिन्दी-प्रदेश का जातीय छन्द कहा है। जो भी हो; इस युग में यही छन्द प्रधान रहे। वैसे प्रसंगानुसार दोहा, छप्पय, हरिगीतिका, लीलावती, अमृतध्वनि और गीतिका का प्रयोग भी भूषण ने किया है।

उपर्युक्त छन्दों में छप्पय तथा अमृतध्वनि बहुत कुछ वीर रस के लिए

उपयोगी छन्द हैं। भूषण ने इनका सफल प्रयोग, वीर, भयानक आदि रसों के वर्णन के लिए किया है।

उपर्युक्त छन्दों के ऊपर भूषण का अधिकार व्यक्त होता है। उनकी शब्दावली का चयन उपयुक्त होने के कारण इनमें प्रवाह तथा संगठन है। इनके तुकान्त भी कहीं अनुपयुक्त नहीं होने पाये हैं। परम्परागत प्रथा के अनुसार इन्होंने यथासम्भव प्रत्येक छन्द में "भूषण भनत" कहकर अपनी छाप रख दी है। संक्षेपतः भूषण का तत्कालीन प्रचलित छन्दों पर उचित अधिकार था; उनमें संगठन, प्रवाह तथा संक्षिप्त गुण की प्रचुरता पाई जाती है। भरती के अक्षरों का प्रयोग नहीं किया गया और वे भावाभिव्यंजना के सशक्त माध्यम हैं।

सामाजिक दृष्टि—आरम्भ में ही भूषण-युग का परिचय देते हुये हमने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। उन बातों को न दुहरा कर संक्षेप में इतना कहना पर्याप्त होगा कि मुगल शासकों के अत्याचारपूर्ण शासन से प्रजा अत्यधिक पीड़ित थी—दरिद्रता और बुभुक्षा का साम्राज्य था, देश में अनेक प्रकार के दैवी, मानवी आतंक व्याप्त थे, सामन्तशाही का बोलबाला था, निरन्तर प्रजापीड़न, शोषण होता रहता था, जातिगत पक्षपात के कारण हिन्दू जनता अपने सामान्य मानवीय अधिकारों का भी उपभोग नहीं कर सकती थी, राजकर्मचारी केवल मुसलमान हो सकते थे, हिन्दुओं पर सदैव धर्मपरिवर्तन के लिए दबाव डाला जाता था, मन्दिरों को ध्वंस करने का तो औरंगजेब ने आदेश ही प्रचारित कर दिया था। घोर नैराश्य तथा असहायता का समय था।

सामन्तवर्ग अपने शासकों का अनुयायी था। उसका मनोरंजन था विलास के विविध उपकरण एकत्र करना, मानसिक व्यभिचार में लिप्त रहना और अपने चारों ओर चाटुकारिता का वातावरण निर्मित करना। सामाजिक जीवन की छाया ने साहित्य को भी आक्रान्त किया और भक्ति-युग की परम शान्तिप्रदायिनी, कृष्ण-काव्य की सुशीतल गाथा, विलास की उत्तप्त मरीचिका में परिवर्तित हो गई। योगिराज श्रीकृष्ण, एक छिछोरे, विलासी नायक मात्र रह

गए। शृंगार-परम्परा ने उस पर और भी रंग चढ़ा दिया। कवियों के द्वारा उन्हीं नायक कृष्ण की विलास-क्रीड़ाओं का वर्णन होने लगा।

परन्तु जहाँ एक ओर देश की यह दुर्दशा थी, वहाँ दूसरी ओर स्वदेश के प्रति श्रद्धा-भावना तथा उसकी कल्याण-कामना भी कुछ महापुरुषों के हृदय में विद्यमान थी। शिवाजी, छत्रसाल तथा ऐसे ही देश-जाति के हित-चिन्तक महापुरुष, पददलित जनता द्वारा पूजित होते थे। उनमें उन्हें अपने त्राता का रूप दृष्टिगत होता था। त्राण के प्रकाश की क्षीण रेखा उन्हें इन्हीं महात्माओं के मुखमण्डल पर दृष्टिगोचर होती थी।

वीर-पूजा की यह भावना इस युग की कोई नवीन वस्तु नहीं थी। "सम्भवामि युगे युगे" के आदर्श को लेकर जनता युग-युग से महापुरुषों की पूजा करती चली आई है। धर्म की हानि होने पर, असुरों की वृद्धि होने पर, गो, ब्राह्मण, देवता तथा पृथ्वी के पीड़ित होने पर, किसी परम शक्ति की अवतारणा की आस्था भारतीय जनता के हृदय में दृढ़तापूर्वक जमी हुई रहती है; ऐसी स्थिति में इस युग में भी उसे महाराज शिवाजी के रूपमें भगवान् शंकर का अवतार प्राप्त हो गया। वह उन्हें उसी रूप में पूजने लगी। उनकी प्रशस्ति, उनका गुणगान करने लगी। धर्मान्धता के इस युग में सब धर्मों का समान आदर करने वाला दृढ़चरित्र, लोकरक्षक, गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक, अत्याचारियों को दण्ड देने वाला महात्मा यदि जनता का कण्ठहार बन जाय तो उसमें आश्चर्य ही क्या? भारत की धर्मप्राण जनता के हृदय में ऐसे महापुरुष के लिए अनायास ही श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। उधर कविवर्ग के सम्मुख भी भक्ति-काव्य के गम्भीर आदर्शों की परम्परा विद्यमान थी। महात्मा तुलसी की मर्यादावादी परम्परा ने जनता की आस्था को संयमित, अनुशासित करके पूर्णतया दृढ़ बना दिया था।

भूषण ने इसी वातावरण को मुख्यतया ग्रहण किया था। शृंगार-काव्य के प्रति उनके द्वारा औरंगजेब के दरबार में किए गए व्यंग्य से उनकी सामान्य रुचि का पता चलता है। उन्होंने औरंगजेब को हाथ धुलाकर अपनी कविता सुनाई थी !! उनका आश्रयदाता का चयन भी इस बात का साक्षी है कि वे कुपात्र का दान ग्रहण करने को प्रस्तुत नहीं थे। वे सात्त्विक वृत्ति के सत्पात्रों की खोज में थे, जो उन्हें प्राप्त ही होकर रहे। उनकी दृढ़ता, निर्भीकता, स्पष्ट-

घादिता आदि के अनेक उदाहरण हमारे सम्मुख हैं जो उनके पारिवारिक अथवा साहित्यिक जीवन की घटनाओं से स्पष्ट होते हैं। तात्पर्य यह है कि भूषण का चरित्र ऊँचा और महान् था; वे आदर्शवादी, जातीयता की भावना से ओतप्रोत व्यक्ति थे। यह महान् सुयोग था कि अपनी प्रतिभा का पूर्ण विकास करने के लिए उन्हें उपयुक्त आश्रयदाता मिल गए।

शिवाजी, छत्रसाल जैसे महापुरुषों का यशःप्रशस्ति करते हुए भूषण ने जिस प्रकार की वाक्यावली का प्रयोग किया है, उसे लेकर साहित्यक्षेत्र में कुछ शंकाएँ की गई थीं। कुछ आलोचकों ने उन्हें केवल अर्थलोभी, चाटुकार, दरबारी कवि मात्र माना था, किसी ने उन्हें समाज में जातीयता के आधार पर वैमनस्य फैलानेवाला कहा, किसी ने संकीर्ण विचारोंवाला कट्टरपन्थी बतलाया; स्वयं महात्मा गान्धी ने इनके काव्य को विद्यालयों में पढ़ाये जाने पर आपत्ति की थी। परन्तु वास्तव में इनके ऊपर लगाए जानेवाले आरोपों में इतना तथ्य नहीं है, जितना प्रदर्शित किया जाता है।

सामाजिक दृष्टि से भूषण ने तत्कालीन जन-जीवन को चेतना प्रदान करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया था। उस समय की स्थिति की बात हम कह चुके हैं। उस घोर शृंगार, विलासिता तथा दासता के युग में वीर-रस और उसका सजीव तथा प्रेरणापूर्ण आलम्बन लेकर खड़े होना ही एक प्रशंसा की बात है। इस प्रकार उन्होंने सम्पूर्ण हिन्दू-जाति को संगठित करने का प्रयत्न किया था। उसमें आशा का संचार तथा आत्मसंस्कार का बीजवपन किया था। श्रेष्ठ आश्रयदाताओं की प्रशंसा करके उन्होंने कविवर्ग तथा जनता के सम्मुख चाटु-कारिता से विरत होने का आदर्श उपस्थित किया था। असीम धन पाकर भी उन्होंने स्थान-स्थान पर केवल सम्मान प्राप्त करके ही आनन्द और तृप्ति-लाभ किया था, इस प्रकार उन्हें एक निर्लिप्त त्यागी के रूप में देखा जा सकता है। भगवान् शंकर से शिवाजी की तुलना करके उन्होंने धर्मभीरु जनता के विश्वास को दृढ़ करने का प्रयत्न किया; पौराणिकता का आधार लेकर उन्होंने अपने नायक को अलौकिकता प्रदान कर दी। इस प्रकार उन्होंने हिन्दू जनता के बीच संगठन, निर्भीकता, अत्याचार की सहन-शक्ति, आत्मावलम्बन आदि गुण

उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। उनके काव्य का अपना सामाजिक महत्त्व है; उस अन्धकार-युग में वह प्रकाश की एक क्षीण किन्तु तीव्र रेखा है।

राजनैतिक दृष्टि से भूषण ने देश में एकछत्र राष्ट्रीय भावना भरने का प्रयत्न किया था। यद्यपि बाह्य दृष्टि से उनमें जातीय संकीर्णता प्रतीत होती है, परन्तु ध्यानपूर्वक देखनेसे इस भ्रमका निराकरण हो जाता है। उस समय देश में मुसलमानों की वही स्थिति थी, जो अभी कुछ समय पहले तक अँग्रेजों की थी। हिन्दू-मुसलमानों ने मिलकर अँग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन उठाया था। अँग्रेज उन दोनों के लिए विदेशी थे। इसी प्रकार उस समय मुसलमान इस देश के लिए विदेशी थे। उनके विरुद्ध आवाज उठाना राष्ट्रीयता के विरुद्ध नहीं था; हिन्दू-संगठन तथा विदेशियों के प्रति विरोध ही उस युग की उचित राष्ट्रीयता थी; यह ऐतिहासिक दृष्टि है। अनेक सरदारों नवाबों तथा सरकारी कर्मचारियों के प्रति भूषण की कटु आलोचना, शासन के प्रति उनके असन्तोष को व्यक्त करती है; प्रजा-पीड़न के माध्यम ये नवाब आदि ही विशेषतः थे। इसीलिए उन्होंने पहले संघ-शक्ति को इस कलियुग में प्रधान माना और आपस की फूट से ही सारे हिन्दुआन के टूटने की बात कहकर हिन्दुओं को चेतावनी दी थी। महाराज छत्रसाळ को उन्होंने 'हिन्दुआने की ढाल' तथा भगवन्तराय खीची को 'हिन्दुआने का कुल खंभ' कहा था, अतः उन सब नरेशों के वे प्रशंसक थे जो हिन्दू-राष्ट्र की रक्षा करने को प्रस्तुत रहते थे। इस प्रकार जातीयता का अर्थ इनके लिए पूर्णतया राष्ट्रीयता ही था। स्वराज्य-स्थापन के प्रयत्नों में ये सदैव सहायक रहे।

भूषण की दृष्टि साम्प्रदायिक नहीं थी, इसका सबसे बड़ा प्रमाण उनका काव्य ही है। उन्होंने मुसलमान जाति के प्रति विद्वेष नहीं दिखलाया, उनका विरोध औरंगजेब के अत्याचारपूर्ण शासन से था, मुगल शासकों से नहीं—उन्होंने औरंगजेब को बाबर और अकबर का सुयश भूल जाने के कारण फटकारा है। बाबर और अकबर ने जो हद्द बाँधी थी (मर्यादा स्थापित की थी) उसकी ओर उसका ध्यान आकर्षित किया है। स्पष्ट है कि वे उस शासन के विरोधी थे जो अन्याय तथा पक्षपात से पूर्ण था, न कि किसी जाति विशेष के शासकों के। उन्होंने मुसलमानों के पक्षपाती हिन्दू सरदारों के पराभव का वैसा ही वर्णन

किया है जैसा मुसलमान शासकों का। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि न तो भूषण संकीर्ण जातीयता के दोष से दूषित थे और न वे अराष्ट्रीय ही थे। उनकी वाणी, शब्दावली, कुछ कटु अवश्य है किन्तु वह उस समय की वृत्ति ही थी। मुसलमान इतिहासकारों ने शिवाजी को 'कुत्ता' विशेषण प्रदान किया है, तब भूषण तो कवि थे! वे यदि भावावेश में कुछ तीखे शब्द प्रयोग करें तो उसमें उन्हें अधिक दोषी नहीं ठहराया जा सकता। वास्तव में भूषण का संगठन तथा जागृति सम्बन्धी काव्य रचने का प्रयत्न हिन्दू जाति के लिए श्लाघनीय था।

उपसंहार—उपर्युक्त सम्पूर्ण तथ्यों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि भूषण का स्थान हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में अद्वितीय है। उनका व्यक्तित्व अन्य कवियों के बीच में स्पष्ट रूप में अलग झलकता हुआ दीख पड़ता है। उनमें इतिहासज्ञ, कवि, राजनीतिज्ञ, सुधारक तथा शास्त्रज्ञ का रूप एक साथ समन्वित देखा जा सकता है। जहाँ एक ओर श्रेष्ठ काव्य की रचना उन्होंने प्रस्तुत की वहाँ अपने युग का सबल प्रतिनिधित्व भी किया। स्वराज्य-स्थापन का जो प्रयत्न उस समय चल रहा था उसमें भूषण ने अपनी सशक्त वाणी से बड़ी सहायता पहुँचाई। उन्होंने झूठी चाटुकारिता कभी नहीं की, औरंगजेब जैसे सम्राट् को फटकार कर सबके देखते-देखते, वहाँ से चले आए। वे जीवन को एक संघर्ष-रूप में अपनाए हुए थे अवश्य, किन्तु उस संघर्ष के कारण उनके मन में निराशा अथवा विरक्ति उत्पन्न नहीं हुई थी, प्रमाणस्वरूप उनके हास्य, व्यंग्य-विनोद-युक्त काव्य की ओर संकेत किया जा सकता है। वे श्रेष्ठ कलाकार थे, विलक्षण भाषाधिकारी थे। उनका व्यक्तित्व सर्वाङ्गपूर्ण था। कहा जा सकता है कि यदि शिवाजी काया थे तो भूषण उनकी छाया थे। हिन्दी-साहित्य में उनके जोड़ का व्यक्तित्व 'न भूतो न भविष्यति'—हिन्दी-काव्य के वे अनमोल भूषण हैं।

हिन्दी विभाग,
विश्वविद्यालय, लखनऊ

—ब्रजकिशोर मिश्र

भूषण-मञ्जूषा

भूषण-मञ्जूषा

गणेश-वन्दना

[घनाक्षरी]

अकथ अपार भवपंथ के बिलोकौ, स्रम हरन, करन बीजना से बरह्राइयै।
यह लोक परलोक सफल करन कोकनद से चरन हियें आनिकै जुड़ाइयै।
अलिकुल-कलित कपोल ध्याय ललित अनंद रूप सरित मों भूषन अन्हाइयै।
पापतरु-भंजन बिघन गढ़-गंजन भगत मन रंजन द्विरद मुख गाइयै। १।

१. भवपंथ = संसाररूपी मार्ग। स्रम हरन = थकावट को दूर करनेवाले। करन = कर्ण = कान। बीजना = व्यजन, पंखा। ह्राइयै = भ्रमाइये, भँवाइये, घुमाइये, झलिए (पंखे के समान)। कोकनद = लाल कमल। अलि-कुल = भौंरों का समूह। कलित = सुशोभित। कपोल = गण्ड-स्थल, गाल। पाप तरु = पाप रूपी वृक्ष। भंजन = तोड़नेवाले। बिघन-गढ़ = विघ्नरूपी दुर्ग। गंजन = छिन्न-भिन्न कर देनेवाले। द्विरद = दो दाँतोंवाला, हाथी। द्विरद-मुख = हाथी के से मुखवाले, गणपति।

देवी-स्तुति

[छप्पय]

जयति जयति जय आदि सकति जय कालि कपर्दनि।
जय मधु-कैटभ-छलनि देबि जय महिषहि मर्दनि।
जय चमुंड जय चंडि चंडमुंडासुर-खंडनि।
जय सुरक्ति जय रक्तबीज-बिड्डाल बिहंडनि।
जय जय निसुंभ-सुंभह दलनि भनि भूषन जय जय भननि।
सरजा समथ्थ सिवराज कहिं देहि बिजय जय जगजननि। २।

२. आदि-सकति = आदि-शक्ति, सृष्टिरचना तथा संसार का संचालन करनेवाली ईश्वर की माया। कपर्दनि = शंकर की शक्ति, भवानी, गौरी [कपर्द = जटा; कपर्दिन् = जटा धारण करनेवाले, भगवान् शंकर] मधु तथा कैटभ = दो दैत्य, इन्हें विष्णु ने मारा किन्तु देवी ने इनकी मति भ्रष्ट करके इन्हें युद्ध के लिए प्रेरित किया, इस प्रकार इनको छला। महिष = महिषासुर नामक भैंसे का स्वरूप धारण करनेवाला राक्षस; देवी ने इसका वध किया। चमुड = चामुण्डा देवी। चंडि = चंडी, भीषण। चंड-मुंड = शुंभ और निशुंभ नामक दो दैत्यराजों के सेनापति; इनका वध करने पर देवी का नाम चामुण्डा हुआ। सुरक्ति = अरुण, सुनहले रंगवाली। रक्तबीज = एक राक्षस; इसके रक्त की एक-एक बूँद से एक-एक राक्षस उत्पन्न हो जाता था, देवी ने इसका रक्तपान करके इसका संहार किया। बिड्डाल = विडालाक्ष, एक राक्षस, इसे भी दुर्गा ने मारा था। बिहंडनि = विखंडन करना, नष्ट करना। भननि = वाणी, गिरा, कविता। सरजा = सरजाह (फारसी), उच्चपदाधिकारी, शिवाजी।

राजकुल वर्णन

[दोहा]

तरनि तचत जलनिधि तरनि जय-जय आनँद ओक।
कोक-कमलकुल-सोकहर, लोक-लोक आलोक ।३।
राजत है दिनराज को बंस अवनि-अवतंस ।
जामें पुनि पुनि अवतरे कंस मथन प्रभु-अंस ।४।
महाबीर ता बंस में भयौ एक अवनीस ।
लियौ बिरद सीसोदियौ दियौ ईस को सीस ।५।
ता कुल में नृपबृंद सब उपजे बखत-बिलंद ।
भूमिपाल तिनमें भयौ बड़ौ माल मकरंद ।६।
सदा दान करवान में जाके आनन अंभ ।
साहि निजाम सखा भयौ दुग्ग देवगिरि खंभ ।७।
जातें सरजा बिरद भौ सोहत सिंघ-समान ।
रन-भ्वै-सिला सु भ्वैसिला आयुषमान खुमान ।८।
भूषन भनि ताके भयौ भुअ-भूषन नृप साहि ।
रात्यौं दिन संकित रहैं साहि सबै जग जाहि ।९।

३. तरनि=तरणि=सूर्य। तरनि=तरणी=नौका। ओक=निवास, घर। कोक=चक्रवाक नामक पक्षी [इन पक्षियों का जोड़ा रात में बिछुड़ जाता है तथा प्रातः होते ही मिल जाता है]।

४. अवतंस=भूषण। मथन=छिन्नभिन्न करने वाले। अंश=अवतार।

५. सीसोदिया=सीसोद नामक स्थानके निवासी। ईस=शंकर।

६. बखत=(बख्त) भाग्य। बिलंद=बुलंद=ऊँचा [सौभाग्यशाली]

७. करवान=कृपाण। अंभ=पानी, आब, शोभा। साहि निजाम=अहमदनगर के शासकों की पदवी। देवगिरि=दौलताबाद का दुर्ग। खंभ=स्तम्भ, आधार।

८. सरजा=सरजाह (फा०)=सरदार तथा सिंह। रन-भ्वै सिला=रण भूमि में शिला के समान अटल। भ्वैसिला = भोंसले वंश। आयुष्मान् = चिरंजीवी। खुमान = आयुष्मान्, राजा के लिए प्रयुक्त सम्बोधन।

९. भुअ-भूषन = पृथ्वी की शोभा बढ़ाने वाला।

[घनाक्षरी]

एते हाथी दिये माल मकरंदजू के नंद जेते गिनि सकत बिरंचिहू की न तिया।
भूषन भनत जाकी साहिबी सभा के देखें लागैं सब और छितिपाल हिति मैं छिया।
साहस अपार हिंदुआन कौ अधार धीर, सकल सिसौदिया सपूत कुल कौ दिया।
जाहिर जिहान भयौ साहिजू खुमान बीर, साहन कौं सरन सिपाहन कौं तकिया।१०।

[दोहा]

दसरथ राजा राम भौ, बसुदेव के गुपाल।
सोई प्रगट्यौ साहि के, श्रीसिवराज भुआल। ११।
उदित होत सिवराज के, मुदित भए द्विज देव।
कलिजुग हट्यौ मिट्यौ सकल म्लेच्छन कौ अहमेव। १२।

[घनाक्षरी]

जा दिन जनम लीनौ भूपर भवैसिला भूप ताहि दिन जीत्यौ अरि-उर के उछाह कौं।
छट्ठी छत्रपतिन कौ जीत्यौ भाग जीत्यौ नामकरण में करन के जस के उमाह कौं।
भूषन भनत बाललीला गढ़कोट जीते साहि के सिवाजी करि चहूँ चक्क चाह कौं।
गोलकुंडा बीजापुर जीत्यौ लरिकाई ही में जवानी आएँ जीत्यौ दिल्लीपति पातस्याह
[कौं। १३।

[दोहा]

दच्छिन के सब दुग्ग जिति दुग्ग-सहाय-बिलास।
सिव-सेवक सिव गढ़पती कियौ रायगढ़ बास। १४।

१०. नंद=आनन्द देनेवाले, पुत्र। विरंचि=ब्रह्मा, तिया=पत्नी। विरंचि की तिया=सरस्वती। छिति=क्षिति=पृथ्वी। छिया=तुच्छ। तकिया=आधार।

१२. अहमेव=अहंकार

१३. छट्ठी=जन्म के उपरान्त छठे दिन षष्ठी देवी की पूजा होती है जो बालकों की रक्षिका कही जाती हैं। भाग=अंश, अधिकार। करन=दानवीर कर्ण। उमाह=प्रसार, उमड़ना। चक्क=चक्र=दिशा।

१४. दुग्ग-सहाय-बिलास=दुर्गों को अपना सहायक बनाकर विलसित होता हुआ, विशेष सुशोभित होता हुआ।

अथ रायगढ़-वर्णनं

[सवैया]

जा पर साहितनै सिवराज सुरेस की ऐसी सभा सुभ साजै।
यौं कवि भूषन जंपत है लखि संपति कौं अलकापति लाजै।
जा मधि तीनहु लोक की दीपति ऐसौ बड़ौ गढ़ु राय बिराजै।
बारि पताल सी माची मही अमरावति की छबि ऊपर छाजै। १५।

[हरिगीत]

मनिमय महल सिवराज के इमि रायगढ़ में राजहीं।
लखि जच्छ किंनर सुर असुर गंधरब हौंसनि साजहीं।
उत्तंग मरकत-मंदिरन मधि बहु मृदँग यों बाजहीं।
घन-समय मानहु घुमड़ि करिघन घनपटल गलगाजहीं। १६।
मुकुतान की झालरनि मिलि मनिमाल-छज्जा छाजहीं।
संध्या-समय मानहु नखत-गन लाल अंबर राजहीं।
जहिं तहिं जहाँ ऊरध उठे हीरा-किरन-समुदाय हैं।
मानहु गगन तंबू तन्यौ ताके सुफेत तनाय हैं। १७।

१५. तनै = तनय, पुत्र। जंपत = जल्पना, कहना। अलका पति = अलका पुरी का स्वामी कुबेर; सम्पत्ति का देवता। दीपति = दीप्ति, शोभा। माची = रायगढ़ से नीचे, पर्वत को समतल करके और दीवारों से घेरकर शिवाजी ने रक्षित-ग्राम बसाए थे, इनका नाम 'माची' था और ये रायगढ़ की आधार भूमि (कुर्सी) के समान लगते थे।

१६. यक्ष, किन्नर, गंधर्व = ये अर्ध-देवता कहे जाते हैं और इनका निवास पृथ्वी और स्वर्ग के मध्यलोक में कहा जाता है। यक्ष कुबेर के सेवक हैं। किन्नर वाद्य विद्या में निपुण कहे जाते हैं और गंधर्व गान विद्या में निपुण होते हैं। हौंस = हविस, इच्छा। उत्तंग = ऊँचे। मरकत = नील मणि। घनसमय = वर्षाकाल में। घनपटल = मेघ खण्ड। गलगाजहीं = गर्जन करते हैं।

१७. ऊरध = ऊर्ध्व, ऊपर की ओर। सुफेत = सफेद। तनाय = डोरी।

भूषन भनत जहिं परसि कै मनि पुहुपरागन की प्रभा।
प्रभु-पीतपट की प्रगट पावति सेघ मेघन की सभा।
मुख नागरिन के राजहीं कहुँ फटिक-महलनि संग में।
सुभ अमल कोमल कमल मानहु गगन-गंग-तरंग में। १८।

आनंद सों कहुँ सुंदरिन के बदन-इंदु उदोत हैं।
नभसरित के प्रफुलित कुमुद मुकुलित कमल-कुल होत हैं।
कहुँ बावली सर कूप राजत बद्ध मनि-सोपान हैं।
जहिं हंस सारस चक्रवाक बिहार करत समान हैं। १९।

कितहूँ बिसाल प्रबाल जालनि जटित अंगन-भूमि है।
जहिं ललित बागनि द्रुम लतनि मिलि रहे झलमल झूमि है।
चंपा चँबेली चारु चंदन च्यारिहू दिसि देखियै।
लवली लविंग इलानि के रेला कहाँ लगि लेखियै। २०।

१८. पुहुपराग = पुखराज, पीले रंग का रत्न। सेघ = शोभा। नागरी = नगर निवासी सुन्दरियाँ। फटिक = स्फटिक, संगमरमर। गगन-गंग = आकाश-गंगा।

१९. उदोत = उदित, प्रकाशमान्। नभसरित = आकाशगंगा। मुकुलित = संकुचित। बावली = बहुत चौड़े कुएँ जिनके भीतर चारों ओर ग्रीष्म-निवास के लिए दालानें बना दी जाती थीं; जल तक उतरने के लिए सीढ़ियाँ रहती थीं। मनि-सोपान = रत्नों की सीढ़ियाँ। चक्रवाक = चकवा पक्षी।

२०. प्रबाल = मूँगा। अंगन = आँगन। लवली = हरफारेवरी। एला = इलायची। रेला = समूह। लेखिए = गणना करना।

कहुँ केतकी कदली करौंदा कुंद अरु करबीर हैं।
कहुँ दाख दारिम सेब कटहर तूत अरु जंबीर हैं।
कितहूँ कदंब-कदंब कहुँ हिंताल ताल तमाल हैं।
पीयूष तें मीठे फले कितहूँ रसाल रसाल हैं। २१।

पुंनाग कहु कहुँ नागकेसर कितहुँ बकुल असोक हैं।
कहुँ ललित अगरु गुलाब पाटल-पटल बेला-थोक हैं।
कितहूँ नेवारी माधवी सिंगारहार कहूँ लसैं।
जहँ भाँति भाँतिनि रंग-रंग बिहंग आनँद सौं रसैं। २२।

२१. केतकी = एक पुष्प; इसका पौदा झाड़ जैसा होता है और यह वर्षा में खिलती है। कुंद = एक ऊँचा झाड़, इसके पुष्प श्वेत होते हैं। करबीर = कनैर। दाख = द्राक्षा, अंगूर। दारिम = दाड़िम, अनार। तूत = शहतूत। जंबीर = जँभीरी नीबू। कदंब = एक ऊँचा वृक्ष, इसके फूल वर्षा में खिलते हैं और वे बिलकुल गोल होते हैं। कदंब = समूह। हिंताल = खजूर। ताल = ताड़ वृक्ष। तमाल = एक बड़ा ऊँचा वृक्ष, इसकी लकड़ी काली होती है; आबनूस। पीयूष = अमृत। रसाल = आम। रसाल = रसपूर्ण।

२२. पुंनाग = चम्पा की जाति का एक बड़ा वृक्ष। नागकेसर = एक सुन्दर ऊँचा वृक्ष, इसके फूल सफेद होते हैं। बकुल = मौलसरी का वृक्ष। अगरु = एक वृक्ष, जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है। पाटल = एक पुष्प; ताम्रपुष्पी। पटल = क्यारियाँ। थोक = समूह। नेवारी = एक लता, इसके फूल श्वेत और सुगन्धित होते हैं। सिंगारहार = हरसिंगार, पारिजात, यह शरद् ऋतु में खिलता है; बहुत सुकुमार सफेद फूल होते हैं जिनका डंठल पीला होता है; शेफाली। रसैं = रसमग्न होते हैं; आनन्द करते हैं।

[छप्पय]

रसत बिहंगम बहु लवनित बहु भाँति बाग महिं।
कोकिल कीर कपोत केलि कलकल करंत तहिं।
मंजुल महरि मयूर चटुल चातक चकोर गन।
पियत मधुर मकरंद करत झंकार भृंग घन।
भूषन सुबास फल फूल जुत छहु रितु बसत बसंत जहिं।
इमि रायदुग्ग राजत रुचिर, सुखदायक सिवराज कहिं। २३।

[दोहा]

तहाँ राजधानी करी, जीति सकल तुरकान।
सिव सरजा रचि दान में कीनौ सुजस जहान। २४।

अथ कविवंश-वर्णन

[दोहा]

देसनि देसनि तें गुनी आवत जाचन ताहि।
तिनमें आयौ एक कबि भूषन कहियै जाहि। २५।
द्विज कनोज कुल कस्यपी रतिनाथ कौ कुमार।
बसत त्रिबिक्रमपुर सदा जमुना-कंठ सुठार। २६।

२३. रसत = रस प्राप्त करते हैं। लवनित = लावण्यपूर्ण, सुन्दर। कलकल = कलरव, मधुर स्वर। महरि = एक नारंगी रग का पक्षी जो सुन्दर होता है, इसे रुक्मिणी भी कहते हैं। चटुल = एक छोटा सा चंचल पक्षी। जुत = युक्त, सहित। छहु रितु = बसन्त, ग्रीष्म, पावस, शरद, हेमन्त, शिशिर। रायदुग्ग = रायगढ़।

२४. तुरकान = मुसलमानों के प्रान्त, स्थान। रचि = संलग्न होकर, रुचि उत्पन्न करके।

२५-२६. जाचक = याचना करने। जमुना कंठ = यमुना के निकट। सुठार = श्रेष्ठ स्थान।

बीर बीरबर से जहाँ उपजे कबि अरु भूप।
देव बिहारेस्वर जहाँ बिस्वेस्वर तद्रूप। २७।
कुल सुलंक चितकूटपति, साहस-सील-समुद्र।
कबि भूषन पदवी दई, हृदराम सुत-रुद्र। २८।

[सवैया]

सायस्त खाँ दुरजोधन सौ औ दुसासन सौ जसवंत निहार्यौ।
द्रोन सौ भाऊ करन्न करन्न सौ और सबै दल सौ दल भार्यौ।
ताहि बिगोय सिवा सरजा भनि भूषन औलिफतो यौं पछार्यौ।
पारथ कै पुरुषारथ भारथ जैसें जगाय जयद्रथ मार्यौ। २९।
पावक-तूल अमित्रन के भयौ मित्रन के भयौ धाम सुधा के।
आनँद भौ बहुरौ पहिलैं कुमुदावली, चक्कनि के असु धा के।
तेगहीं त्याग-बली सिवराज भौ भूषन भाषत बंधु सुधा के।
बंदन तेज औ चंदन कीरति साजे सिंगार बधू बसुधा के। ३०।

२७-२८. बीरबर = राजा बीरबल। देव बिहारेस्वर = बिहारेश्वर महादेव। बिस्वेस्वर = विश्वनाथ, काशीस्थ शंकर भगवान्। तद्रूप = समान। सुलंक = सोलंकी। सुतरुद्र = रुद्रशाह के पुत्र, हृदयराम।

२९. सायस्त खाँ = दक्षिण का सूबेदार (औरंगजेब का मंत्री) इसे शिवाजी ने पूना में पराजित किया था। दुसासन = दुर्योधन का भाई। जसवंत = जसवंतसिंह, मारवाड़ के राजा, औरंगजेब के सेनापति। द्रोन = द्रोणाचार्य, महाभारत के प्रसिद्ध धनुर्धर। भाऊ = बूँदी के हाड़ा नरेश छत्रसाल के पुत्र; ये भी शिवाजी से लड़ने दक्षिण गए थे। करन्न = राव कर्ण सिंह, बीकानेर के राजा; दक्षिण के सूबेदार। बिगोय = नष्ट करके। औलिफतो = अबुल फतेह, शाइस्ता खाँ का पुत्र। पारथ = पार्थ, पृथा-पुत्र अर्जुन। भारथ = महाभारत युद्ध। जयद्रथ = सिंध देश का राजा, दुर्योधन का बहनोई।

३०. तूल = तुल्य, समान। सुधा = अमृत। सुधा के धाम = चन्द्रमा। बहुरौ = पुनः, फिर। कुमुदावलि = कोकाबेली, रात्रि में खिलनेवाला जल-पुष्प। चक्कनि = चक्रवाक, चकवा, चकई, जो कवि-विश्वास के अनुसार रात्रिमें बिछुड़ते और दिन में मिल जाते हैं। असु = अंश, प्राण। धाके = भयभीत हुए। तेग हीं = तलवार के द्वारा। सुधा = शुद्धता, सत्य। बंदन = सिन्दूर।

छाय रही जितही तितही अति ही छबि छीरधि-रंग करारी।
भूषन सुद्ध सुधान की सौधनि सोधत सी धरि ओप उज्यारी।
यौं तम-तोमहि चाबि कै चंद चहूँ दिसि चाँदनी चारु पसारी।
ज्यौं अफजलहि मारि मही पर कीरति श्रीसिवराज सुधारी। ३१।

[घनाक्षरी]

तो सम हो सेस सो तौबसत पताललोक, ऐरावत गज सो तौ इंद्रलोक सुनियै।
दूरि हंस मानसर ताहू तें कैलासधर, सुधा सुरघर-सिंधु छोड़ि गयौ दुनियै।
सूर दानी सिरताज महाराज सिवराज, रावरे सुजस समकाज काहि गुनियै।
भूषन जहाँ लौं गति तहाँ लौं भटकि हार्यौ लखियै कछू न केती बातैं चित चुनियै।३२।

चंदन में नाग मदभर्यौ इंद्र-नाग, विषधर्यौ सेषनाग कहै उपमा अबस कौ।
चौंर थहरात, न कपूर ठहरात, मेघ सरद उड़ात बात लागें दिस दस कौ।
संभु नीलग्रीव भौंर पुंडरीक ही बसनि, सरजा सिवाजी बोल भूषन सरस कौ।
छीरधि में पंक कलानिधि में कलंक, यातें रूप एक टंक ये कहैं न तेरे जस कौ।३३।

३१. छीरधि = क्षीरसागर, दुग्ध का सागर, श्वेत वर्ण का। करारी = खूब स्वच्छ। सुधान = चूने के समान। सौधनि = महलों को। सोधत = रंगती हुई। अफजल्ल = अफजल खाँ, बीजापुर का सेनापति, इसने शिवाजी को धोखे से मारना चाहा था किन्तु शिवाजी ने इसे बघनखा भोंककर समाप्त कर दिया।

३२. सेस = शेषनाग, इनका वर्ण श्वेत है। ऐरावत = इन्द्र का श्वेत हाथी। कैलासधर = भगवान् शंकर। सुरघर = देवताओं का निवास। सुरघर-सिंधु = क्षीरसागर, इसका भी रंग श्वेत है। समकाज = समान कार्य करनेवाला।

३३. इंद्र-नाग = इन्द्र का हाथी, ऐरावत। अबस = विवश। थहरात = काँपता है, अस्थिर है। दिस दस = दस दिशाएँ (४ दिशाएँ, उनके ४ कोण तथा ऊर्ध्व और अधः, आकाश और पाताल, ये दस दिशाएँ हैं। कोणों के नाम हैं ईसान, अग्निकोण, नैर्ऋत्य तथा वायव्य; ये क्रमशः उत्तर, पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिम के बीच पड़ते हैं)। नीलग्रीव = नीले कंठवाले। पुंडरीक = श्वेत कमल। बसनि = निवास। कलानिधि = चन्द्रमा (१६ कलाओं से युक्त, प्रत्येक तिथि को एक कला प्रकट होती है और पूर्णिमा को १६ कलाओं की पूर्णता होती है)। टंक = ४ माशे की तौल; नाममात्र को भी नहीं।

इंद्र जिम जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर, रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम-दंड पर चीता मृगझुंड पर, भूषन बितुंड पर जैसें मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर, यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है।३४।

साहितनै सरजा सिवा की सभा जा मधि सुमेरवारी सुर की सभा कौं निदरति है।
भूषन भनत जाके एक-एक सिखर तें चारौं ओर नदिन की पाँति उतरति है।
जोन्ह कौं हसति जोति हीरामय मंदिरनि कंदरनि में छबि कुहू की उछरति है।
ऐसौ ऊँचौ दुरग महाबली है जामें नखताबली सौं बहस दीपावली धरति है।३५।

[सवैया]

साहितनै सरजा तुअ द्वार प्रतीदिन दान कौं दुंदभि बाजै।
भूषन भिक्षुक भीरन कौं अति भोजहु तें बढ़ि मौजनि साजै।
रायनि को गनु राजनि को गनु साहन मौं नहिं यौं छबि छाजै।
आज गरीबनिवाज मही पर तो सो तुहीं सिवराज बिराजै। ३६।

३४. जंभ = जृम्भासुर राक्षस, महिषासुर का पिता, इसे इंद्र ने मारा था। बाड़व = बड़वानल, सागर में रहनेवाली अग्नि (अग्नि तीन प्रकार की है—जठरानल = पेट में रहने वाली, पाचक, अग्नि, दावानल = वन की अग्नि तथा बड़वानल)। अंभ = जल। बारिबाह = जल के वाहन, मेघ। रतिनाह = रति-नाथ, रति के स्वामी, कामदेव। सहस्रबाहु = माहिष्मती नगरी का राजा; इसने परशुराम के पिता जमदग्नि को मार कर उनकी कपिला गाय को छीन लिया था, इस पर क्रुद्ध होकर परशुराम ने इसका वध किया। राम = परशुराम। दावा = दावाग्नि, वन की अग्नि। द्रुम-दंड = वृक्ष की लकड़ियाँ। वितुड = हाथी। मृगराज = सिंह। तम अंश = अंधकार का भाग। कंस = मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र, (कृष्ण का मामा)।

३५. जा मधि = जिस दुर्ग के मध्य में। सुमेर = एक पौराणिक पर्वत जो सोने का कहा गया है; इस पर देवता विहार करते हैं। वारी = वाली। कंदरा = गुफा। कुहू = अमावस्या।

३६. दुंदुभि = नगाड़े। भोज = धारा नगरी के प्रसिद्ध गुणग्राही तथा दानवीर राजा। मौजनि साजै = आनन्दमग्न करता है।

[छप्पय]

साहनमनी समथ्थ जासु अवरंगसाह सिर।
हृदय जासु अब्बासु साहि बहु बल बिलास थिर।
अैदिलसाहि कुतुब्ब जासु भुज जुग भूषन भनि।
पाय म्लेच्छ उमराव काय तुरकान और गनि।
यह रूप अवनि औतार धरि जिहि मिलि यह जग दंडियहु।
सरजा सिव साहस खग्ग गहि, कलिजुग सोइ खल खंडियहु। ३७।

[घनाक्षरी]

सिंहथरी जाने बिन जावली-जँगल भटी, हठी गज अैदिलु पठाय करि भटक्यौ।
भूषन भनत देखि भभ्भर भगाने सब, हिम्मति हिये में धरि काहुवै न हटक्यौ।
साहि के सिवाजी गाजी सरजा समथ्थ महा, मदगल अफजल पंजा-बल पटक्यौ।
ताबगीर ह्वै करि निकाम निज धाम कहिं याकुत महाउत लै आँकुस कौं सटक्यौ।३८।

३७. साहनमनी=शाहों में श्रेष्ठ। समथ्थ=समर्थ। अब्बासुसाहि=शाह अब्बास, फारस का बादशाह, औरंगजेब का मित्र। अैदिल साहि = आदिलशाह, बीजापुर के शाह की पदवी। कुतुब्ब = कुतुबशाह, गोलकुंडा के शाह की पदवी। भुज जुग = दो भुजाएँ। तुरकान = तुर्क देश। दंडियहु = दंडित किया।

३८. सिंहथरी = सिंह का स्थान, निवास। जावली = सतारा जिले में, महाबलेश्वर पहाड़ के निकट का एक ग्राम। भटी = मॉद। गज = हाथी, अफजल खाँ। अैदिलु = आदिलशाह। भटक्यौ = चूक गया। भभ्भर = भड़भड़ में पड़ना, अस्तव्यस्त होना। काहुवै = किसी ने भी। गाजी = धर्मयुद्ध करनेवाला वीर। मदगल = जिसके माथे से मद प्रवाहित हो रहा है। पंजाबल = सिंह पंजे के बल से हाथी को मारता है; शिवाजी ने भी बघनखा से अफजल को मारा था। ताबगीर = शक्तिमान्। याकुत = याकूत खाँ और आँकुस = अंकुश खाँ, ये दोनों बीजापुरी सरदार थे और अफजल खाँ के सहायक थे।

साहितनै सिवराज तो जस भूषन आज बिगर कलंक चंद उर आनियतु है।
एक ही आनन पंचानन गनि तोहि गजानन गज-बदन बिना बखानियतु है।
एक सीस ही सहससीस मान्यौ धराधर दुहूँ दृग सौं सहसदृग मानियतु है।
दुहूँ कर सौं सहसकर जानियतु तोहि, दुहूँ बाहु सौं सहसबाहु जानियतु है।३९।

[सवैया]

साहितनै भुअ कौ सब भार भुजा भुजगेंद सौं ठानि अधीनौ।
भूषन तीखन तेज तरन्नि सौं साहन कौं कियौ पानिपहीनौ।
दारिद-दौ दलिकै कर-बारिद सौं बन ज्यौं गुनि त्यौं सुख कीनौ।
श्रीसिवराज कियौ जस-चंद सौं म्लेच्छन कौ मुखकंजु मलीनौ। ४०।

[घनाक्षरी]

कबि कहैं करन करनजित कमनैत, अरिन के उरन में कीनौ इमि छेउ है।
कहत धरेस धरा धरिबे कौं सेस ऐसो, और धराधरनि कौ मेट्यौ अहमेउ है।

३९. पंचानन = शंकर (पाँच मुखवाले)। सहससीस = हजार सिरवाले शेषनाग। धराधर = पृथ्वी को धारण करनेवाला, शासन करनेवाला। सहसदृग = सहस्र नेत्रवाले इन्द्र, शापवश इनके शरीर में हजार नेत्र हो गए थे। सहसकर = सहस्र किरण-वाले, सूर्य। सहस्रबाहु = हैहयराज, इसने रावण को पराजित किया था। नर्मदा में स्नान करते समय इसके हाथों के आघात से जल उलटा बहने लगा जिससे रावण की पूजा सामग्री बह गई। वह युद्ध करने आया और पराजित हुआ।

४०. भुअ = भुवि, पृथ्वी। भुजगेंद = भुजगेन्द्र, सर्पराज शेषनाग। ठानि = स्थित करके। तरन्नि = तरणि, सूर्य। पानिप = जल, शोभा, कांति। दौ = दावाग्नि, वन की अग्नि। कर-बारिद = हाथरूपी मेघ। गुनि = गुणीजन।

४१. करन = दानवीर कर्ण। करनजीत = कर्ण को जीतनेवाले अर्जुन। कमनैत = धनुर्धारी। छेउ = छेव, छेदन, घाव। धरेस = पृथ्वीपति, राजा। धरा धरनि = पृथ्वी को धारण करनेवाले, राजाओं का। अहमेउ = अहम्;

भूषन भनत महाराज सिवराज तेरौ राजकाज देखि कोऊ पावत न भेउ है।
कहरी अैदिल मौजलहरी कुतुब कहै बहरी निजाम के जितैया कहैं देउ है।४१।

आवत गोसलखाने ऐसें कछू त्यौर ठाने, जानौ अवरंगहू के प्रानन कौ लेवा है।
रस-खोट भए तें अगोट आगरे मौं सातौं चौकी नाँघि आय घर करी हद रेवा है।
भूषन भनत मही चहौं चक्क चाह कियौ पातसाह चिक्कता की छाती माहि छेवा है।
जान न परत ऐसें काम है करत कोऊ गंधरब देवा है कै सिद्ध है कै सेवा है।४२।

चमकति चपला न फेरत फिरंगैं भट इंद्र कौ न चाप रूप बैरख समाज कौ।
धाए धुरवा न छाए धूरि के पटल मेघ गाजिबौ न साजिबौ है दुंदुभी-अवाज कौ।
भ्वैसिला के डरन डरानी रिपुरानी कहैं पिय भजौ देखि उदौ पावस की साज कौ।
घन की घटा न गजघटनि सनाह साज, भूषन भनत आयौ सैन सिवराज कौ।४३।

अहंकार। भेउ = भेद। कहरी = विपत्ति लानेवाला, कहर ढानेवाला। मौज लहरी = आनन्द में मग्न रहनेवाला, जब जैसी मौज आवे, कर डालनेवाला। बहरी = निजाम की उपाधि; बहर 'सागर' को भी कहते हैं, इस प्रकार 'समुद्री' अर्थ हो सकता है; कहते हैं निजाम बहमनी राज्य के शिकारी बाज-बहरियों की देखरेख करता था इसलिए 'बहरी' उपाधि हुई। देउ = देव = दानव के अर्थ में विदेशियों द्वारा प्रयुक्त।

४२. गोसलखाना = दीवान खास। रस-खोट = आनन्द में बाधा पड़ना, अपमानित होना। अगोट = रोकना, बन्द करना, कैद करना। सातौं चौकी = अनेक थाने, पहरे के स्थान। हद रेवा = नर्मदा नदी को अपने राज्य की सीमा बनाया। चहौं चक्क = चारों दिशाओं। चाह = चाव, आनन्द। चिक्कता = चगताई वंश का औरंगजेब। छेवा = घाव। सिद्ध = अलौकिक कार्यों को करने की शक्ति से युक्त साधक। सेवा = शिवाजी।

४३. फिरंगैं = विलायती तलवारें। बैरख = ध्वजा। धुरवा = जल से भरे और इसी कारण नीचे की ओर झुके हुए, बादल। पटल = प्रसार, परदे। उदौ = आगमन, उदय। पावस = वर्षाऋतु। गजघटनि = हाथियों के समूह से। सनाह = कवच।

[सवैया]

एक समै सजिकै सब सैन सिकार कौं आलमगीर सिधाए।
'आवहिगौ सरजा सम्हरौ' इक ओर के लोगन बोलि जनाए।
भूषन भौ भ्रम ओरँग के सिव भ्वैसिला भूप की धाक धुकाए।
धाय कै सिंघु कह्यौ समुझाय करौलन जात अचेत उठाए।४४।

साहितनै सिव साहि निसा में निसाँक लियौ गढ़सिंघ सुहानौ।
राठिवरौ कौ सँसार भयौ भिरि कै सरदार गिर्‌यौ उदैभानौ।
भूषन यौं घमसान भौ भूतल पैरत लोथनि मानौ मसानौ।
ऊँचे छतज्ज छटा उछटी प्रगटी परभा परभात की मानौ।४५।

[घनाक्षरी]

लूट्यौ खाँनदौरा जोरावर आसफजंग रु लूट्यौ कारतलब खाँ मानहु अमाल है।
भूषन भनत लूट्यौ पूना में सायस्तख़ान गढ़नि में लूट्यौ त्यौंगढ़ोइन कौ जाल है।
हेरि हेरि कूटि सलहेर बीच सिगदार घेरि घेरि लूट्यौ सब कटक कराल है।
मानौ हय हाथी डमराउ करि साथ, अवरंग डरि सिवाजी कौं भेजत रसाल हैं।४६।

४४. आलमगीर = औरंगजेब। सरजा = सिंह (शरजः) तथा शिवाजी। धुकाए = डरे हुए। करौल = हाँका करनेवाला; शिकार में बहुत से लोग घेरा बनाकर जंगल में धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं; जानवर उस सिमटते हुए घेरे के बीच में आ जाते हैं और भागने के प्रयत्न में उनका शिकार किया जाता है, इसे हाँका करना कहते हैं।

४५. गढ़सिंघ = सिंहगढ़, यह दुर्ग पूना के दक्षिण में था। शिवाजी के मित्र तानाजी मालसुरे ने बड़ी वीरता से इसे जीता था। इसका एक नाम कोण्डाना भी था। १६७० ई० में इसे विजय किया गया। राठिवरौ = राठौर (उदयभानु); सिंहगढ़ का किलेदार। छतज = छप्पर। उछटी = प्रसारित हुई, फैली।

४६. खानदौरा = नौशेरी खाँ की उपाधि; यह दक्षिण का सूबेदार था। अहमदनगर के पास शिवाजी से इसका घोर युद्ध हुआ (१६५७ ई०) शिवाजी के साथियों ने इस इलाके में खूब लूट मचाई थी। सफजंग = सफदरजंग, दिल्ली का एक सरदार। कारतलब खाँ = एक चारहजारी मनसबदार; परेंदा किले में

बासव-से बिसरत बिक्रम की कहा चली, बिक्रम लखत बीर बखत-बिलंद के।
जागे-तेज-बृन्द सिवाजी नरिंद मसनंद, माल-मकरंद कुलचंद साहिनंद के।
भूषन भनत जाके बैर बैरी-नैरनि में होत अचिरज घर-घर दुख-दंद के।
कनकलतानि इंदु इंदुहूमे अरबिंद, झरैं अरबिंदन तें बुंद मकरंद के।४७।

श्रीनगर-नरपाल जुमिला के छितिपाल भेजत रसाल चौंर गढ़ कुही बाज की।
मेवार ढूंढार मारवार और बुँदेलखंड, झारखंड बाँधौ-धनी चाकरी इलाज की।
भूषन जे पूरब पछाँह नरनाँह ते वै ताकत पनाह दिल्लीपति सिरताज की।
जगत के जैतवार अवरंग हूकों जीत्यौ न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराज की।४८।

सेनानायक। कोंकण में शिवाजी का प्रभुत्व मिटाने के लिए भेजा गया किन्तु शिवाजी की छापामार युद्ध-शैली से पराजित हुआ। सब सामान तथा धन देकर छूट सका (१६६१ ई०)। आमल = शासक। शाइस्ता खाँ = पूना में १६६३ ई० में शिवाजी ने इसको पराजित किया था। यह दक्षिण का सूबेदार था। गढ़ोइन = गढ़पतियों। सल्हेर = इस दुर्ग के निकट शिवाजी ने एक बड़ी मुगल सेना को परास्त किया (१६७० ई०)। यह स्थान बगलाना, पश्चिमी खानदेश में है। सिगदार = विभागाध्यक्ष; (सीगा—अरबी शब्द = विभाग)। रिसाल = (इरसाल = अरबी शब्द) = कर।

४७. बासव = इन्द्र। विक्रम = विक्रमादित्य; शूरता। बखत-बिलंद = बुलंद बख्तवाले, श्रेष्ठ कीर्तिवाले। मसनंद = गद्दी। दंद = द्वंद्व, संघर्ष। कनकलता = स्वर्णलता (स्त्रियाँ)। इंदु = चन्द्र (मुख)। अरविंद = कमल (नेत्र)। मकरंद = पराग (अश्रु)।

४८. जुमिला = (फ़ारसी शब्द) सम्पूर्ण। चौंर = चमर। गढ़ = दुर्ग। कुही = एक छोटा शिकारी पक्षी। मेवाड़ = उदयपुर की रियासत। ढूँढार = अंबर अथवा जयपुर रियासत। मारवार = जोधपुर राज्य। बुंदेलखण्ड = झाँसी, बाँदा, हमीरपुर तथा जालौन जिलों, इलाहाबाद की तीन तहसीलों और २०-२२ अन्य रियासतों का संयुक्त क्षेत्र। झारखंड = बैद्यनाथ (बिहार)। बाँधौ धनी = बाँधव नरेश, रीवा के राजा। जैतवार = जीतनेवाला।

[घनाक्षरी]

गुननि सो इनहूँ कों बाँधि ल्याइयतु पुनि गुननि सों उनहूँ कों बाँधि ल्याइयतु है।
पाय गहे इनहूँ कों रोज द्याइयतु अरु, पाय गहे उनहूँ को रोज द्याइयतु है।
भूषन भनत महाराज सिवराज तेरो रस रोस एक भाँति ही को ध्याइयतु है।
दोहा के कहे तें कबि लोग ज्याइयतु है त्यौं दो हा के कहे तें अरि लोग ज्याइयतु है।४९।

[सवैया]

कामिनि कंत सों जामिनि चंद सों दामिनि पावस-मेघ-घटा सों।
कीरति दान सों सूरति ज्ञान सों प्रीति बढ़ी सनमान महा सों।
भूषन भूषन सों तन ही, नलिनी नव-पूषनदेव-प्रभा सों।
जाहिर चारिहुँ ओर जहान लसै हिंदुआन खुमान सिवा सों।५०।

[लीलावती]

मद-जल-धरन द्विरद बर लागत बहु जल-धरन जलद छबि साजै।
भूमिधरन फनिपत्ति लसत अति तेजधरन ग्रीषम-रवि छाजै।
खग्गधरन सोभत भट रोचत रुचि भूषन गुनधरन समाजै।
दिल्लि-दलन दच्छिन दिसि थंभन ऐंड-धरन सिवराज बिराजै।५१।

४९. गुननि सो = गुणों से तथा रस्सी से। पाय गहे = पैर पकड़ने पर और पाकर पकड़ लेना। रोज = नित्य तथा रोना पीटना। द्याइयतु है = दिलाते हैं। दोहा = छन्द। दो हा = दो बार 'हा' कहना, हाहा खाना, दीनता दिखलाना। ज्याइयतु है = पालन करना, क्षमा करना।

५०. पावस = वर्षा। सूरति = रूप। भूषण = आभूषण। नव = नवीन। पूषण = सूर्य। खुमान = आयुष्मान्, शिवाजी।

५१. द्विरद = हाथी। फनिपत्ति = फणिपति, शेषनाग। खग्ग = खड्ग, तलवार। रुचि = रुचता है। थंभन = आधार, थामनेवाले। ऐंड धरन = अपनी अड़ को बनाए रखनेवाला।

[सवैया]

दे त तुरीगन गीत सुने बिन, देत करीगन गीत सुनाएँ।
भूषन भावत भूप न आन, जहान खुमान की कीरति गाएँ।
देत घने नृप मंगन कौं, पै निहाल करैं सिवराज रिझाएँ।
आन रितैं सरसैं बरसैं, पै बढ़ैं-नदियाँ-नद पावस आएँ।५२।

[घनाक्षरी]

दारुन दुगुन दुरजोधन तें अवरंग, भूषन भनत जग राख्यौ छलु मढ़िकै।
धरम धरम, बल भीम, पैज पथ्थ, रूप नकुल, अकिल सहदेव तें तूँ चढ़िकै।
साहि के सिवाजी गाजी बाह्यौ बिल्ली हूतें चंड पांडवनिहू तें पुरुषारथ तू बढ़िकै।
सूने लाखभौन तें कढ़े वै राति पाँचितें, तूँ द्यौस लाख चौकी तें अकेलौ आयौ कढ़िकै।५३।

छूटत हुलास आमखास एक संग छूटे, हरम सरम एक संग बिन ढंग ही।
नैनन को नीर धीर छूटे एक संग छूटे, सुख-रुचि मुख-रुचि त्यौंही एक रंग ही।
भूषन बखानै सिवराज मरदाने तेरी, धाक बिललाने न गहत बल अंग ही।
दच्छिन को सूबा पाइ दिल्ली के उजीर तजी, उत्तर की आसा जीव-आसा एक संगही।५४।

५२. तुरीगन = घोड़ों के समूह। करी = हाथी। रितैं = ऋतुओं में। सरसैं = सजल, प्रसन्न होती हैं।

५३. दारुन = भीषण। धरम = धर्मराज युधिष्ठिर। पैज = प्रतिज्ञा। पथ्थ = पार्थ, अर्जुन। गाजी = धर्मयुद्ध करनेवाला। बाह्यौ = बाधित किया, विवश किया। लाख भौन = लाक्षागृह, महाभारत में पांडवों को भस्म कर देने के लिए बनवाया हुआ लाख का घर।

५४. आमखास = दीवान खास का दर्बार। बिन ढंग = बिना किसी क्रम के, अस्तव्यस्तता के साथ। सुख-रुचि = सुख की इच्छा। मुख-रुचि=मुख की कांति, शोभा। बिललाने = व्याकुल, शिथिल। सूबा = सूबेदारी का पद।

कीरति कों ताजी करि बाजी चढ़ि छीन कीनी बाजी घोरपरा बिन बाजी बीजापुर की ।
भूषन भनत भ्वैसिला भुवाल धाक ही सों, धीर धरबी न साहि कुतुब की धुर की ।
दुहूँ उदैभान बिन अमर सुजान बिन, मान बिन कीनी साहिबी त्यौं दिल्लीसुर की ।
साहिसुअ महाबाहु सिवाजी सलाह बिन, कौने पातसाह की न पातसाही मुरकी ।५५।

बचैगा न समुहाने बहलोल खाँ अयाने, भूषन बखाने दिल आन मेरा बरजा ।
तोही तें सवाई तेरा भाई सलहेर पास, बंदि किया साथ का न कोऊ बीर गरजा ।
साहिहू का साहि तिसी ओरग के लीने गढ़, जिसका तूँ चाकर सो जिसकी है परजा ।
साहि का ललन अफजल का मलन दिल्ली-दल का दलन सिवराज आया सरजा।५६।

सीय संग सोभित सुलच्छन सहाय जाके, भू पर भरत नाम भाई नीति चारु है ।
भूषन भनत कुल-सूर-कूलभूषन हैं, दासरथी सब जाके भुज भुअ-भारु है ।

५५. घोरपरा = बाजी घोरपड़े बीजापुर के मुधोल का जागीरदार था । इसने शाहजी को कैद किया था । इसी पर शिवाजी ने कुडाल के युद्ध में इसे परास्त किया था । ताजी करि = फिर से स्थापित करना । बाजी =घोड़ा तथा बाजी । उदैभान = उदयभानु राठौर, सिंहगढ़ (कोंडाना) का किलेदार, इसे शिवाजी के सरदार तानाजी मालसरे ने मारा था । अमर = अमरसिंह चंदावत सिसोदिया; सलहेर के घेरे में ये शिवाजी के सरदारों द्वारा मारे गये । सुजान = सुजानसिंह, ओरछा नरेश, ये दक्षिण में पुरंदर किले के घेरे में बादशाह की ओर से लड़े थे । मुरकी = मुड़ गई, नष्ट हो गई ।

५६. बहलोल खाँ = बीजापुरी पठान सेनापति; १६७३ ई० में इसे शिवाजी के सेनापति प्रतापराव गूजर ने परास्त किया । कई बार यह शिवाजी से भिड़ा था; कभी यह जीतता था, कभी शिवाजी । पन्हाला, जेसारी तथा गढ़चाँदा आदि स्थानों पर इससे युद्ध हुए थे । तेरा भाई = सलेहरि के युद्ध में शिवाजी ने इखलास खाँ को कैद किया और बाद में छोड़ दिया था ।

५७. सीय = श्री, लक्ष्मी तथा सीता । सुलच्छन = शुभलक्षण और श्रेष्ठ लक्षण । भरत = पालन करनेवाला तथा भरतजी । सूर = शूर तथा सूर्य । दासरथी =

अरि-रुंक तोर जोर सदा साथ बानर हैं, सिंधु रहै बाँधे जाके बल को न पारु है।
तेगहि कै भेंटैजौन राकस मरद जान्यौ, सरजा सिवाजी राम ही को अवतारु है।५७।

साहन के सिच्छक सिपाहन के पातसाह, संगर में सिंह के से जिनके सुभाउ हैं।
भूषन भनत सिवा सरजा की धाक तेऊ, काँपत रहत चित गहत न चाउ हैं।
अफजल की अगत सायस्त खाँ की अपत, बहलोल की बिपत डरे उमराउ हैं।
पक्का मतो करिकै मलेच्छ मनसबदार, मक्का के उतर उतरत दरिआउ हैं।५८।

पीरी-पीरी होनैं तुम देत हौ मँगाय हमैं, सुबरन हम सों परिखि करि लेत हौ।
एक पल ही मैं लाख रूखन सों लेत लोग, तुम राजा ह्वै कैं लाख देबे कों सचेत हौ।
भूषन भनत महाराज सिवराज बड़े दानी दुनी ऊपर कहाए कौने हेतु हौ।
रीझि हसि हाथी हमैं सब कोऊ देत कहा रीझि हसि हाथी एक तुमही पै देत हौ।५९।

रथी जिसके दास हैं और दशरथ के पुत्र। अरिलंक = शत्रु की कमर तथा लंका। बानर हैं = बाण रहैं तथा बन्दर हैं। सिंधुरहै बाँधे = हाथी बँधे रहते हैं और सागर को बाँधे रहता है। ते गहि कै भेंटै = तलवार के द्वारा ही शत्रु से भेट करता है और उनको पकड़ कर मार डालते हैं। जौन राकस मरद जानै = जो नर (मनुष्य) अकस (शत्रु) को मर्दन करना जानता है और जो राक्षसों को मर्दित करना जानता है।

५८. संगर = युद्ध। चाउ = उत्साह। अफजल खाँ, शाइस्ता खाँ तथा बहलोल खाँ का उल्लेख पहले हो चुका है। अगत = बुरी दशा। अपत = अमर्यादा। मतो = निश्चय। उतर = उत्तर, समाधान।

५९. हौनैं = हुन, अशर्फी। सुबरन = स्वर्ण, सुन्दर अक्षर। लाख = लाख रुपया, वृक्षों पर लगनेवाली लाख। रूख = रूखे आदमी, वृक्ष। हाथी = हाथ मिलाना। पै = अवश्य, निश्चित रूप से।

पूरब के उत्तर के प्रबल पछाँहहू के सब पातसाहन के गढ़-कोट हरते।
भूषन कहैं यौं अवरंग सों उजीर, जीति लेबे कौं पुरतगाल सागर उतरते।
सरजा सिवा पर पठावत मुहीम-काज, हजरत हम मरिबे कौं नाहिं डरते।
चाकर ह्वै उजर कियौ न जाय नेक पै कछू दिन उबरते तौ घने काम करते।६०।

[सवैया]

दच्छिन-नाइक एक तुही, भुवि-भामिनि कौं अनुकूल ह्वै भावै।
दीनदयाल न तो सो दुनी, अरु म्लेच्छ के दीनहिं मारि मिटावै।
श्रीसिवराज भनै कबि भूषन तेरे सरूपहि कोउ न पावै।
सूर के बंस में सूर-सिरोमनि ह्वै करि तूँ कुलचंद कहावै।६१।

[घनाक्षरी]

दच्छिन कों दाबि करि बैठो आन सायस्त खाँ, पूना माहिं दूना गहि जोर करवार को।
हिंदुथान-खंभ गढ़पति दलथंभ, भनै भूषन भिरैया कियौ सुजस अपार को।
मनसबदार चौकीदारन गँजाय, महलन में मचाय महाभारथ सो भार को।
तो सौ को सिवाजी जिहि दो सौ आदमी सों जीत्यौ जंग सरदार सौ हजार असवार को।६२।

६०. मुहीम-काज=आक्रमण करने के लिए। हजरत=श्रीमन् (सम्बोधन)। उजर=उज्र, प्रतिवाद।

६१. दच्छिन-नाइक=दक्षिण देश का नेता तथा अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला नायक। भुवि-भामिनी=पृथ्वी रूपी स्त्री। अनुकूल=कृपालु तथा केवल एक स्त्री से प्रेम करनेवाला नायक। दीन=धर्म। सूर=सूर्य तथा शूरवीर। कुलचन्द=कुलको चन्द्र के समान प्रकाशित करने वाला।

६२. खंभ=स्तम्भ, आधार। दलथंभ=सेना का आधार। भिरैया=भिड़ने वाला। गंजाय=गंजन करने, नष्ट-भ्रष्ट करके।

अरि-लंक तोर जोर सदा साथ बानर हैं, सिंधु रहै बाँधे जाके बल को न पारु है।
तेगहि कै भेंटैजौन राकस मरद जान्यौ, सरजा सिवाजी राम ही को अवतारु है।५७।

साहन के सिच्छक सिपाहन के पातसाह, संगर में सिंह के से जिनके सुभाउ हैं।
भूषन भनत सिवा सरजा की धाक तेऊ, काँपत रहत चित गहत न चाउ हैं।
अफजल की अगत सायस्त खाँ की अपत, बहलोल की बिपत डरे उमराउ हैं।
पक्का मतो करिकै मलेच्छ मनसबदार, मक्का के उतर उतरत दरिआउ हैं।५८।

पीरी-पीरी होनैं तुम देत हौ मँगाय हमैं, सुबरन हम सों परिखि करि लेत हौ।
एक पल ही मैं लाख रूखन सों लेत लोग, तुम राजा ह्वै कैं लाख देबे कों सचेत हौ।
भूषन भनत महाराज सिवराज बड़े दानी दुनी ऊपर कहाए कौने हेतु हौ।
रीझि हसि हाथी हमैं सब कोऊ देत कहा रीझि हसि हाथी एक तुमही पै देत हौ।५९।

रथी जिसके दास हैं और दशरथ के पुत्र। अरिलंक = शत्रु की कमर तथा लंका। बानर हैं = बाण रहैं तथा बन्दर हैं। सिंधुरहै बाँधे = हाथी बँधे रहते हैं और सागर को बाँधे रहता है। ते गहि कै भेंटै = तलवार के द्वारा ही शत्रु से भेट करता है और उनको पकड़ कर मार डालते हैं। जौन राकस मरद जानै = जो नर (मनुष्य) अकस (शत्रु) को मर्दन करना जानता है और जो राक्षसों को मर्दित करना जानता है।

५८. संगर = युद्ध। चाउ = उत्साह। अफजल खाँ, शाइस्ता खाँ तथा बहलोल खाँ का उल्लेख पहले हो चुका है। अगत = बुरी दशा। अपत = अमर्यादा। मतो = निश्चय। उतर = उत्तर, समाधान।

५९. हौनैं = हुन, अशर्फी। सुबरन = स्वर्ण, सुन्दर अक्षर। लाख = लाख रुपया, वृक्षों पर लगनेवाली लाख। रूख = रूखे आदमी, वृक्ष। हाथी = हाथ मिलाना। पै = अवश्य, निश्चित रूप से।

पूरब के उत्तर के प्रबल पछाँहहू के सब पातसाहन के गढ़-कोट हरते।
भूषन कहैं यौं अवरंग सों उजीर, जीति लेबे कौं पुरतगाल सागर उतरते।
सरजा सिवा पर पठावत मुहीम-काज, हजरत हम मरिबे कौं नाहिं डरते।
चाकर ह्वै उजर कियौ न जाय नेक पै कछू दिन उबरते तौ घने काम करते।६०।

[सवैया]

दच्छिन-नाइक एक तुही, भुवि-भामिनि कौं अनुकूल ह्वै भावै।
दीनदयाल न तो सो दुनी, अरु म्लेच्छ के दीनहिं मारि मिटावै।
श्रीसिवराज भनै कबि भूषन तेरे सरूपहि कोउ न पावै।
सूर के बंस में सूर-सिरोमनि ह्वै करि तूँ कुलचंद कहावै।६१।

[घनाक्षरी]

दच्छिन कों दाबि करि बैठो आन सायस्त खाँ, पूना माहिं दूना गहि जोर करवार को।
हिंदुआन-खंभ गढ़पति दलथंभ, भनै भूषन भिरैया कियौ सुजस अपार को।
मनसबदार चौकीदारन गँजाय, महलन में मचाय महाभारथ सो भार को।
तो सौ को सिवाजी जिहि दो सौ आदमी सों जीत्यौ जंग सरदार सौ हजार असवार को।६२।

६०. मुहीम-काज=आक्रमण करने के लिए। हजरत=श्रीमन् (सम्बोधन)। उजर=उज्र, प्रतिवाद।

६१. दच्छिन-नाइक=दक्षिण देश का नेता तथा अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला नायक। भुवि-भामिनी=पृथ्वी रूपी स्त्री। अनुकूल=कृपालु तथा केवल एक स्त्री से प्रेम करनेवाला नायक। दीन=धर्म। सूर=सूर्य तथा शूरवीर। कुलचन्द=कुलको चन्द्र के समान प्रकाशित करने वाला।

६२. खंभ=स्तम्भ, आधार। दलथंभ=सेना का आधार। भिरैया=भिड़ने वाला। गंजाय=गंजन करने, नष्ट-भ्रष्ट करके।

ता दिन अखिल खलभलैं खल खलक में, जा दिन सिवाजी गाजी नेक करखत हैं।
सुनत नगारे के अगारे तजि अरिन के दारगन भाजत न दार परखत हैं।
छूटे बार बार छूटे बारन तें लाल देखि, भूषन सुकबि बरनत हरखत हैं।
क्यौं न होइ उतपात बैरिन के नैरनि में, कारे घन उमड़ि अँगारे बरखत हैं।६३।

जसन के रोज यौं जलूस गहि बैठो जोऽब इंद्र आवै सोऊ लागै औरँग की परजा।
भूषन भनत तहाँ गरजा सिवाजी गाजी, जहाँ को तुजक देखिकै हिये न लरजा।
ठान्यौ न सलाम मान्यौ साह को इलाम, मान्यौ धाम-धूम कै न रामसिंघहू को बरजा।
जासों जोरा करि बाचै भूपत दिगंत तासों तोरा करि तखत तरे तें आयौ सरजा।६४।

महाराज सिवराज चढ़त तुरंग पर, ग्रीवा जात नै करि गनीम अतिबल की।
भूषन चलत सरजा की सैन छिति पर, छाती दरकति है खरी अखिल खल की।
कियो घात दौरि अमीरन उमराउ परि, गई कटि नाक सिगरेई दिल्ली-दल की।
सूरत जराय कियौ दाह पातसाह-उर स्याही जाइ सब पातसाही-मुख झलकी।६५।

६३. अखिल = सम्पूर्ण। खलभलैं = व्याकुल हो उठते हैं। खलक = संसार (खल्क़, अरबी शब्द)। करखत हैं = कर्ष, उत्साह, जोश प्रकट करते हैं। अगारे = आगार, घर। दार = स्त्री तथा द्वार। बार = बालक। नैरनि = नगरों में।

६४. जसन = उत्सव (फारसी शब्द)। जलूस = जनसमूह (अरबी शब्द)। तुजक = प्रबन्ध (तुजुक, तुर्की शब्द)। इलाम = आज्ञा (फारसी शब्द)। रामसिंह = महाराज जयपुर, जयसिंह के पुत्र, ये औरंगजेब के विश्वस्त दरबारी थे। जोरा = मित्रता। तोरा = तोड़ना, शत्रुता करना। तखत = सिंहासन।

६५. गनीम = शत्रु (अरबी शब्द)। छिति = क्षिति, पृथ्वी। सूरत = ताप्ती नदी के तट पर प्रसिद्ध बन्दरगाह। यह बड़ा सम्पन्न नगर था और शिवाजी ने दो बार इसे लूटा (सन् १६६४ तथा ७०) और छिन्न-भिन्न कर दिया।

[सवैया]

पंच-हजारिन बीच खरा किया मैं उसका कुछ भेद न पाया।
भूषन यौं कहि औरँगजेब उजीरन सों बेहिसाब रिसाया।
कम्मर की न कटारी दई इस नाम ने गोसलखाना बचाया।
जोर सिवा करता अनरथ्थ भली भई हथ्थ हथ्यार न आया। ६६।

[घनाक्षरी]

बेदर कल्यान दै परेंडा ऐसे कोट साहि एदिल गँवाए हैं नवाइ निज सीस कौं।
भूषन भनत साहिनगरी कुतुब साहि, दै कर गँवाइ रामगिरि-से गिरीस कौं।
भ्वैंसिला भुवाल साहितनै गढ़पाल दिन दोऊ न लगाए गढ़ लेत पँचतीस कौं।
सरजा सवाई सिवराज तैं सुहाई लोबे सौगुनी बड़ाई गढ़ दीने हैं दिलीस कौं।६७।

६६. पंचहजारी = पाँच हजार सेना के अधिकारी, मनसबदार। इसनाम = औरंगजेब का नाम, उसका प्रभाव। गोसलखाना = दरबार खास।

६७. बेदर = विदर्भनगर; हैदराबाद (दक्षिण) के ३९ कोस उत्तर-पश्चिम। कल्यान = उत्तर कोंकण (जिला थाना) का एक नगर। परेंडा = शोलापुर से उत्तर-पश्चिम एक नगर तथा दुर्ग। [उपर्युक्त तीन दुर्ग शिवाजी ने आदिलशाह से छीन लिए थे।] साहिनगरी = हैदराबाद (यही भागनगर या भागनेर है, जिसे कुतुबशाह ने अपनी पत्नी भागमती के नाम पर बसाया था)। रामगिरि = पैनगंगा और गोदावरी के बीच का रामगिरि पर्वत। इसी के पास रामगढ़ अथवा रामनेरि किला है।

[उपर्युक्त दो दुर्ग शिवाजी ने गोलकुण्डा के कुतुबशाह से ले लिए थे। ये सब किले १७ वीं शताब्दी ई० के मध्य के आस-पास जीते गये]

गढ़ लेत पँचतीस कौं = शिवाजी ने मुसलमान राजाओं से ३५ किले जीते थे। सवाई = शिवाजी की एक उपाधि।

ता दिन अखिल खलभलैं खल खलक में, जा दिन सिवाजी गाजी नेक करखत हैं।
सुनत नगारे के अगारे तजि अरिन के दारगन भाजत न दार परखत हैं।
छूटे बार बार छूटे बारन तें लाल देखि, भूषन सुकबि बरनत हरखत हैं।
क्यौं न होइ उतपात बैरिन के नैरनि में, कारे घन उमड़ि अँगारे बरखत हैं।६३।

जसन के रोज यौं जलूस गहि बैठो जोऽब इंद्र आवै सोऊ लागै औरँग की परजा।
भूषन भनत तहाँ गरजा सिवाजी गाजी, जहाँ को तुजक देखिकै हिये न लरजा।
ठान्यौ न सलाम मान्यौ साह को इलाम, मान्यौ धाम-धूम कै न रामसिंघहू को बरजा।
जासों जोरा करि बाचै भूपत दिगंत तासों तोरा करि तखत तरे तें आयौ सरजा।६४।

महाराज सिवराज चढ़त तुरंग पर, ग्रीवा जात नै करि गनीम अतिबल की।
भूषन चलत सरजा की सैन छिति पर, छाती दरकति है खरी अखिल खल की।
कियो घात दौरि अमीरन उमराउ परि, गई कटि नाक सिगरेई दिल्ली-दल की।
सूरत जराय कियौ दाह पातसाह-उर स्याही जाइ सब पातसाही-मुख झलकी।६५।

६३. अखिल = सम्पूर्ण। खलभलैं = व्याकुल हो उठते हैं। खलक = संसार (ख़ल्क़, अरबी शब्द)। करखत हैं = कर्ष, उत्साह, जोश प्रकट करते हैं। अगारे = आगार, घर। दार = स्त्री तथा द्वार। बार = बालक। नैरनि = नगरों में।

६४. जसन = उत्सव (फारसी शब्द)। जलूस = जनसमूह (अरबी शब्द)। तुजक = प्रबन्ध (तुजुक, तुर्की शब्द)। इलाम = आज्ञा (फारसी शब्द)। रामसिंह = महाराज जयपुर, जयसिंह के पुत्र, ये औरंगजेब के विश्वस्त दरबारी थे। जोरा = मित्रता। तोरा = तोड़ना, शत्रुता करना। तखत = सिंहासन।

६५. गनीम = शत्रु (अरबी शब्द)। छिति = क्षिति, पृथ्वी। सूरत = ताप्ती नदी के तट पर प्रसिद्ध बन्दरगाह। यह बड़ा सम्पन्न नगर था और शिवाजी ने दो बार इसे लूटा (सन् १६६४ तथा ७०) और छिन्न-भिन्न कर दिया।

[सवैया]

पंच-हजारिन बीच खरा किया मैं उसका कुछ भेद न पाया।
भूषन यौं कहि औरँगजेब उजीरन सों बेहिसाब रिसाया।
कम्मर की न कटारी दई इस नाम ने गोसलखाना बचाया।
जोर सिवा करता अनरथ्थ भली भई हथ्थ हथ्यार न आया। ६६।

[घनाक्षरी]

बेदर कल्यान दै परेंडा ऐसे कोट साहि एदिल गँवाए हैं नवाइ निज सीस कौं।
भूषन भनत साहिनगरी कुतुब साहि, दै कर गँवाइ रामगिरि-से गिरीस कौं।
भ्वैंसिला भुवाल साहितने गढ़पाल दिन दोऊ न लगाए गढ़ लेत पँचतीस कौं।
सरजा सवाई सिवराज तैं सुहाई लोबे सौगुनी बड़ाई गढ़ दीने हैं दिलीस कौं।६७।

६६. पंचहजारी = पाँच हजार सेना के अधिकारी, मनसबदार। इसनाम = औरंगजेब का नाम, उसका प्रभाव। गोसलखाना = दरबार खास।

६७. बेदर = विदर्भनगर; हैदराबाद (दक्षिण) के ३९ कोस उत्तर-पश्चिम। कल्यान = उत्तर कोंकण (जिला थाना) का एक नगर। परेंडा = शोलापुर से उत्तर-पश्चिम एक नगर तथा दुर्ग। [उपर्युक्त तीन दुर्ग शिवाजी ने आदिलशाह से छीन लिए थे।] साहिनगरी = हैदराबाद (यही भागनगर या भागनेर है, जिसे कुतुबशाह ने अपनी पत्नी भागमती के नाम पर बसाया था)। रामगिरि = पेनगंगा और गोदावरी के बीच का रामगिरि पर्वत। इसी के पास रामगढ़ अथवा रामनेरि किला है।

[उपर्युक्त दो दुर्ग शिवाजी ने गोलकुण्डा के कुतुबशाह से ले लिए थे। ये सब किले १७ वीं शताब्दी ई० के मध्य के आस-पास जीते गये]

गढ़ लेत पँचतीस कौं = शिवाजी ने मुसलमान राजाओं से ३५ किले जीते थे। सवाई = शिवाजी की एक उपाधि।

साहितनै सरजा की कीरति सों चारों ओर चाँदनी बितान छिति-छोर छाइयतु है।
भूषन भनत ऐसो भूमिपति भ्वैसिला है जाके द्वार भिच्छुक सदा ही भाइयतु है।
महादानी सिवाजू खुमान या जहान पर, दान के बखान जाके यौं गनाइयतु है।
रजत की हौंस कियैं हेम पाइयतु जासों, हयन की हौंस कियैं हाथी पाइयतु है।६८।

अति मतवारे जहाँ दुरदै निहारे जहाँ तुरगन ही में चंचलाई-परकीति है।
भूषन कहत जहाँ पर लगैं बानन कों कोक पच्छिनहिं माहिं बिछुरन-रीति है।
गुनि-गन चोर जहाँ एक चित्त ही के, लोग बाँधे जहाँ एक सरजा की गुन-प्रीति है।
कंप कदली में बैर बृच्छ बदरी में, सिवराज अदली के राज में यौं राजनीति है।६९।

[सवैया]

देसनि देसनि नारि नरेसनि भूषन यौं सिख देति दया सौं।
मंत गहौ मन, दंत गहौ तिन, कंत तुमैं हैं अनंत महा सौं।
कोट गहौ कि गहौ बन-ओट कि फौज की जोट सजौ प्रभुता सौं।
और करौ किन कोटिक राह सलाह बिना बचिहौ न सिवा सौं।७०।
बैर कियौ सिव चाहत हो तब लौं अरि बाह्यौ कटार कठैठौ।
यौं ही मलेच्छहि छौड़ै नहीं सरजा मन तापर रोस में पैठौ।
भूषन क्यौं अफजल्ल बचै अटपाउ कै सिंह को पाउ उमैठौ।
बीछू के घाउ धुक्यौई धराकहि तापर धोप-धका धरि बैठौ।७१।

६८. बितान = चँदोवा। छिति छोर = पृथ्वी के अन्त तक। रजत = चाँदी। हौंस = इच्छा, हविस।

६९. परकीति = प्रकृति, स्वभाव। पर = पंख, शत्रु। कोक = चक्रवाक, चकवा-चकवी पक्षी, जिनके विषय में काव्य-प्रसिद्धि है कि ये रात्रि में बिछुड़ जाते हैं तथा दिन में मिल जाते हैं। गुन = गुण, डोरी। बदरी = बेर का पेड़। अदली = न्यायप्रिय।

७०. मंत = मत, परामर्श। दंत गहौ तिन = दाँतों में तृण दबाकर दैन्य प्रदर्शन करो। अनंत = असंख्य। महा सौं = बड़ी-बड़ी शपथें। जोट = समूह। राह = उपाय। सलाह = मित्रता।

७१. बाह्यो = आघात किया। कठैठौ = कठोर। अटपाउ = ऊधम, उपद्रव। धुक्यो = झुका। धराकहि = शीघ्रता से। धोप = तलवार।

[घनाक्षरी]

बिनु चतुरंग संग बानरनि लैके, बाँधि बारिधि कों लंका रघुनंदन जराई है।
पारथ अकेले द्रोन भीषम-से लाखौं भट, जीति लीन्ही नगरी बिराट कै बड़ाई है।
भूषन भ्वैसिला तें गुसुलखाने पातसाही अवरंगसाही बिनु हथ्थर हलाई है।
ताकोऊ अचंभो महाराज सिवराज सदा, बीरन के हिम्मतै हथ्यार होत आई है।७२।

मानसरबासी हंस बंस न समान होत, चंदन सों घस्यौ घनसारै न घरीक है।
नारद की सारद की हाँसी न समान होत, सरद की सुरसरी को न पुंडरीक है।
भूषन भनत छक्यौ छीरधि में थाह लेत, फेन सों लपेट्यौ ऐरावत को करी कहै।
कैलास में ईस ईस-सीस रजनीस वहो सिवा अवनीस के न जस को सरीक है।७३।

लोमस की ऐसी आउ होइ कौनहू उपाउ, तापर कवच जौ करनवारो धरियै।
ता पर जौ हूजियै सहसबाहु ता पर सहस-गुन साहस जौ भीमहु तें करियै।
भूषन कहै यौं अवरंगजू सों उमराउ, नाहक कहौ तौ जाय दच्छिन में मरियै।
चलै न कछू इलाज न जियत वे ही काज ऐसी होइ साज तौ सिवा सों जाय लरियै।७४।

[सवैया]

ब्रह्म के आनन तें निकसे तें अत्यन्त पुनीत तिहूँ पुर मानी।
राम जुधिष्ठिर के बरने बलमीकिहु ब्यास के संग सुहानी।

७२. चतुरग = चतुरंगिणी सेना जिसमें पैदल, घोड़े, हाथी तथा रथ होते हैं। नगरी बिराट = बिराट नगर, मत्स्यदेश, जयपुर के निकट का नगर, जहाँ पाण्डवों ने अज्ञातवास किया था और कौरवों के चढ़ाई करने पर उन्हें पराजित किया था। हथ्थर = हथियार।

७३. बंस = समूह। घनसार = कपूर। पुंडरीक = श्वेत कमल। करी = हाथी। ईस = शंकर। सरीक = शरीक, साझीदार।

७४. लोमस = एक ऋषि जो अमर माने जाते हैं। करनवारो = कर्ण वाला। सहसबाहु = सहस्रबाहु, महिष्मती का राजा, इसने परशुराम के पिता को मारा था।

७५. तिहूँ पुर = तीनों लोक; पृथ्वी, आकाश, पाताल। विक्रम, भोज = भारत के वीर, दानी, यशस्वी राजे। बरम्हाय = आशीर्वाद देकर।

बिक्रम भोजहु के गुन गाय कै भूषन पावनता जग जानी।
पुन्य पवित्र सिवा सरजै बरम्हाय पवित्र भई बर बानी।७५।

[घनाक्षरी]

दौलत दिल्ली की पाइ कहाइ आलमगीर, बब्बर अकब्बर के बिरुद बिसारे तैं।
भूषन भनत लरि लरि सरजा सों जंग, निपट अभंग गढ़कोट सब हारे तैं।
सुधरयौ न एकौ काज भेजि भेजि बेहो काज, बड़े-बड़े बेइलाज उमराउ मारे तैं।
मेरे कहे मेल कर सिवाजी सों बैर करि गैर करि नैर निज नाहक उजारे तैं।७६।

इंद्र निज हेरत फिरत गज-इंद्र अरु इंद्र को अनुज हेरै दुगध-नदीस कों।
भूषन भनत सुरसरिता कों हंस हेरैं, बिधि हेरैं हंस कों चकोर रजनीस कों।
साहितनै सरजा यौं करनी करी है तैं वै, होतु है अचंभो देव कोटियौ तैंतीस कों।
पावत न हेरैं तेरे जस में हिराने निज गिरि कों गिरीस हेरैं गिरिजा गिरीस कों।७७।

[छप्पय]

कौन करै बस बसुहि, कौन यहि लोक बड़ो अति।
को साहस को सिंधु, कौन रज-लाज धरे मति।
को चकवा को सुखद, बसै को सकल सुमन महि।
अट्ठ सिद्धि नव निद्धि देत, माँगें को सो कहि।
जग बूझत उत्तर देत इमि, कबि भूषन कबि-कुल-सचिव।
'दच्छिन नरेस सरजा सुभट साहिनंद मकरंद सिव'।७८।

७६. आलमगीर = संसार के स्वामी। बब्बर = बाबर। अभंग = सुदृढ़। बेइलाज = विवश। गैर करि = पराया बनाकर। नैर = नगर।

७७. गज-इन्द्र = गजेन्द्र ऐरावत, श्वेत हाथी। इन्द्र को अनुज = उपेन्द्र, विष्णु। दुगध-नदीस = क्षीरसागर। गिरि = कैलास।

७८. वसु = दक्ष की कन्या, धर्म की पत्नी; सम्पत्ति, धन, वसुन्धरा, पृथ्वी। रज-लाज = राजपूती मर्यादा। चकवा = चक्रवर्ती, चक्रवाक पक्षी। सुमन = पुष्प, श्रेष्ठ पुरुषों के मन। माँगे = याचक।

[सवैया]

औरँग जौ चढ़ि दक्खिन आवै तौ वोऊ सिधारै यौं ह्वै बिनु कप्पर।
दीनौ मुहीम को भार बहादुर छावो गहै क्यौं गयंद को टप्पर।
सायस्त खाँ से गए हटि हारि जे साहिब सात पिढ़ी के भुवप्पर।
ये अब सूबा ह्वै आवैं सिवा पर कालि को जोगी कलींदे को खप्पर। ७९।

[घनाक्षरी]

साहितनै तेरे बैर बैरिन कों कौतिग सो बूझत किरात कहौ काहे रहे तचि हौ।
सरजा के डर हम आए इत भाजि, तौब सिंघ सों डराइ याहू ठौर ते उकचिहौ।
भूषन भनत वै कहैं कि हम सिव कहैं, तुम चतुराई सों करत बात रचि हौ।
सिव जौ पै सत्रु तौ निपट कठिनाई, तुम बैर त्रिपुरारि के तिलोक में न बचिहौ।८०।

अजौं भूतनाथ मुंडहार लेत हरषत, भूतन अहार लेत अजहूँ उछाह है।
भूषन भनत अजौं काटे करवारन के, कारे कुंजरनि करी कठिन कराह है।
सिंघ सिवराज सलहेर के समीप ऐसो, कीन्हौ कतलान दिल्लीदल को सिपाह है।
नदी रन-मण्डल रुहेल-रुहिरन अजौं, भेदत मलेच्छ रबि-मण्डल की राह है।८१।

७९. कप्पर = कपड़ा। मुहीम = चढ़ाई। बहादुर = बहादुर खाँ, दक्षिण का सूबेदार—१६७२–७७ ई० तक इस पद पर रहा, शिवाजी द्वारा पराजित हुआ। छावो = छौना, शावक। टप्पर = हौदा आदि भार। भुवप्पर = पृथ्वी पर। कलींदा = तरबूज़।

८०. कौतिग = कौतुक, विनोद। तचि = संतप्त, व्याकुल। उकचिहौ = उठ भागोगे। त्रिपुरारि = शंकर; तारकासुर के तीन पुत्रों ने मय दानव से अपने लिए तीन नगर बनवाए थे। एक सोने का स्वर्ग में, दूसरा चाँदी का अंतरिक्ष में और तीसरा लोहे का पृथ्वी पर। उक्त तीनों दानवों के अत्याचार के कारण शिवजी ने इन नगरों को भस्म कर दिया और राक्षसों को भी मार डाला।

८१. करवारन = तलवारों। कतलान = कत्ल आम। रुहेल = रुहेले, रुहेल-खण्ड के निवासी पठान। रुहिर = रुधिर।

जाहु मति आगें खता खाहु मति यारो, गढ़नाह के डरन कहैं खान यौं बखान कै।
भूषन खुमान यहै सो है जिरफा से डील, लाखन में सायस्त खाँ डार्यो बिन मान कै।
हिंदुआन द्रोपदी की ईजति बचैबे बोलि, बैराटनगर तें बाहिर गूढ़ ज्ञान कै।
वहै है सिवाजी जिहि भीम लौं अकेलें मार्यौ, अफजल-कीचक सों कीच घमसान कै।८२।

साहितनै सिवराज ऐसे देत गजराज, जिन्हैं पाय होत कबिराज बेफिकिरि हैं।
झूमत झुलमुलात झूलैं जरबाफन की, जकरे जँजीरैं जोर करत जि किरि हैं।
भूषन भँवर भननात घननात घंट, पगन सघन घनाघन रहे घिरि हैं।
जिनकी गराज सुनि दिग्गज बे-आब होत, मद ही के आब गरकाब होत गिरि हैं।८३।

सिवा की बड़ाई औ हमारी लघुताई क्यों कहत पातसाह गरें बूझिबे कौं गरजा।
सुनियै खुमान हरि तिनको गुमान तिन्हैं दीबे कौं जवाब कबि भूषन यौं अरजा।
तुम वाको पाइकै जसूसऊ न छोरौ वह रावरे वजीर छोरि देत करि परजा।
मालुम तिहारो होत याही में निवारौ रन कायर सो कायर औ सरजा सो सरजा।८४।

आजु इहि समै महाराज सिवराज तुही, जगदेव जनक जजाति अंबरीक सो।
भूषन भनत तेरे दान-जल-जलधि में, गुनिन को दारिद गयौ बहि खरीक सो।

८२. खता = धोखा। गढ़नाह = दुर्गपति (शिवाजी)। जिरफा = जिराफ; बहुत ऊँचा प्राणी। गूढ़ज्ञान = कूटनीति। अफजल = बीजापुर का सरदार। कीचक = राजा विराट् का साला, इसे भीम ने मारा (महाभारत; विराट् पर्व)।

८३. जरबाफ = सोने का काम किया हुआ रेशमी कपड़ा। जि किरि = जो कड़-कड़ शब्द करती हैं। घनाघन = बरसनेवाला बादल, मस्त हाथी। गरकाब = पानी में डूबना।

८४. गरें = गले से। जसूसऊ = जासूस भी। छोरौ = छोड़ो। निवारो = छुटकारा।

८५. जगदेव = इस संसार का देवता। जजाति = ययाति। अंबरीक = अंबरीष, प्रसिद्ध भक्त राजा। खरीक = तिनका। चंदकर = चन्द्र की किरणें।

चंदकर किंजलक चाँदनी पराग, उड़-बृंद मकरंद-बुंद-पुंज के सरीक सो।
कंद सम कयलास नाक-गंग नाल, तेरे जस-पुंडरीक को अकास चंचरीक सो ।८५।

[अमृतध्वनि]

दिल्लिय दलनि गजाइ कै, सिव सरजा निरसंक।
लूटि लियौ सूरति सहर, बंकक्करि अति डंक।
बंकक्करि अति डंकक्करि अस संकक्करि खल।
सोचच्चकित भरोचच्चलिअ बिमोचच्चख जल।
तट्ठइ मन कट्ठट्ठिक सो रट्ठट्ठिल्लिय।
सद्दिद्दिसि दिसि मद्दइबि भइ रद्दद्दिल्लिय। ८६।

[छप्पय]

क्रुद्ध फुरत अति जुद्ध जुरत नहिं, रुद्ध मुरत भट।
खग्ग बजत अरि बग्ग तजत तनु सग्ग सजत ठट।
झुक्कि झिरत मद धुक्कि भिरत कटि कुक्कि गिरत कनि।
रंग रकत हर संग छकत चतुरंग थकत भनि।
इमि ठानि घोर घमसान घन, भूपन सुजस कियौ अटल।
सिवराज साहिसुअ खग्ग-बल, दलि अडोल-बहलोल-दल ।८७।

किजलक = किंजल्क, पराग। उड़-बृंद = नक्षत्र-समूह। सरीक = संयुक्त। कंद = मूल। नाकगंग = आकाश गंगा। पुण्डरीक = श्वेत कमल। चंचरीक = भ्रमर।

८६. गजाइकै = गंजन करके। बंकक्करि = बाँकपन के साथ। डंक = डंका बजाकर। संकक्करि = शंकित करके। भरोच = नगर का नाम। बिमोचच्चख जल = नेत्रों से आँसू गिराते हुए। तट्ठइ = ऐसा ठानकर। कट्ठट्ठिक = कष्टपूर्वक ठीक करके। रट्ठट्ठिल्लिय = बार-बार रटते हुए ठेल दिया, सेनाओं को परास्त किया। सद्दिद्दिसि = सद्यः दिशि। दिशि = तुरन्त सब दिशाओं में। मद्दइबि = मद से दबकर। रद्द = विनष्ट।

८७. फुरत = उत्साहित होते हैं। रुद्ध = अवरुद्ध करने पर। बग्ग = वर्ग, समूह। सग्ग = स्वर्ग। झुक्कि = क्रुद्ध होकर। धुक्कि = झुककर। कनि = कण-कण

[घनाक्षरी]

तुरुमुती तहखाने तीतर तोसहखाने, सूकर सिलहखाने कूकत करीस हैं।
हरिन हरमखाने सिंघ हैं सुतुरखाने, पीलखाने पाठी हैं करँजखाने कीस हैं।
भूषन सिवाजी गाजी खग्ग सों खपाए खल, खाने खाने खलनके खेरे भए खीस हैं।
खड्गी खजाने खरगोस खिलवतखाने, खीसैं खोले खसखाने खूँसत खबीस हैं।८८।

आए दरबार बिललाने छरीदार देखि, जापता करनहारे नेकहू न मन के।
भूषन भनत भौंसिला के आय आगे ठाढ़े बाजे भए उमराय तुजुक करन के।
साहि रह्यौ जकि सिव साहि रह्यौ तकि और चाहि रह्यौ चकि बने ब्यौंत अनबन के।
ग्रीषमके भानु सो खुमान को प्रताप देखि तारे सम तारे गए मूँदि तुरकन के।८९।

होकर चतुरंग = चतुरंगिणी सेना (हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल)। बहलोल = बहलोल खाँ, बीजापुरी अफगान सरदार।

८८. तुरुमुती = तुरमता, एक शिकारी पक्षी। तोसहखाने = तोशकखाना, वस्त्र रखने का कमरा। सिलहखाना = शस्त्र रखने का स्थान। करीस = बड़े-बड़े हाथी। हरमखाना = अन्तःपुर। सुतुरखाना = शुतुरखाना, ऊँटों का बाड़ा। पीलखाना = हाथियों का स्थान। पाठी = पाठा, एक प्रकार का हरिण। करंज-खाना = मुर्गों का स्थान। खाने खाने = स्थान-स्थान पर। खेरे = गाँव। खड्गी = गैंडे। खिलवतखाना = मंत्रणागृह। खसखाना = उशीरगृह, खस की टट्टी लगा ठण्डा कमरा। खबीस = हिंस्र पशु।

८९. छरीदार = छड़ी लेकर खड़े होनेवाले, द्वारपाल। जापता करनहार = जाप्ते की कार्रवाई करनेवाले, नियम आदि बतलानेवाले। मनके = मिनकै, चूँ किया। तुजुक = सम्मान। जकि = चकित। तारे = नेत्र की पुतलियाँ।

[सवैया]

एक कहैं कलपद्रुम है इमि पूरत है सबकी चित-चाहै।
एक कहैं अवतार मनोज को यौं तन में अति सुन्दरता है।
भूषन एक कहैं महि-इन्दु यौं राज बिराजत बाढ़्यौ महा है।
एक कहैं नर-सिंह है संगर एक कहैं नरसिंह सिवा है।९०।

[घनाक्षरी]

दान-समै द्विज देखि मेरहू कुबेरहू की संपति लुटायबे को हियो ललकत है।
साहि के सपूत सिव साहि के बदन पर सिव की कथान में सनेह झलकत है।
भूषन जहान हिंदुवान के उबारिबे कौं तुरकान मारिबे कौं बीर बलकत है।
साहिन सों लरिबे की चरचा चलत आनि सरजा के दृगन उछाह छलकत है।९१।

[छप्पय]

मुण्ड कटत कहुँ रुण्ड नटत कहुँ सुण्ड पटत घन।
गिद्ध लसत कहुँ सिद्ध हँसत सुखबृद्धि रसत मन।
भूत फिरत करि बूत भिरत सुरदूत घिरत तहँ।
चंडि नचत गन मंडि रचत धुनि डुण्डि मचत जहँ।
इमि ठानि घोर घमसान अति भूषन तेज कियौ अटल।
सिवराज साहिसुव खग्ग-बल दलि अडोल बहलोल-दल।९२।

९०. कल्पद्रुम = इन्द्र के नन्दन कानन का कल्पवृक्ष, इच्छित फल देनेवाला। नरसिंह = मनुष्यों में सिंह के समान। नृसिंह अवतार।

९१. मेरहू = सुमेरु पर्वत की भी (यह पर्वत स्वर्ण का कहा जाता है)। कुबेर = धन के देवता, उत्तर दिशा में अलकापुरी के स्वामी। बलकत है = ओजपूर्ण वाणी में बोलना।

९२. नटत = नाचते हैं। सिद्ध = शवसाधना करनेवाले तांत्रिक। रसत = रसपूर्ण होते हैं। बूत = बल। डुंडि = द्वन्द्व, झगड़ा। अडोल = निश्चल।

[घनाक्षरी]

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर, दावा नागजूह पर सिंह-सिरताज को।
दावा पुरहूत को पहारन के कुल पर, दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को।
भूषन अखंड नवखंड-महि-मंडल में, तम पर दावा रबि-किरन-समाज को।
पूरब पछाँह देस दच्छिन तें उत्तर लौं, जहाँ पातशाही तहाँ दावा सिवराज को।९३।

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि, सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद-बिहद नगारन के, नदी-नद मद गैबरन के रलत है।
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल-गैल, गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यों हलत है।९४।

प्रेतिनी-पिसाचरु निसाचर-निसाचरिहू, मिलि-मिलि आपुस में गावत बधाई है।
भैरो भूत-प्रेत भूरि भूधर-भयंकर-से, जुत्थ-जुत्थ जोगिनी जमाति जोरि आई है।
किलकि-किलकि कै कुतूहल करति काली, डिम-डिम डमरू दिगंबर बजाई है।
सिवा पूछैं सिव सों समाज आजु कहाँ चली, काहू पै सिवा-नरेस भृकुटी चढ़ाई है।९५।

दावा पातसाहन सों कीन्हों सिवराज बीर, जेर कीन्हों देस हद्द बाँधी दरबारे से।
हठी मरहठी तामें राख्यो न मवास कोऊ, छीने हथियार डोलैं बन बनजारे से।
आमिष-अहारी माँसहारी दै-दै तारी नाचैं, खाँड़े तोड़े किरचैं उड़ाए सब तारे-से।
पील-सम डीलवारे गिरि से गिरन लागे, मुण्ड मतवारे गिरैं झुण्ड मतवारे से।९६।

९३. नाग = सर्प। नागजूह = हाथियों का समूह। पुरहूत = इन्द्र। नवखंड = पृथ्वी के नौ प्रमुख भाग जो पौराणिक भूगोल के अनुसार किए गए हैं।

९४. गैबरन = गयन्दवर, श्रेष्ठ हाथी। रलत है = बहता है। ऐल = सेना की भीड़। उसलत है = उखड़ पड़ते हैं। तरनि = सूर्य। पारावार = सागर।

९५. पिशाच = कच्चा मांस खानेवाले। भूधर = पर्वत। कुतूहल = क्रीड़ा। दिगम्बर = शिवजी।

९६. दावा = बराबरी का अधिकार। जेर = परास्त। मवास = किला। आमिष = मांस। खाँड़े = चौड़ी तलवारें। किरचें = पतले फल की तलवारें।

छूटत कमान बान बंदूकरु कोकबान, मुसकिल होत मुरचानहू की ओट में।
ताहि समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो, दावा बाँधि द्वेषिन पै बीरन लै जोट में।
भूषन भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं, किम्मति इहाँ लगि है जाकी भट-झोट में।
ताव दै-दै मूँछन कगूँरन पै पाँव दै-दै, घाव दै-दै अरि-मुख कूदे परैं कोट में।९७।

जीत्यो सिवराज सलहेरि को समर सुनि, नर काह सुरन के सीने धरकत हैं।
देवलोकहू में अजौं मुगल पठानन के, सरजा के सूरन के खग्ग खरकत हैं।
भूषन भनत भारी भूतन के भौनन में, टाँगी चंदावतन की लोथैं लरकत हैं।
कोऊ ना लपेटे अधफारे रन लेटे अजौं, रुधिर लपेटे पठनेटे फरकत हैं।९८।

जिन फन फुतकार उड़त पहार भारे, कूरम कठिन जनु कमल बिदलि गो।
विषजाल ज्वालामुखी लत्लीन होत जिन, झारन चिकारि मद दिग्गज उगलि गो।
कीन्हो जेहि पान पयपान सो जहान कुल, कोलहू उछलि जल-सिंधु खलभलि गो।
खग्ग-खगराज महाराज सिवराज जू को, अखिल-भुजंग-मुगलहल निगल गो।९९।

बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे, राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की, काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।

९७. कमान = तोप। कोकबान = कुहुक बाण, चलने में शब्द करनेवाला बाण। मुरचा = आड़, ओट, जैसी युद्ध के समय बालू के बोरों आदि से बना लेते हैं। हल्ला कियो = हमला बोला। जोट = संगठन। झोट = समूह। कँगूरा = दुर्ग के बुर्ज।

९८. काह = क्या हैं। खरकत हैं = खटकते हैं, झनकारते हैं। चन्दावत = राजपूतों की एक शाखा; अमरसिंह चन्दावत सलहेरि के युद्ध में मारा गया था। लरकत हैं = हिलती हैं। पठनेटे = पठान युवक।

९९. कूरम = कूर्मावतार, कछुआ। बिदलि गो = विदीर्ण हो गया, छिन्न-भिन्न हो गया। दिग्गज = आठ दिशाओं से पृथ्वी को अपने मस्तकों पर धारण किए हुए हाथी। कोल = शूकर, वाराह अवतार।

१००. विदित = विख्यात। सुघर = चतुर। हद्द = सीमा, मर्यादा। देवल = देवालय, मन्दिर। स्वधर्म = अपना धर्म, हिन्दुत्व।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह, बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेग-बल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।१००।

चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठै बार-बार दिल्ली दहसति चितै चाह खरकति है।
बलख बिलात, बिलखात बीजापूरपति, भिरत फिरंगिन की नारी फरकति है।
थर-थर काँपत कुतुबसाही गोलकुंडा, हहरि हबस-भूप भीर भरकति है।
सिंह सिवराज तेरे धौंसा की धुकार सुनि, केते पातसाहन की छाती धरकति है।१०१।

बद्दल न होहिं दल-दच्छिन उमंडि आयो, घटा ये न होय इभ सिवाजी हँकारी के।
दामिनी-दमंक नाहिं खुले खग्ग बीरन के, इंद्रधनु नाहिं ये निसान हैं सवारी के।
देखि-देखि मुगलों की हरमैं भवन त्यागैं, उझकि-उझकि उठैं बहत बयारी के।
दिल्लीपति भूल मति गाजत न घोर घन, बाजत नगारे ये सितारे-गढ़धारी के।१०२।

उतरि पलँग तें न दियो है धरा पै पग, तेऊ सगबग निसि-दिन चली जाती हैं।
अति अकुलातीं मुरझातीं न छिपातीं गात, बात न सोहाती बोले अति अनखाती हैं।
भूषन भनत सिंह साहि के सपूत सिवा तेरी धाक सुने अरि-नारी बिलखाती हैं।
जोन्ह में न जातीं ते वै धूपै चली जातीं, पुनि तीन बेर खातीं ते वै तीन बेर खाती हैं।१०३।

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।
कंद-मूल भोग करैं कंद-मूल भोग करैं, तीन बेर खातीं ते वै तीन बेर खाती हैं।

१०१. चकत्ता = चगताई वंश का औरंगजेब। दहसति = दहशत, भय। चाह = खबर। बलख = अफगानिस्तान के उत्तर का एक नगर। बीजापूरपति= आदिलशाह। हबस = अबीसीनिया। धौंसा = बड़ा नगाड़ा।

१०२. इभ = हाथी। निसान = रंगीन पताकाओं से युक्त बरछियाँ। हरमैं = बेगमें। उझकि = चौंक। सितारा = महाराष्ट्र प्रदेश का प्रमुख जिला तथा नगर; शिवाजी का प्रधान दुर्ग।

१०३. सगबग = सकपकाती हुई, भयभीत। अनखाती = चिढ़ जाती, झुंझलाती। जोन्ह = चाँदनी। बेर = बार तथा बेर-फल।

१०४. घोर = बहुत बड़े, भयंकर। मन्दर = मन्दिर, भवन तथा पर्वत। कन्द = मिश्री, जड़ें आदि। मूल = तत्व, पौष्टिक पदार्थ, जड़ें। भूषन = आभू-

भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग, बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलाती हैं।
भूषन भनत सिवराज बीर तेरे त्रास, नगन जड़ातीं ते वै नगन जड़ाती हैं।१०४।
मालवा उजैन भनि भूषन भेलास ऐन, सहर सिरौंज लौं परावने परत हैं।
गोड़वानो तिलगानो फिरगानो करनाट, रुहिलानो रुहिलन हिये हहरत हैं।
साहि के सपूत सिवराज तेरी धाक सुनि, गढ़पति बीर तेऊ धीर न धरत हैं।
बीजापुर गोलकुंडा आगरे दिली के कोट, बाजे-बाजे रोज दरवाजे उघरत हैं।१०५।
फिरंगाने फिकिरि औ हदसनि हबसाने, भूषन भनत कोऊ सोवत न धरी है।
बीजापुर-बिपति बिडरि सुनि भाजे सब, दिल्ली-दरगाह बीच परी खरभरी है।
राजन के राज सब साहिन के सिरताज, आज सिवराज पातसाही चित धरी है।
कासमीर बलख बुखारे लौं परी पुकार, धाम-धाम धूम-धाम रूम साम परी है
।१०६।
अफजलखानजू को मारो मयदान जामै, बीजापुर गोलकुंडा डरायो दराज है।
भूषन भनत फराँसीस अँगरेज मारि, हबसी फिरंगी मारे उलटि जहाज है।
देखत में रुस्तम को छिन में खराब कियो, सलहेर-संगर की आवति अवाज है।
चौंकि-चौंकि चकता कहत चहुँधा तें यारो, लेत रहौ खबरि कहाँ लौं सिवराज है
।१०७।

पण, भूख से। बिजन = पंखा, निर्जन स्थान। नगन = रत्नों से, नग्न। जड़ाती = जड़ी रहती थीं, जाड़ा खाती हैं।

१०५. भेलास = भीलसा स्थान (ग्वालियर राज्य में है)। सिरौंज = बुन्देलखण्ड का एक स्थान। परावने = भगदड़। गोंडवाना = नागपुर के आसपास का प्रदेश। तिलगानो = तेलंगाना प्रदेश। करनाट = कर्णाटक प्रदेश। रुहिलानो = रुहेलखण्ड। कोट = दुर्ग। बाजे-बाजे = किसी-किसी। उघरत = खुलते।

१०६. फिरंगाने=विदेशियों के प्रदेश। हदसनि=हादसा, आतंक। दरगाह= धर्मकेन्द्र। धाम = घर। रूम=तुर्की का एक नाम। साम=सीरिया [अरब के-उत्तर का देश]

१०७. मयदान=मैदान, रणक्षेत्र। दराज=अधिक, सुदीर्घ। रुस्तम=रुस्तमेजमाँ, इसे शिवाजी ने सन् १६५९ में पन्हाला जीतने के बाद हराया था। संगर = युद्ध।

दारा की न दौरि यह खजुए की रारि नाहिं, बाँधिबो न होय या मुरादसाह-बाल को।
मठ बिस्वनाथ को न बास ग्राम गोकुल को, देवी को न देहरा न मंदिर गोपाल को।
गाढ़े गढ़ लीन्हे केते बैरी कतलान कीन्हे, जानत न भयो यहि साह-कुल-साल को।
बूड़ति है दिल्ली सो सँभारै क्यों न दिल्लीपति धक्का आनि लाग्यो सिवराज महा-
काल को।१०८।

जोर करि जैहैं अब अपर-नरेस पर, लरिहैं लराई ताके सुभट-समाज पै।
भूषन भनत रूम बलख-बुखारे जैहैं, जैहैं साम चीन तरि जलधि जहाज पै।
सब उमराव मिलि एकमत ठानि कहैं, आइकै समीप अवरंग सिरताज पै।
भीख माँगि खैहैं बिन मनसब रैहैं, पै न जैहैं हजरत महाबली सिवराज पै।१०९।

केतकी भो राना और बेला सब राजा भए, ठौर-ठौर रस लेत नित यह काज है।
सिगरे अमीर भए कुंद मकरंद-भरे, भृंग सो भ्रमत लखि फूल की समाज है।
भूषन भनत सिवराज [illegible] की राखी है बटोरि एक दच्छिन में लाज है।
तजत मलिंद जैसे तैसे ताज दूर भाग्यो अलि अवरंगजेब चंपा सिवराज है
।११०।

सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग ताहि खरो कियो छ-हजारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसीले गुसा धारि मन, कीन्हो ना सलाम न बचन बोले सियरे।

१०८. दारा=औरंगजेब का भाई (कोड़ा जहानाबाद में इससे औरंगजेब ने युद्ध किया था १६५८ ई०)। दौरि=दौड़, आक्रमण। खजुआ=फ़तेहपुर जिले का एक क़स्बा, यहाँ औरंगजेब अपने भाई शाहशुजा से लड़ा था (१६५९ ई०)। मुरादशाह बाल = बालक मुराद, औरंगजेब का भाई; इसे उसने बन्दी बनाया था (१६६१)।

१०९. अपर=अन्य। तरि=पार करके।

११०. मलिंद = भौंरा। चंपा=पुष्प विशेष; कहते हैं कि भौंरा इस पुष्प पर कभी नहीं बैठता।

१११. खरो कियो = खड़ा किया। छ-हजारिन=छै हजार सैनिकों के मनसब-

भूषन भनत महाबीर बलकन लाग्यौ सारी पातसाही के उड़ाय गए जियरे।
तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भए स्याहमुख नौरँग सिपाह-मुख पियरे
।१११।

भूप सिवराज कोप करि रन-मंडल में खग्ग गहि कूद्यौ चकता के दरबारे में।
काटे भट बिकटरु गजन के सुंड काटे पाटे डर भूमि काटे दुवन सितारे में।
भूषन भनत चैन उपजै सिवा के चित्त चौसठ नचाई जबै रेवा के किनारे में।
आँतन की ताँत बाजी खाल की मृदंग बाजी खोपरी की ताल पसुपाल के
अखारे में ।११२।

सतयुग द्वापर औ त्रेता कलियुग मधि, आदि भयो नाहिं भूप तिन हुते ए घरी।
बब्बर अकब्बर हिमायूँसाह सासन सों, नेह तें सुधारी हेम-हीरन तें सगरी।
भूषन भनत सबै मुगलान चौथ दीन्ही, दौरि दौरि पौरि पौरि लूट लीं चहूँ फरी।
धूरि तन लाइ बैठी सूरत है रैन-दिन, सूरत कों म[illegible]सूरत सिवा करी ।११३।

कोकनद नैनन तें कज्जल-कलित छूटे आँसुन की धार तें कलिंदी सरसाति है।
मोतिन की लरैं गरैं छूटि परैं गंग-छबि, सेंदुर सुरंग सरसुती दरसाति है।
भूषन भनत महाराज सिवराज बीर, रावरे सुजस ये उकति ठहराति है।
जहाँ-जहाँ भागति हैं बैरि-बधू तेरे त्रास, तहाँ तहाँ मग में त्रिबेनी होति जाति
हैं ।११४।

दार। नियरे=निकट। गैरमिसिल=अनुचित। सियरे=शीतल, शिष्ट। बलकन लाग्यो=गरजने लगा। जियरे=प्राण। तमक=क्रोधावेश।

११२. दुवन=शत्रु। चौंसठ=चौंसठ योगिनियाँ। रेवा=नर्मदा नदी। तांत=तंत्री, एकतारा जैसा बाजा। पसुपाल=शंकर जी।

११३. आदि=आरम्भ से। तिन=वे। ए घरी=इस घड़ी तक। सगरी=सम्पूर्ण। चौथ=मराठों द्वारा लगाया गया कर। पौरि=द्वार, घर का सूचक। फरी=फड़, विस्तृत भूमि खण्ड। धूरि तन लाइ=शरीर में धूल लगा कर।

११४. कोकनद=लाल कमल। कलित=सुशोभित। कलिंदी=यमुना। उकति=उक्ति, कथन। त्रास=भय।

डाढ़ी के रखैयन की डाढ़ी सी रहत छाती, बाढ़ी मरजाद जैसी हद्द हिंदुवाने की।
कढ़ि गई रैयत के मन की कसक सब, मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की।
भूषन भनत दिल्लीपति-दिल धकधका, सुनि सुनि धाक सिवराज मरदाने की।
मोटी भई चंडी बिन चोटी के चबाय सीस, खोटी भई संपति चकत्ता के घराने की।११५।

[सवैया]

केतिक देस दले दल के बल दच्छिन चंगुल चाँपिकै चाख्यो।
रूप गुमान हर्‌यो गुजरात को सूरत को रस चूसिकै राख्यो।
पंजन पेलि मलिच्छ मले सब सोई बच्यो जेहि दीन ह्वै भाख्यो।
सो रँग है सिवराज बली जिन नौरँग में रँग एक न राख्यो।११६।

[घनाक्षरी]

रैयाराव चंपति को चढ़ो छत्रसाल सिंह, भूषन भनत गजराज जोम जमके।
भादौं की घटा-सी उड़ि गरद गगन घिरे, सेलैं समसेरैं फिरे दामिन-सी दमके।
खान उमरावन के आन राजा रावन के सुनि सुनि उर लागैं घन कैसे धमके।
बैयर बगारन की अरि के अगारन की लाँघती पगारन नगारन के धमके।११७।

चाकचक-चमू के अचाकचक चहूँ ओर चाक-सी फिरति धाक चंपति के लाल की।
भूषन भनत पातसाही मारि जेर कीन्ही, काहू उमराव ना करेरी करवाल की।

११५. डाढ़ी=दग्ध, जली हुई। रैयत = प्रजा। ठसक=अभिमान।

११६. केतिक=कितने ही। चंगुल=पंजे में। चाँपि कै=पकड़ कर। पेलि = पराभूत करके। नौरंग=औरंगजेब।

११७. रैयाराव=रावराजा। चंपति=चंपतराय बुंदेला, छत्रसाल के पिता। जोम=उत्साह। सेलैं=बर्छियाँ। घन=हथौड़ा। बैयर = बधूवर, स्त्रियाँ। अगार= आगार, घर। पगार=प्राकार, चहारदीवारी।

११८. चाकचक=सर्वाङ्ग सम्पूर्ण। चमू=सेना। अचाकचक=अचानक चकित करती हुई। जेर=परास्त। करेरी=कठोर। बिरुदैत=यशस्वी। थप्पन उथप्पन =

सुनि सुनि रीति बिरुदैत के बड़प्पन की थप्पन उथप्पन की बानि छत्रसाल की।
जंग-जीतिलेवा तेऊ ह्वैकै दामदेवा भूप, सेवा लागे करन महेवा महिपाल की।११८।
अत्र गहि छत्रसाल खिइयो खेत बेतव के उत तें पठानन हूँ कीन्ही झुकि झपटैं।
हिम्मति बड़ी कैं कबड़ी के खेलवारन लौं देत सै हजारन हजार बार चपटैं।
भूषन भनत काली हुलसी असीसन कौं सीसन कौं ईस की जमाति जोर जपटैं।
समद लौं समद की सेना त्यों बुँदेलन की सेलैं समसेरैं भईं बाड़व की लपटैं।११९।
भुज-भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी-सी खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति, मीन पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज, भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परे परछीने बीर तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।१२०।
राजत अखंड तेज, छाजत सुजस बड़ो, गाजत गयंद दिग्गजन हिय साल को।
जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत,ताप तजि दुजन, करत बहु ख्याल को।
साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीन्हें, भूषन भनत ऐसो दीन-प्रतिपाल को।
आन रावराजा एक मन में न लाऊँ अब, साहू को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को।१२१।

स्थापित करना तथा उखाड़ देना (मित्रों तथा शत्रुओं को)। दामदेवा=कर देने वाले। महेवा=छत्रसाल का निवासस्थान।

११९. अत्र=अस्त्र। झुकि=क्रोधित होकर। कबड़ी=कबड्डी। सै हजारन=सैकड़ों हजारों व्यक्तियों को। ईस की जमाति=भूत प्रेत। जपटैं=झपटते हैं। समद=समुद्र। समद=अब्दुस्समद, दिल्ली का सरदार; १६९० ई० के लगभग बेतवा के युद्ध में छत्रसाल द्वारा परास्त हुआ। बाड़व=बड़वानल।

१२०. भुजगेस=सर्पराज। बैसंगिनी=वयस्+संगिनी=समान आयु वाली, साथ रहने वाली, सखी। दीह=दीर्घ। बखतर=कवच। पाखर=लोहेकी जाली जो वस्त्रों के ऊपर पहनते थे। परछीने=पर-कटे। परछीने=शत्रु, जो क्षीण हो गए हैं। बर छीने हैं=बल छीन लिया है।

१२१. छाजत=शोभित है। साल=चुभना, पीड़ा पहुँचाना। आफताब=सूर्य। तुरी=घोड़ा।

[सवैया]

बालपने में तहव्वरखान कों सेन-समेत अँचै गयो भाई ।
ज्वानी में रुंडी और खुंडी हने ए समद अँचै कछु थाह न पाई ।
बैस बुढ़ापे की भूख बढ़ी गयो बंगस बंस-समेत चबाई ।
खाए मलिच्छन के छोकरा पै तऊ डोकरा कों डकार न आई ।१२२।

निकसत म्यान तें मयूखैं प्रलै-भानु कैसी फारैं तम-तोम से गयंदन के जाल कों ।
लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिन सी रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन की माल कों ।
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली कहाँ लौं बखान करों तेरी करवाल कों ।
प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल कों ।१२३।

चले चंदबान घनबान औ कुहूकबान, चली हैं कमानैं धूम आसमान छ्वै रह्यो ।
चलीं जमदाढ़ैं, बाढ़वारैं तलवारैं जहाँ, लोह-आँच जेठ को तरनि मानों क्वै रह्यो ।
ऐसे समै फौजैं बिचलाइ छत्रसाल सिंह अरि के चलाए पायँ बीररस ब्वै रह्यो ।
हय चले हाथी चले संग छोड़ी साथी चले, ऐसी चलाचली में अचल हाड़ा ह्वै रह्यो ।१२४।

१२२. तहव्वर खाँ = औरंगजेब का सेनापति । सं० १७३७ में छत्रसाल ने इसे हराया । उस समय उनकी आयु प्रायः ३० वर्ष थी । अँचै गयो = पी गया । रुंडी-खुंडी = ये छत्रसाल के प्रतिपक्षी ज्ञात होते हैं । समद = समद खाँ, मुगल सेनापति । इसे छत्रसाल ने १७४७ सं० में बेतवा के युद्ध में परास्त किया । बंगश खाँ = फर्रुखाबाद का एक फौजदार । सं० १७८६ में इससे युद्ध हुआ और बंगश परास्त हुआ । डोकरा = बुड्ढा—छत्रसाल जो ८० वर्ष की आयु तक युद्ध करता रहा ।

१२३. मयूखैं = किरणें । प्रलै-भानु = प्रलय कालीन सूर्य जो अत्यन्त तीव्र हो जाता है । प्रतिभट = विरोधी वीर । कटीले = काटने वाले ।

१२४. चंदबान = अर्धचन्द्राकार फलों से युक्त बाण । घनबान = धूँआ छोड़ने वाले बाण । कुहूक बान = ध्वनि तथा प्रकाश छोड़ने वाले बाण । कमानैं = तोपें । जमदाढैं = टेढ़ी तलवारें । बाढ़वारें = तेज धार वाली । चलाए पायँ=पैर उखाड़ दिए ।

[औरंगजेब]

किबले के ठौर बाप बादशाह साहजहाँ वाको कैद कियो मानो मक्के आगि लाई है।
बड़ो भाई दारा वाकों पकरिकै मारि डार्यो मेहरहू नाहिं मा को जायो सगो भाई है।
खाइकै कसम त्यों मुराद को मनाइ लियो फेरि ताहू साथ अति कीन्ही तैं ठगाई है।
भूषन सुकबि कहै सुनो नवरंगजेब, ऐसे ही अनीति करि पातसाही पाई है।१२५।
हाथ तसबीह लिये प्रात करें बंदगी सी, मन के कपट सबै संभारत जपके।
आगरे में जाय दारा चौक में चुनाय लीन्हो छत्रहू छिनाय लीन्हो मारि बूढ़े बपके।
सूजा बिचलाय कैद करिकै मुराद मारे, ऐसे ही अनेक हने गोत्र निज चपके।
भूषन भनत अब साह भए साँच जैसे सौ सौ चूहे खाइकै बिलाई बैठी तपके।१२६।

[भगवन्तराय खीची]

उठि गयौ आलम सों रुजुक सिपाहिन को, उठि गौ बँधैया सब बीरता के बाने को।
भूषन भनत उठि गयौ है धरा सों धर्म, उठि गौ सिँगार सबै राजा राव जाने को।
उठि गो सुकबि-सील उठि गो जसीलो डील, फैलौ मध्य देस में समूह तुरकाने को।
फूटे भाल भिच्छुक के जूझे भगवंतराय, अराय टूट्यौ कुल-खंभ हिंदुआने को
।१२७।

[शृंगार]

देखत ही जीवन बिडारौ तौ तिहारौ जान्यौ, जीवन-द नाम कहिबे ही कों कहानी मैं।
कैधों घनस्याम जो कहावैं सो सतावैं मोहिं, निहचैकै आजु यह बात उर आनी मैं।

१२५. किबला=सम्मान। आगि लाई = आग लगाई। मेहर=कृपा। मुराद= औरंगजेब का सबसे छोटा भाई—औरंगजेब ने इसे छल से मरवा डाला।

१२६. तसबीह=सुमिरनी, माला। बंदगी=नामस्मरण। सूजा=शाह शुजा, औरंगजेब से बड़ा तथा दारा से छोटा भाई। गोत्र = संबंधी। चपके=चुपके से।

१२७. आलम=संसार। रुजुक=चाहने वाला, प्रेमी। बाने=वंश। सिंगार= शोभा। जाने को=विख्यात। सुकबि-सील=सुकवियों को शील प्रदान करने वाला। मध्य देस=अवध प्रान्त तथा उसके आस-पास का क्षेत्र। जूझे भगवंतराय=अवध के नवाब सआदत खाँ से असोथर के राजा भगवंतराय का युद्ध १७३५ ई० में हुआ, इसमें राजा की मृत्यु हुई।

१२८. बिडारौ=नष्ट करते हो। जीवन-द=प्राण अथवा जल देने वाला। घनस्याम=कृष्ण तथा मेघ।

भूषन सुकबि कीजै कौन पर रोषु नीज भागि ही को दोषु आगि उठति ज्यों पानी मैं ।
रावरेहू आए हाय हाय मेघराय सब धरती जुड़ानी पै न बरती जुड़ानी मैं ।१२८।

मलय समीर परलै कों जो करत अति जम की दिसा तें आयो जम ही को गोतु है ।
साँपन को साथी, न्याय चंदन छुए तें डसै, सदा सहबासी बिष-गुन को उदोतु है ।
सिंधु को सपूत कलपद्रुम को बंधु, दीनबंधु को है लोचन सुधा को तनु सोतु है ।
भूषन भनत भुव-भूषन द्विजेस तैं, कलानिधि कहाय कै कसाई कत होतु है ।१२९।

बन उपबन फूले अंबनि के झौर झूले, अवनि सोहात सोभा और सरसाई है ।
अलि मदमत्त भए केतकी बसंती फूली, भूषन बखानै सोभा सबै सुखदाई है ।
बिषम, बिडारिले कों कहत समीर मंद, कोकिला की कूक कान कानन सुनाई है ।
इतनो सँदेसों है जू पथिक तिहारे हाथ, कहो जाय कंत सों बसंत-रितु आई है ।१३०।

[शान्त रस]

देह देह देह फिर पाइयै न ऐसी देह जौन तौन जो न जानै कौन जौन आइबो ।
जेते मनि-मानिक हैं तेते मन मानि कहैं धराई में धरे ते तौ धराई धराइबो ।
एक भूख राखै भूख राखै मत भूषन की यही भूख राखै भूप भूषन बनाइबो ।
गगन के गौन जम गिनन न दैहै नग नगन चलैगौ साथ नग न चलाइबो ।१३१।

१२९. परलै=प्रलय । जम की दिसा=दक्षिण दिशा । गोतु=गोत्र, सम्बन्धी । न्याय=समान । दीनबंधु को लोचन=भगवान् के विराट् रूप में सूर्य और चन्द्रमा उनके नेत्र माने गए हैं । सोतु=स्रोत, सोता । द्विजेस=द्विजन्माओं में श्रेष्ठ ।

१३०. झौर=गुच्छे । बिषम=प्रतिकूल, कष्टप्रद । बिडारिबे कौ=नष्ट करने के लिए ।

१३१. देह देह देह=दे, दे कह कर बार बार माँगने पर भी । जौन तौन=जो, तो, मीन-मेख, बहाने । धराई में धरे=पृथ्वी में रखे हैं । गगन के गौन=स्वर्ग जाने के समय । नग=रत्न ।

परिशिष्ट

भावार्थ एवं काव्य-सौष्ठव

१

ग्रन्थारम्भ में कवि, गणेश वन्दना से मंगलाचरण करता है। हे मन ! देखो, गणपति के ये पंखे के समान कान, इस अवर्णनीय तथा अनन्त संसार रूपी मार्ग की थकावट को दूर करने वाले हैं। ये हमारे ऊपर पंखे के समान निरन्तर चलते हुए हमारे श्रम को दूर करें। गणपति के लाल कमल के समान सुन्दर, कोमल तथा शीतल चरणों को हृदय में धारण कर जिससे तेरा हृदय शीतल हो जाय और तुझे इस लोक तथा परलोक, दोनों में सफलता प्राप्त हो। तू उनके उन सुन्दर कपोलों का ध्यान कर जिन पर मद जल के कारण भौंरों का झुण्ड निरन्तर मँडराता हुआ उन्हें सुशोभित किए रहता है। इस ध्यान से उत्पन्न आनन्द की नदी में हे भूषण तू स्नान कर। हे मन ! तू उन गजमुख-गणेश का यश गान कर जो पाप रूपी वृक्षों को तोड़ मरोड़ कर छिन्न-भिन्न कर देते हैं और अनेक विघ्नों के गढ़ों को तोड़ फोड़ कर मार्ग सरल कर देते हैं और अपने भक्तों के मन को सब प्रकार से प्रसन्न करने वाले हैं

काव्य सौष्ठव—इस छन्द में कवि ने गणपति की नमस्कारात्मक वन्दना की है नमस्कारात्मक वन्दना में कवि अपने इष्ट देव को प्रणाम करता है। आशीर्वादात्मक मंगलाचरण में कवि अपने इष्टदेव के प्रति जयात्मक शब्द उच्चारण करता है (छन्द संख्या २ देखिए) और नमस्कार अथवा जयात्मक शब्द से रहित, केवल वर्ण्य विषय की ओर संकेत कर देने वाला मंगलाचरण, वस्तु निर्देशात्मक कहलाता है। इस छन्द में थोड़ा सा संकेत वस्तु निर्देश की ओर भी ज्ञात होता है। 'बिघन गढ़ गंजन' से युद्धों तथा दुर्ग विजयों का आभास मिलता है।

भक्ति तथा शान्त भाव प्रधान हैं। गणपति के चरणों में अनुरंजन तथा उनके सुन्दर दर्शन आदि के द्वारा भक्ति की व्यंजना है तथा सांसारिक बाधाओं

की शान्ति, परलोक की सफलता से सांसारिक द्वन्दों से विमुखता व्यक्त होती है। प्रधानता भक्ति भाव की है।

आलंकारिक वर्णन है रूपक अलंकार प्रमुख है। गणपति भगवान् वर्ण्य हैं ओर हाथी उपमान है, दोनों का एक दूसरे पर आरोप है। भाषा में माधुर्य गुण प्रधान है। 'ल' 'क' 'स' जैसे कोमल वर्णों के अनुप्रास से भाषा को मधुर तथा प्रवाह-पूर्ण बना दिया गया है। कलात्मक छन्द है।

२

गणपति के उपरान्त शिवाजी की कुल देवी, दुर्गा की स्तुति की गई है। हे आदिशक्ति, हे काली, हे शंकरी, तुम्हारी जय हो। मधु-कैटभ को छल कर उनका विष्णु द्वारा वध कराने वाली तथा महिषासुर को मींज कर समाप्त कर देने वाली, तुम्हारी जय हो! हे चण्डी, हे चामुण्डे! चंडमुंड नामक असुरों को टुकड़े-टुकड़े कर डालने वाली, तुम्हारी जय हो। हे प्रभापूर्ण अरुण-गौर वर्ण वाली! हे रक्त-बीज और विडाल राक्षसों का वध करने वाली! तुम्हारी जय हो! हे शुंभ निशुंभ का दलन करने वाली! भूषण बार-बार तुम्हारी जय-वाणी का उच्चारण करता है! हे जगज्जननी! सामार्थ्यवान् प्रतापी महाराज शिवाजी को विजय प्रदान कीजिए।

विशेष—जयात्मक कथनों के कारण यह आशीर्वचनात्मक मंगलाचरण है। शिवाजी का स्पष्ट उल्लेख करके इसे वस्तु निर्देशात्मक रूप भी दे दिया गया है। इस छप्पय में ओज गुण की प्रधानता है। भाषा में संयुक्ताक्षरों का प्रयोग करके उसे, रस के अनुकूल, कठोरता प्रदान की गई है। वीर भयानक तथा रौद्र भावों का सम्मिश्रण है। इन सबका भक्ति भाव में पर्यवसान है। वीर गाथा युग की काव्य-भाषा के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग है। अनुप्रास का प्रयोग सफलता पूर्वक हुआ है।

३

शिवाजी सूर्य वंशी थे, अतः इस दोहे में सूर्य देव की वन्दना है। इस संसार रूपी सागर के लिए नौका के समान; चक्रवाक तथा कमल के समूहों का कष्ट

दूर करने वाले, प्रत्येक लोक को अपने प्रकाश से पूर्ण कर देने वाले सूर्य भगवान् (तपते-हुए) अपना प्रताप चारो ओर विकीर्ण कर रहे हैं, ऐसे आनन्द के आगार (सूर्य देव) की जय हो।

४

पृथ्वी को अलंकृत करने वाला सूर्य वंश सुशोभित हो रहा है ; कंस जैसे पापियों का वध करने के लिए प्रभु ने इसमें बार-बार अंशावतार ग्रहण किया है।

५

उस (सूर्य वंश) में एक श्रेष्ठ वीर उत्पन्न हुआ। उसने शंकर को अपना मस्तक चढ़ाया और सीसोदिया की ख्याति प्राप्त की।

६

उस (सूर्य कुल) में सभी राजे सौभाग्यशाली उत्पन्न हुए। मालोजी उनमें एक बड़े राजा हुए।

७

जिन (मालोजी) के मुख-मण्डल पर दान देते तथा तलवार चलाते समय सदैव शोभा छाई रहती है। दौलताबाद के दुर्ग देवगिरि के शासनाधिकारी शाह निंजाम उनके मित्र थे।

८

वे (मालोजी) सिंह के समान सुशोभित हैं; इसी से उनको सरजा का यश प्राप्त हुआ है। भोंसले वंश के ये चिरंजीवी राजा, रणभूमि में शिला के समान अटल हैं।

९

उन (मालोजी) के पुत्र महाराज शाहजी हुए। संसार के सभी राजे जिनके आतंक से रातदिन शंकित रहते हैं।

काव्य सौष्ठव—दोहा ३ से ९ तक

उपर्युक्त दोहों में कवि ने महाराज शिवाजी के वंश का वर्णन किया है। रीतियुग के कवियों की यह परम्परा थी कि अपने आश्रयदाता राजाओं के वंश

का वर्णन ग्रन्थ के आरम्भ में ही करते थे। ग्रन्थ उन्हीं के नामपर होता था और उन्हीं को समर्पित भी किया जाता था। भूषण ने भी अपने ग्रन्थ का 'शिव भूषण' अथवा 'शिवराज भूषण' नाम देकर इसी प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है। आश्रयदाताओं के वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण भी होते थे, यद्यपि भूषण के आश्रयदाता स्वयं इतने वीर और महान् थे कि उनकी प्रशंसा में अतिशयोक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता।

१०

मालोजी के पुत्र शाहजी ने इतने हाथी दान किये हैं कि सरस्वती भी उनकी गणना करने में असमर्थ हैं। भूषण कह रहे हैं कि शाहजी के गौरव, उनकी सभा तथा उसकी सजावट को देखकर अन्य नरेश तुच्छ प्रतीत होते हैं। वे अपार साहसी हैं, हिन्दू राष्ट्र के धैर्यवान् आधार हैं और सम्पूर्ण सीसोदिया वंश में सपूत तथा कुलदीपक हैं। आयुष्मान् तथा वीर शाहजी ने जगत् में प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। अनेक शाहों को वे शरण देनेवाले हुए और कितने ही सैनिकों के आश्रयदाता बने।

विशेष—भूषण के युग में प्रयुक्त होनेवाली प्रशस्ति शैली में उक्त वर्णन किया गया है। शृङ्गार-युग में राजाश्रित कवि इसी प्रकार अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा करते थे। अतिशयोक्ति तथा अनुप्रास के प्रयोग ने छन्द को चमत्कार तथा प्रवाह से पूर्ण बना दिया है। नायक की दानवीरता का वर्णन है।

११

जिस प्रकार राजा दशरथ के पुत्र महाराज राम हुए और वसुदेव के पुत्र गोपालकृष्ण हुए, उसी प्रकार शाहजी के पुत्र राजा शिवाजी हुए।

विशेष—राम और कृष्ण की समानता में शिवाजी को ईश्वरावतार कहा गया है।

१२

शिवाजी के जन्म लेते ही ब्राह्मण और देवता प्रसन्न हो उठे। उनके जन्म से कलियुग दूर हुआ और यवनों का अहंकार दूर हो गया।

विशेष—राम और कृष्ण के जन्मकाल में जिस प्रकार सारी प्रकृति आनन्दपूर्ण वर्णित की गई है उसी प्रकार शिवाजी के जन्म समय में भी सब संसार आनन्दमय हो उठा।

१३

भोंसले वंश के राजा शिवाजी ने जिस दिन पृथ्वी पर जन्म लिया उसी दिन उन्होंने शत्रु के हृदय के सारे उत्साह को जीत लिया। षष्ठी पूजा के दिन उन्होंने बड़े-बड़े छत्रधारियों के अधिकार को जीत लिया और नामकरण संस्कार के दिन तो उन्होंने दानवीरकर्ण के जगतव्यापी यश को ही जीत लिया। शाहजी के पुत्र शिवाजी ने अपनी बाललीला में ही चारो ओर दृष्टिमात्र डालकर बड़े-बड़े गढ़ कोटों को जीत लिया। गोलकुंडा और बीजापुर जैसे प्रबल राज्यों को उन्होंने लड़कपन में ही जीत लिया और युवावस्था प्राप्त करके दिल्ली के बादशाह को भी जीत लिया।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी की प्रतिभा के उत्तरोत्तर विकसित होने का वर्णन कवि ने स्वाभाविक रूप में किया है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, बालक के संस्कार होते हैं; छठी, नामकरण आदि। इन्हीं के साथ शिवाजी का शौर्य भी बढ़ता गया और अब अपनी पूर्ण प्रौढ़ता को पहुँच गया है। उत्तरोत्तर उत्कर्ष के कारण सार अलंकार है।

१४

दक्षिण के दुर्गों को जीतकर और उन्हें अपना सहायक बनाकर शिवाजी विशेष शोभित हुए। भगवान् शंकर के सेवक, गढ़ों के स्वामी शिवाजी ने रायगढ़ में अपना निवास बनाया।

१५

जिस दुर्गराज रायगढ़ में शाहजी के पुत्र शिवाजी इन्द्र जैसी श्रेष्ठ सभा आयोजित करते हैं, भूषण कहते हैं कि जिस रायगढ़ की सम्पत्ति को देखकर कुबेर भी लज्जित हो जाता है, जिसमें त्रिलोक की शोभा विद्यमान् है, जिसकी आधारभूमि पाताल के जल से लगाकर रायगढ़ को घेरे हुए ग्रामों तक विशाल

तथा विस्तृत है और जो इतना ऊँचा है कि ठीक उसके ऊपर देवलोक की शोभा दृष्टिगत होती है, वह रायगढ़ गढ़ोंका शोभायमान राजा है।

विशेष—कवि ने अपने युगके अनुकूल रायगढ़ का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया है। राजाओं के राजसी वैभव का वर्णन करना उस युग की परम्परा थी। गढ़ की विशालता का चित्रण सुन्दरता के साथ हुआ है।

१६

रायगढ़ में स्थित शिवाजी के रत्नजटित महल ऐसे सुशोभित हैं कि यक्ष, किन्नर, देवता, दानव, गन्धर्व आदि सभी उनमें रहने के इच्छुक हो उठते हैं। नीलमणि से विरचित ऊँचे-ऊँचे महलों में जब मृदंग बजते हैं तब ऐसा प्रतीत होता है कि वर्षाकाल में बड़े-बड़े मेघखण्ड घुमड़कर गर्जन कर रहे हों।

विशेष—उत्प्रेक्षा अलंकार के द्वारा कवि ने नीलवर्ण के महलों में मेघों की कल्पना की है। मृदंगध्वनि में गर्जन की कल्पना है। 'घ' और 'ग' के अनुप्रास द्वारा गर्जन की अभिव्यंजना की गई है।

१७

छज्जों पर लालमणियों की मालाएँ तथा मोतियों की श्वेत झालरें सुशोभित हैं। मानों संध्याकाल में अरुण वर्ण के आकाश में नक्षत्रों का समूह झलमला रहा हो। भवनों में जहाँ-तहाँ जटित हीरों की श्वेत किरणें ऊपर की ओर प्रसारित होती हैं; ऐसा प्रतीत होता है कि आकाश रूपी तम्बू तना हुआ है और ये श्वेत किरणें उस तम्बू की खिंची हुई डोरियाँ हैं।

विशेष—उत्प्रेक्षा अलंकार की सहायता से कवि ने शिवाजी के भवनों का वैभव वर्णित किया है। चमत्कारमयी कल्पना की प्रधानता है।

१८

भूषण कहते हैं कि वर्षाकाल में बादलों के समूह जिस समय पीले पुखराज-रत्नों की आभा को स्पर्श करते हैं उस समय उन श्यामवर्ण के मेघों का स्वरूप पीताम्बरधारी कृष्ण का हो जाता है। संगमरमर के श्वेत महलों में सुन्दर स्त्रियों के मुखमण्डल ऐसे सुशोभित होते हैं मानो आकाशगंगा की तरंगों में स्वच्छ कोमल कमल खिले हों।

विशेष—उत्प्रेक्षा अलंकार तथा चमत्कारपूर्ण कल्पना।

१९

रायगढ़ की सुन्दरियों के मुखचन्द्र सौन्दर्यपूर्ण हैं; उन्हें देखकर आकाशगंगा के कमलों और कुमुदों को भ्रम हो जाता है। उन्हें चन्द्रमा समझ कर कुमुद-समूह खिल उठते हैं और कमल-पुष्प संकुचित हो जाते हैं। रत्नों की सीढ़ियों से बँधे हुए बावड़ी, सरोवर और कुएँ है, जिनमें हंस, सारस तथा चक्रवाक निरन्तर विहार करते रहते हैं।

विशेष—चमत्कारपूर्ण आलंकारिक वर्णन है। मुखचन्द्र में चन्द्रमा के भ्रम से कमल रात्रि समझकर सकुचाते हैं और कुमुद (कोकाबेली) रात समझकर प्रफुल्लित होती है। भ्रम अलंकार। कोमल अक्षरों का अनुप्रास, क, म, ल, स, इत्यादि। मधुरभाषा। शृङ्गारयुग के अनुरूप वर्णन है।

२०

भवनों के आँगन की भूमि कहीं-कहीं पर मूँगे के विस्तृत खण्डों से जड़ी हुई है। वहाँ मनोरम बागों में अनेक वृक्ष लताओं से आवेष्ठित होकर झलमलाते हुए झूमते हैं। वे बाग अनेक प्रकार के वृक्ष पुष्पों से परिपूर्ण हैं। चारों ओर चम्पा चमेली और सुन्दर चन्दन के वृक्ष देख पड़ते हैं। हरफारचोरी, लवंग, इलायची आदि के समूहों की गणना कहाँ तक की जा सकती है?

२१

भावार्थ सरल है।

विशेष—२०, २१ छन्दों में उस युग के कवियों की प्रवृत्ति लक्षित होती है। अपना ज्ञान प्रदर्शित करने के लिए तथा वर्णन को सांगोपांग बनाने के लिए कविगण लम्बी-लम्बी सूचियाँ गिनाते थे। इस प्रयत्न में यह भी विचार नहीं करते थे कि इससे स्वाभाविकता तो नहीं नष्ट हो रही है। यहाँ पर प्रकृति सौन्दर्य की ओर ध्यान नहीं है, केवल वृक्षों के नाम गिनाना उद्देश्य है। 'कदम्ब-कदम्ब', 'रसाल-रसाल' में यमक की छटा है। अनुप्रास सभी छन्दों में वर्तमान है। कला प्रधान है।

२२

भावार्थ सरल है।

२३

रायगढ़ के बागों में अनेक प्रकार के सुन्दर पक्षी कलरव-क्रीड़ा करते हैं, भौंरे मधुपान करते हुए गुंजारते हैं और फल-फूल, पुष्प-सुगन्धि से परिपूर्ण बागों में सदैव बसन्त ही बना रहता है, अन्य ऋतुओं को आना-जाना ही नहीं पड़ता। शिवाजी को सुख देनेवाला रायगढ़ इतना सुन्दर है।

विशेष—इस छप्पय छन्द में ओज और माधुर्य से युक्त शैली में कवि ने रायगढ़ के उपवन का सुन्दर वर्णन किया है। प्रधानता कला की ही है।

२४

सम्पूर्ण मुसलिम राज्यों को जीतकर शिवाजी ने उस रायगढ़ में अपनी राजधानी बनाई। दान में विशेष रुचि दिखलाकर उन्होंने संसार में अपने यश की स्थापना कर ली।

२५–२६

शिवाजी की दान वीरता के कारण देश-देश से गुणीजन उनके निकट धन-लाभ की इच्छा से आने लगे। उन्हीं में एक भूषण नामक कवि भी आया। वह कश्यप गोत्र का कान्यकुब्ज ब्राह्मण और रतिनाथ का पुत्र था और यमुना निकट, एक सुन्दर स्थान, त्रिविक्रमपुर में निवास करता था।

२७–२८

उस त्रिविक्रमपुर में बीरबल जैसे वीर कवि और राजे उत्पन्न हुए। वहाँ विहारेश्वर महादेव विराजमान हैं जो काशी-विश्वनाथ के ही समान हैं। वीरता और शिष्टता के सागर, रुद्रशात के पुत्र, चित्रकूट के अधिपति सोलंकी महाराज हृदयराम ने उस कवि को भूषण की उपाधि प्रदान की।

२९

शिवाजी ने शाइस्ता खाँ को दुर्योधन और महाराज जसवंतसिंह को दुःशासन के समान देखा। बूँदी नरेश भाऊ को द्रोणाचार्य के समान समझ कर तथा

राव कर्णसिंह को वीर कर्ण के समान मानते हुए उन्होंने शत्रु सैन्य को छिन्न-भिन्न कर दिया। उसे समाप्त करके उन्होंने शाइस्ता खाँ के पुत्र अबुलफतेह का उसी प्रकार वध कर डाला जिस प्रकार वीर अर्जुन ने युद्ध क्षेत्र में ललकार कर जयद्रथ को मारा था।

विशेष—महाभारत के पात्रों से शिवाजी के प्रतिपक्षी राजाओं की तुलना की गई है। उपमा अलंकार का प्रयोग है। मिलित अक्षरों द्वारा काव्य में ओज गुण उत्पन्न किया गया है। करन्न, करन्न इत्यादि। शत्रुपक्ष के वीरत्व का प्रदर्शन करके शिवाजी के गौरव में वृद्धि की गई है। महाभारत के श्रेष्ठ युद्ध-वीरों से शत्रु सेनापतियों की तुलना करने का यही उद्देश्य है। वीर और भयानक रस प्रधान हैं।

३०

शिवाजी अपने अमित्रों को अग्नि के समान जलाने वाले हुए और मित्रों को चन्द्रमा के समान शीतल करनेवाले। फिर उन्होंने सर्व प्रथम (चन्द्रमा के समान) कुमदों के समूह को आनन्द प्रदान किया और उनके उदय से चक्रवाकों के प्राण भयभीत हो गए। तलवार का दान दे दे कर शिवाजी त्याग के बल से बलवान् प्रसिद्ध हो गए। भूषण का कथन है कि शिवाजी शुद्धता अथवा सत्य के प्रबल समर्थक हैं। उन्होंने इस अपनी पृथ्वी रूपी वधू को सुसज्जित करने के लिए अपने सिन्दूर जैसे तेज और कीर्ति जैसे चन्दन का प्रयोग किया। (तेज अथवा प्रताप का रंग लाल और कीर्ति, यश का रंग श्वेत माना गया है)

विशेष—उपमा और रूपक अलंकारों का प्रयोग है। उपमा के किसी न किसी अंग का लोप है, इससे लुप्तोपमा है। कुमुदावलि के समान मित्र तथा चक्रवाक के समान शत्रु—इन कथनों में केवल उपमान कुमुद तथा चक्रवाक कहे गए है। बंदन-तेज, चंदन-कीरति, बधू-बसुधा में रूपक हैं। छन्द में माधुर्य-गुण की प्रधानता है। शिवाजी को वसुधा का पति कहा गया है और उनका नायकत्व सिद्ध किया गया गया है। शृंगार भाव।

३१

क्षीर सागर के समान अत्यन्त उज्जवल प्रभापूर्ण चाँदनी पृथ्वी पर जहाँ-

तहाँ फैली हुई है। प्रकाश की आभा को धारण किए हुए अपनी चूने जैसी स्वच्छता के द्वारा वह (चाँदनी) बड़े-बड़े भवनों को रँगती हुई सी प्रतीत होती हैं। चन्द्रदेव ने सम्पूर्ण अन्धकार का भक्षण करके अपनी सुन्दर चाँदनी को चारों ओर उसी प्रकार प्रसारित कर रखा है जिस प्रकार श्री शिवा ने अफजल (के आतंकरूपी अन्धकार) को नष्ट करके भूमण्डल पर अपनी शुभ्रकीर्ति को सुशोभित किया हो।

विशेष—भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। चाँदनी की शुभ्रता और स्निग्धता का वर्णन, कोमल अक्षरों की अनुप्रासमयी प्रवाहपूर्ण भाषा में है। कीर्ति की तुलना चाँदनी से की जाती है अतः चाँदनी उपमान है किन्तु यहाँ पर चाँदनी की तुलना कीर्ति से की गई है अतः प्रसिद्ध उपमान, चाँदनी, को उपमेय बना दिया गया है, इस प्रकार यहाँ पर प्रतीप अलंकार है। छन्द में आलंकारिकता का सफल प्रयोग है।

३२

हे शूर-श्रेष्ठ, दानवीर-शिरोमणि महाराज शिवाजी ! आपके सुयश के समान स्वच्छ प्रभा वाला व्यक्ति इस संसार में विचार से बाहर है। एक शेष भगवान् थे, वह पाताल लोक में निवास करते हैं। ऐरावत गजराज हैं, किन्तु वह भी इन्द्र-लोक में निवास करते हैं। मानसरोवर के हंस बहुत दूर हैं और उनसे भी दूर कैलाशपति गौर वर्ण भगवान् शंकर हैं। अमृत तथा क्षीरसागर भी श्वेत हैं किन्तु वे संसार छोड़कर देवलोक को चले गये हैं। भूषण कहते हैं कि अपनी सामर्थ्य भर भटक चुका, किन्तु कितनी ही बात क्यों न चुनूँ आप के यश की समता करनेवाला कोई दृष्टिगत नहीं होता।

विशेष—यश का कल्पना, चमत्कार से पूर्ण वर्णन है। पौराणिकता का आधार भी लिया गया है। शेषनाग, ऐरावत आदि की श्वेतता पुराण-प्रसिद्ध है। संस्कृत कवियों ने इस प्रकार के चमत्कारपूर्ण वर्णन किये हैं। शिवाजी के यश के सम्मुख सारे उपमान लज्जित होते हैं, इस कथन में पंचम प्रतीप अलंकार है। शौर्य तथा दानवीरता के प्रभाव का वर्णन होने से वीर-भाव का ही प्राधान्य है। भाषा में मधुरता की उत्पत्ति अनुप्रास के द्वारा की गई है।

३३

चन्दन वृक्ष यद्यपि शीतलता तथा शुभ्रता का आगार है किन्तु उसमें सर्प लिपटे रहते हैं। इन्द्र का हाथी ऐरावत यद्यपि श्वेत है किन्तु मस्तक पर मद होने से वह अहंकारी है। शेषनाग श्वेत हैं किन्तु वे विषधर हैं। सफेद बालों से निर्मित चवर कभी स्थिर नहीं रहता और कपूर उड़ जाता है! शरद्काल के श्वेतवर्ण मेघ भी हवा लगने से दसों दिशाओं में उड़े-उड़े फिरते हैं। भगवान् शंकर गौर वर्ण के होकर भी नीलकण्ठ हैं; इसी प्रकार श्वेत कमल में काला भ्रमर निरन्तर वास करता है, श्वेत क्षीरसागर में कीचड़ की कालिमा है और चन्द्रमा तो कलङ्की है ही अतः ये सब तेरे स्वरूप के एक अंश को भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। ऐसी दशा में (भूषण कहते हैं) कि तुझसे सरस, शोभायमान, दूसरा कौन हो सकता है?

विशेष—आलंकारिकता और कल्पना-प्रधान छन्द है। संस्कृत कवियों की चमत्कार वृत्ति का प्रभाव है। शिवा का यश उपमेय है; उसके सम्मुख सारे उपमानों का अनादर होने से चतुर्थ प्रतीप अलंकार है। भाषा अनुप्रासमयी तथा प्रवाहपूर्ण है।

३४

जिस प्रकार इन्द्र ने जृम्भासुर पर अपना शौर्य प्रदर्शित किया; जिस प्रकार बड़वानल सागर के जल पर अपना अंकुश रखता है, निरन्तर जलाते हुए उसे मर्यादित बनाए रखता है; जिस प्रकार अहंकारी रावण पर रघुकुल के स्वामी भगवान् राम ने विजय प्राप्त की; जैसे वायु मेघों को अपनी इच्छानुसार संचालित करता है, जिस प्रकार मगवान् शंकर ने कामदेव को भस्म करके दण्डित किया अथवा भगवान् परशुराम ने हैहयराज (सहस्रबाहु) को अपने पितृबध का दण्ड दिया, जैसे दावानल वृक्षों को जलाती है, चीता मृग झुण्ड पर टूटता है अथवा सिंह हाथियों के मस्तक विदीर्ण करता है, प्रकाश, अंधकार के यत्र तत्र फैले हुए अंशों को दूर कर देता है, भगवान् कृष्ण ने कंस को उसके अत्याचारों के लिए दण्डित किया था, उसी प्रकार म्लेच्छ वंश के ऊपर शिवाजी अपना आतंक जमाए रहते हैं।

विशेष—शिवाजी उपमेय के लिए अनेक पौराणिक तथा प्राकृतिक उप-

मान कवि ने एकत्र वर्णित किए हैं—एक उपमेय के लिए अनेक उपमानों की माला प्रस्तुत की गई है, अतः मालोपमा अलंकार है। शब्द परुषता लिए हुए हैं; संयुक्त तथा कठोर अक्षरों द्वारा उदात्त भाषा बनाकर वीरत्व की व्यंजना की गई है। वीर और भयानक रसों का संयोग है।

३५

रायगढ़ दुर्ग के मध्य में सुशोभित, शाहजी के पुत्र महाराज शिवाजी की सभा, सुमेरु पर्वत पर जुड़नेवाली देवताओं की सभा का भी निरादर करती है। रायगढ़ दुर्ग रायरों नामक ऊँची और दुर्गम पहाड़ी पर स्थित है, इस पहाड़ी के प्रत्येक शिखर पर से चारों ओर नदियों की पंक्ति बराबर प्रवाहित होती रहती है। महलों में जड़े हुए हीरे आदि रत्नों की ज्योति इतनी स्वच्छ तथा प्रकाशमान् है कि वह चन्द्रमा की शुभ्र चाँदनी का भी उपहास करती है। रायरी पहाड़ी की कन्दराएँ इतनी गम्भीर हैं कि उनमें सदैव अमावस्या के अन्धकार की सघनता विद्यमान् रहती है। रायगढ़ दुर्ग इतना अभेद्य तथा ऊँचा है कि उसमें जगमगाती हुई दीपमाला, आकाश में झलमलाती हुई नक्षत्र माला से होड़ करती है।

विशेष—वस्तु-वर्णन का सुन्दर उदाहरण है। दुर्ग के वैभव तथा उसकी उच्चता का आलंकारिक चित्रण किया गया है। रायगढ़ के सारे उपमान उससे निराहत, उपहसित आदि होते हैं; यहाँ पर तुलना के लिए लीलात्मक पद प्रयुक्त हैं, अतः ललितोपमा है। इसमें समता तो है किन्तु साधारण वाचक शब्दों द्वारा नहीं।

पार्वतीय शोभा का प्राकृतिक वर्णन, दुर्ग के वैभव वर्णन के साथ संयुक्त किया गया है। भाषा में अनुप्रास, माधुर्य प्रधान है।

३६

हे शाहजी के पुत्र महाराज शिवाजी! आप के द्वार पर निरन्तर दान की घोषणा करने वाले नगाड़े बजते रहते हैं। भूषण कहते हैं, आप भिक्षुओं के समूह को दानवीर भोज से भी अधिक आनन्द मग्न करने वाले हैं। बड़े-बड़े

राव राजाओं के समूह तथा शाहों में भी वह शोभा विद्यमान् नहीं है, जो तुझमें दृष्टिगत होती है। आज इस पृथ्वी पर दीनों पर कृपा करने वाला एक मात्र तेरे समान तू ही है।

विशेष—शिवाजी की दानवीरता का ओजपूर्ण तथा आलंकारिक वर्णन है। उपमेय शिवाजी के उपयुक्त कोई उपमान प्राप्त न होने से उन्हीं को अपना उपमान बनाया गया है, यह अनन्वय अलंकार है। शब्दालंकार में अनुप्रास की छटा है वीररस के अन्तर्गत दानवीर का ओजपूर्ण उदाहरण है। शिवाजी के दानोत्साह का उदात्त वर्णन है। 'मौज, गरीब निवाज' जैसे विदेशी शब्दों को अपना कर कवि ने भाषा को विशेष व्यावहारिक तथा स्वाभाविक बनाया है।

३७

कलियुग रूपी दुष्ट ने इस पृथ्वी पर अवतार लेकर इस संसार को दण्डित कर रक्खा था। शाहों में श्रेष्ठ, अत्यन्त सामर्थ्यवान् औरंगजेब ही उसका मस्तक है उसका हृदय फारस का शाह अब्बास है जो स्थिरता-पूर्वक अपनी विपुल शक्ति में विलसित होता रहता है। आदिलशाह और कुतुबशाह उसकी दो भुजाएँ हैं; अनेक मुसलमान अमीर उसके पैर हैं और दूसरे मुस्लिम देश उसके अन्य अंग हैं। ऐसे कलियुग रूपी अत्याचारी को महाराज शिवाजी ने अत्यन्त साहसपूर्वक खड्ग ग्रहण करके टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

विशेष—उक्त छप्पय में कवि ने कलियुग का रूपक बाँधकर औरंगजेब के अत्याचारी शासन का वर्णन किया है। उक्त शासन का मानवीकरण उसके विभिन्न अंगों के काल्पनिक वर्णन से किया गया है। साँग रूपक है। भाषा में प्राकृताभास हिन्दी की झलक है; 'समथ्थ' 'खग्ग' आदि शब्द चन्द के समय की साहित्यिक भाषा के हैं। रासों में वीरत्व व्यंजक भाषा का निर्माण इसी प्रकार की शब्दावली से किया गया है। शिवाजी के उत्साह तथा आतंक का वर्णन है। ओजगुण की प्रधानता है।

३८

बीजापुर के शाह ने बिना यह जाने हुए कि जावली रूपी जंगल में (शिवाजी रूपी) सिंह की माँद है, अड़नेवाले हाथी (के समान अफजल खाँ)

को वहाँ भेजा और धोखा खा गया। शिवारूपी सिंह का सामना होने पर जिस प्रकार लोग इधर-उधर भाग खड़े हुए उसे देखकर न तो किसी के हृदय में साहस ही उत्पन्न हुआ और न कोई किसी को रोक ही सका। महाशक्तिशाली तथा धर्म के लिए युद्ध करने वाले शाहजी के पुत्र, महाराज शिवाजी ने, मन्दोन्मत्त अफजलखाँ को अपने पंजे के बल पछाड़ दिया। याकूतखाँ जो महावत के समान इस प्रबल हाथी अफजलखाँ का संचालन कर रहा था, पूर्णतया निकम्मा हो गया और अंकुशखाँ रूपी अंकुश (हाथी को हाँकनेवाले अस्त्र) को साथ में लिए हुए चुपचाप अपने घर को भाग निकला।

विशेष—शिवाजी की युद्धवीरता का उदाहरण है, जिसके साथ धर्मवीरता का भी संकेत किया गया है। जिस प्रकार सिंह हाथी के मस्तक को अपने पंजे से फाड़ देता है उसी प्रकार शिवाजी के बघनखे का आतंकपूर्ण वर्णन कवि ने किया है। वनस्थली में एकछत्र राज्य करनेवाले सिंह से शिवाजी का रूपक बाँधा गया है। मदगल, आँकुस शब्दों में श्लेष का प्रयोग भी किया गया है, ये शब्द द्वयर्थक हैं। भाषा ओजपूर्ण तथा व्यावहारिक है—भभ्भर भगाने आदि लोक प्रचलित मुहाविरे हैं। गाजी, ताबगीर आदि विदेशी शब्द हैं जिनसे भाषा में स्वाभाविकता आ गई है। वीर और भयानक रस तथा ओजगुण प्रधान हैं।

३९

हे शाहजी के पुत्र शिवाजी ! तेरा यश बिना कलंक का चन्द्रमा प्रतीत होता है। उसमें किसी प्रकार का दोष नहीं है। तुझे एक ही मुख के आधार पर पंचानन, भगवान् शंकर कहने की इच्छा होती है। बिना गजबदन के ही तू गणपति के समान है। अपने एक ही मस्तक द्वारा तू शेषनाग के समान धराधर है। दो नेत्रों से ही तू भगवान् इन्द्र के समान हजार नेत्रों की दृष्टि रखनेवाला है। केवल दो हाथों से युक्त होकर भी तू सहस्रकिरण वाले भगवान् सूर्य के समान शक्तिशाली है। सहस्रबाहु के समान सामर्थ्यवान् तथा प्रतापी है।

विशेष—कवि ने शिवाजी का यश आलंकारिक शैली में वर्णित किया है। पौराणिक उपमानों से तुलना करते हुए, चमत्कारिक शैली में, उपमेय

शिवाजी को अपूर्णता में भी पूर्ण चित्रित किया गया है। हीन अभेद रूपक का उदाहरण है। शृंगारयुगीन परम्परा का प्रशस्ति वर्णन है, भाषा मधुर तथा प्रवाह-पूर्ण है; सारा छन्द कलात्मक है।

४०

शाहजी के पुत्र, शिवाजी ने इस सम्पूर्ण पृथ्वी का शासन अपनी भुजा के आधीन उसी प्रकार स्थित कर लिया है जिस प्रकार शेषनाग सम्पूर्ण भूमि-भार को धारण करके अपने अधीन रखता है। अपने प्रताप (रूपी सूर्य) के उत्तप्त प्रभाव से शिवाजी ने अनेक शाहों को उसी प्रकार शोभाहीन (कान्तिहीन, बेपानी) कर दिया है जिस प्रकार सूर्य प्रत्येक वस्तु से जल का शोषण करके उसे श्रीहीन कर देता है। अपने हाथरूपी मेघ द्वारा [दान की वृष्टि करके] शिवाजी ने दरिद्रता रूपी दावाग्नि का दलन कर दिया और वनस्थलीके समान गुणीजनों को सुखप्रदान कर दिया। अपने यश-चन्द्र की शीतल चन्द्रिका का प्रसार करके शिवाजी ने यवनों के मुखकमलों की शोभा को मलिन कर दिया।

विशेष—शिवा की अलौकिक शक्तिमत्ता तथा आतंक का आलंकारिक वर्णन है। 'परिणाम' अलंकार का उदाहरण है जिसमें उपमान, उपमेय के साथ मिलकर ही कार्य करने में समर्थ होता है। यहाँ भुजगेंद, तरन्नि आदि शिवाजी की भुजा, तेज (उपमेय) के साथ मिलकर ही कार्य सम्पन्न कर पाते है। 'पानिप' में श्लेष है, जल और शोभा दो अर्थ हैं, 'पानी' मर्यादा को भी कहते हैं, 'आब' का अर्थ जल है और 'कान्ति' के लिए इसका प्रयोग होता है। भाषा में ओज और माधुर्य गुण प्रधान हैं। अनुप्रास का सुन्दर प्रयोग है, 'त' 'स' 'द' 'म' कोमल वर्ण हैं, इनसे भाषा में मधुरता आती है। प्रवाह भी उत्पन्न होता है।

४१

हे शिवाजी ! कविगण तुझे दानवीर कर्ण के समान कहते हैं; तूने अपने शत्रुओं के हृदयों को इस प्रकार घायल कर दिया है कि उसके धनुर्धारी तुझ कर्ण को भी विजय करनेवाले अर्जुन के समान मानते हैं। सभी राजे कहते हैं कि इस पृथ्वी को धारण करने के लिए तू शेषनाग के समान है। अन्य बड़े-बड़े

राजाओं के अहंकार को तूने समाप्त कर दिया है। भूषण कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी ! तेरा राजकार्य इतना नीतिपूर्ण है कि उसका रहस्य, किसी पर नाम-मात्र को भी प्रकट नहीं होता। आदिलशाह तुझे कहर ढानेवाला कहता है, कुतुबशाह तुझे मनमौजी कहता है और अहमद नगर के विजयी शासक भी तुझे दानव के समान बलशाली तथा भयंकर समझते हैं।

विशेष—शिवाजी की शूरता, शासन पटुता, नीतिज्ञता तथा सर्वशक्तिमत्ता का एकत्र वर्णन कवि ने किया है। आतंक का चित्रण ही प्रमुख है। उल्लेख अलंकार है जिसमें उपमेय शिवाजी का वर्णन अनेक व्यक्तियों ने अनेक रूप में किया है। भाषा में व्यावहारिकता है, कहरी, मौजलहरी, जितैया आदि शब्द लोक प्रचलित हैं जो भाषा में स्वाभाविकता उत्पन्न करके हैं। अनुप्रास का भी स्वाभाविक रूप है। आलंकारिक शैली प्रधान है।

४२

शिवाजी जिस समय औरंगजेब के पास दरबारखास में पहुँचे तब उनकी उपेक्षा हुई, ऐसी दशा में उनकी त्योरी ऐसी चढ़ी मानो वह औरंगजेब का वध करने को प्रस्तुत हों। आनन्द के वातावरण को इस प्रकार क्षुब्ध कर देने के कारण उन्हें आगरे में कैद कर दिया गया। वे वहाँ से भागकर औरंगजेब के कितने ही पहरे, थाने पार करते हुए घर पहुँच गए और नर्मदा तट तक अपने राज्य की सीमा निर्धारित कर ली। उनकी इस विजय ने, भूषण कहते हैं, पृथ्वी पर चतुर्दिक आनन्द उत्पन्न कर दिया और शाह औरंगजेब की छाती पर इस घटना से गहरा आघात लगा। वास्तव में महाराज शिवाजी के कर्म ऐसे अद्भुत हैं कि यह नहीं ज्ञात होता कि वह कोई गन्धर्व हैं, देवता हैं, सिद्ध पुरुष हैं अथवा केवल शिवाजी ही हैं !!

विशेष—इस छन्द का आधार वास्तविक इतिहास है, जिसमें अतिशयोक्ति नहीं है। बीमार बनकर शिवाजी के निकल भागने की घटना जितनी सत्य है उतनी ही अद्भुत भी। उनका लम्बी-लम्बी मंजिलें पार करके घर पहुँच जाना और औरंगजेब के सिपाहियों को धोखा दे जाना भी विचित्र है। सन् १६६६ ई० में यह घटना हुई थी।

क्रोध उत्साह और आतंक, इन्हीं भावों की प्रधानता इस छन्द में है। इस प्रकार रौद्र, वीर और भयानक रसों की प्रमुखता है। छन्द में रूप और दृश्य दोनों का संक्षिप्त गुण के आधार पर चित्रण है। कथा भी संक्षेप में ही कही गई है। अन्तिम चरण में सन्देह अलंकार है इसके आधार पर अद्भुत भाव की व्यंजना है। भाषा ओज तथा प्रवाह से पूर्ण है।

४३

भोंसले वंश में उत्पन्न महाराज शिवाजी के आतंक से भयभीत शत्रु-नारियाँ वर्षा के आगमन पर मेघ आदि को देखकर कहती हैं कि प्रिय, भाग चलो, यह वर्षाऋतु का उदय नहीं है, शिवा की सजी हुई सेना आ रही है। देखो, यह बिजली की चमक नहीं है वरन् सेना के वीरगण तलवारें घुमा रहे हैं। यह इन्द्रधनुष नहीं उदय हुआ है वरन् सेना के सैनिकों के हाथ में लिए हुए झंडों का रंगीन समूह है। जिन्हें तुम जलपूर्ण झुके हुए मेघ समझ रहे हो, वह वास्तव में सेना के चलने से छाई हुई धूल का प्रसार है और मेघ गर्जन न होकर यह उन नगाड़ों की ध्वनि है जो शिवा के सैनिक बजाते चले आ रहे हैं। जिन्हें तुम घन की घटा समझ रहे हो वे वास्तव में शिवाजी के सैनिक हैं जो हाथियोंके काले-काले झुंडों तथा कवचों से सजकर चले आ रहे हैं।

विशेष—शिवाजी के आतंक का आलंकारिक वर्णन कवि ने किया है। अपह्नुति अलंकार का उदाहरण है। उपमेय का निषेध करके उपमान की स्थापना की गई है, (यह नहीं, यह है)। सेना का उत्साह चित्रित करके वीररस की सृष्टि की गई है। तलवार फेरना, झंडे उड़ाना, नगाड़े बजाना आदि उद्दीपन है। अमर्ष, त्रास, वितर्क आदि संचारी भाव है। इस प्रकार वीर का परिपाक है। स्वाभाविक भाषा की सहायता से ही वीर का परिपाक किया गया है यह कवि का कौशल और भाषाधिकार है। ओज और प्रसाद गुण प्रमुख हैं।

४४

एकबार सेना सुसज्जित करके सम्राट् औरंगजेब शिकार खेलने गए। हाँका करने वालों में से एक ओर के कुछ व्यक्तियों ने पुकार कर कहा:—सम्हलिए!

सरजा आवेगा !! (सरजा शब्द को सुनते ही) भोंसले वंश के महाराज शिवाजी के भय से आतंकित औरंगजेब को (उसी का) भ्रम हो गया। जब तक करौल लोग दौड़कर उसे समझावें कि उनका मतलब सिंह से था, शिवाजी से नहीं, तब तक वह भय के मारे अचेत हो गया और सेवकों को उसे उठाकर उसकी परिचर्या करनी पड़ी।

विशेष—शिवाजी के आतंक का विनोदपूर्ण वर्णन है। वर्णनात्मक शैली में कवि ने एक दृश्य का मनोरंजक चित्रण किया है। संक्षेप में दृश्य चित्रण की पटुता का सफल प्रदर्शन है। भयानक रस प्रमुख है। औरंगजेब भय का आश्रय है; अनुपस्थित शिवाजी आलंबन हैं। करौलों की ललकार वन का वातावरण आदि उद्दीपन है और औरंगजेब की मूर्छा, पतन आदि अनुभाव हैं। दीनता, त्रास, वितर्क आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार भयानक रस सब अंगों से पूर्ण है। औरंगजेब को सरजा शब्द की द्वयर्थकता से भ्रम होता है और तत्क्षण उसका निवारण किया जाता है अतः श्लेष से पुष्ट भ्रान्ता-पह्नुति अलंकार है। जहाँ पर भ्रम होने पर उसका निषेध करके सत्य बात स्थापित की जाय, वहाँ भ्रान्तापह्नुति अलंकार होता है। सरजा में श्लेष है।

४५

शाहजी के पुत्र महाराज शिवाजी ने श्रेष्ठ तथा सुदृढ़ दुर्ग सिंहगढ़ को पूर्णतया निश्शंक होकर रात्रि के समय शत्रु से छीन लिया। औरंगजेब द्वारा नियुक्त किलेदार, सरदार उदयभानु राठौर ने भिड़कर शिवाजी के सैनिकों से यद्यपि वीरता पूर्वक युद्ध किया तथापि उसका संहार हुआ। इस युद्ध में इतनी भीषण मारकाट हुई कि लाशें रक्त के प्रवाह में बह चलीं और उन्होंने श्मशान का दृश्य उपस्थित कर दिया। शिवाजी के विजयी मावले सैनिकों ने अपने स्वामी को विजय की सूचना देने के लिए पूर्व-निश्चित संकेत किया, उन्होंने घुड़सवारों की झोपड़ियों में आग लगा दी। उन छप्परों द्वारा उत्पन्न अग्नि की ऊँची लपटों की शोभा इस प्रकार चारों ओर फैल गई मानों प्रभातकाल में ऊषा की अरुणिमा चारों ओर प्रसारित हो रही हो।

विशेष—सिंहगढ़-विजय एक बड़ी ही शौर्यपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस छन्द में कवि ने उसी का वर्णन किया है।

शिवाजी के मित्र, तानाजी मालपुरे के संचालन में तीन सौ मराठे सैनिक इस दुर्गम गढ़ के ऊपर रात्रि के अंधकार में रस्से डालकर चढ़ गए और घोर युद्ध करके राजपूतों को भगा दिया। उदयभानु ने तानाजी को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा और उसमें तानाजी की मृत्यु हुई। तब तानाजी का वृद्ध मामा शैलर सेना लेकर युद्ध करने लगा और उसमें राठौर मारा गया और किला-विजय हो गया।

शिवाजी को विजय की सूचना, वहाँ से प्रायः १० मील दूर राजगढ़ नामक दुर्ग में, यह प्रकाश देखकर मिल गई, किन्तु तानाजी की मृत्यु का समाचार पाकर वे बड़े दुखी हुए और बोले—"गढ़ आला पण सिंह गेला" अर्थात् गढ़ आया, पर सिंह गया।

ऐतिहासिक तथ्य का बहुत ही सफल, कवित्वपूर्ण वर्णन है। कवि इतिहास के सत्य से नहीं हटा है और आलंकारिकता का उसमें सफल समन्वय भी कर दिया है। अन्तिम दो चरणों में उत्प्रेक्षा अलंकार है। प्रस्तुत में अप्रस्तुत की स्थापना है; मानो वाचक शब्द के द्वारा कल्पित वस्तु की स्थापना है। भाषा ओज तथा संक्षिप्त गुण से युक्त है।

४६

शिवाजी ने खानदौरा उपाधिधारी नौशेरी खाँ को लूटा; प्रबल आसफजंग को लूटा और कारतलब खाँ को ऐसे लूट लिया मानो सच्चे अधिकारी, शासक वही हों। पूना में शाइस्ता खाँ को लूटा और गढ़पतियों के समूह को उनके गढ़ों में ही लूट लिया। सलहेर के दुर्ग में खोज-खोजकर एक-एक विभाग के अध्यक्ष की अच्छी मरम्मत की और अत्यन्त भीषण सम्पूर्ण मुगल सेना को घेरकर लूट लिया। लूट की सामग्री के साथ शिवाजी ऐसे जान पड़े मानो औरंगजेब ने उनसे भयभीत होकर, अपने सरदारों के साथ घोड़े, हाथियों के रूप में उन्हें राजकर भेजा है।

काव्य सौष्ठव—छन्द का आधार प्रधान तथा ऐतिहासिक है। इतिहास-प्रसिद्ध घटनाओं का ओज तथा आतंकपूर्ण वर्णन है। उत्प्रेक्षा अलंकार प्रमुख है। हाथी-घोड़ों से युक्त सेना ऐसी प्रतीत होती है मानो सरदार खिराज (कर) लेकर उपस्थित हुए हों। भयानक तथा वीररस प्रधान हैं। उत्साह तथा आतंक, भय, स्थायी भाव हैं। 'लूट्यौ' क्रिया की अनेक बार उक्ति होने से आतंक की व्यापक स्थिति होती है। चित्रण स्वाभाविक है।

४७

मालमकरन्द (मालोजी) के कुल को चन्द्र के समान प्रकाशित करनेवाले, शाहजी के पुत्र, राजसिंहासन पर स्थित, महाराज शिवाजी का तेज-समूह जब जागरित होता है, उस समय उस महाकीर्तिमान् वीर पुरुष का विक्रम देखकर इन्द्र जैसा योद्धा भी विस्मृत हो जाता है, विक्रमादित्य जैसे मनुष्य की तो बात ही क्या! भूषण का कथन है कि उससे वैर करने के कारण, घर-घर में दुःख तथा व्याकुलता उत्पन्न होती है और शत्रु-स्त्रियों का आश्चर्यजनक रूप दृष्टिगत होता है। ऐसा लगता है मानों वे स्वर्ण की लताएँ हों जिनमें मुखचन्द्र खिले हुए हैं, जिनके बीच कमलनेत्र सुशोभित हैं, जिनसे अश्रु-मकरन्द ढुलक रहा है।

काव्य सौष्ठव—आलंकारिकता-प्रधान छन्द है। गम्योत्प्रेक्षा तथा रूपकातिशयोक्ति अलंकार प्रधान हैं। उत्प्रेक्षा का वाचक-शब्द नहीं कहा गया है इससे गम्य अथवा लुप्तोत्प्रेक्षा है। केवल उपमानों का कथन अन्तिम चरण में है, उपमेय नहीं कहे गये, इससे रूपकातिशयोक्ति। प्रथम चरण में अतिशयोक्ति है। भाषा में माधुर्य गुण प्रधान है। अनुस्वार-युक्त ध्वनियाँ, ब, र, स आदि के अनुप्रास इस गुण को पुष्ट करते हैं। भयानक तथा अद्भुतरस प्रमुख हैं। प्रारम्भिक अंश में वीर भी है। सम्पूर्ण छन्द कलात्मक है।

४८

श्रीनगर के राजा तथा अन्य सारे भूपाल (औरंगजेब को) चमर, दुर्ग, शिकारी पक्षी कुही, बाज आदि के रूप में कर भेजते रहते हैं। उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बुन्देलखण्ड, वैद्यनाथ, रींवा आदि राज्यों के राजाओं ने अपना एकमात्र

कल्याण औरंगजेब की सेवा करने में ही समझा है। भूषण का कथन है कि पूर्व और पश्चिम दिशाओं के सभी राजे, राजाधिराज दिल्लीपति औरंगजेब की शरण प्राप्त करने के आकांक्षी हैं। किन्तु इस पृथ्वी पर शिवाजी की रीति कुछ और ही प्रकार की, सबसे विलक्षण है; उन्होंने सम्पूर्ण संसार को जीतनेवाले औरंगजेब को भी जीत लिया है।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के शौर्य का उदात्त वर्णन है। औरंगजेब के आतंक के भी ऊपर उनकी विजयश्री का वर्णन किया गया है। यह लोकोत्तरता उन्हें सामान्य जन से अलग करती है, इसे भेदकातिशयोक्ति अलंकार कहते हैं। 'न्यारी रीति' से उक्त अलंकार स्थिर होता है। वीररस की प्रधानता है। भाषा साहित्यिक तथा व्यावहारिक है। जुमिला, रसाल, इलाज, पनाह आदि विदेशी शब्दों का उपयुक्त तथा प्रभावशाली प्रयोग किया गया है। अनुप्रास संगठन में भी ये शब्द सहायक हैं (नरनाह, पनाह) ऐतिहासिक तथ्य को आलंकारिक शैली में व्यक्त किया गया है।

४९

भूषण कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी, हमारे विचार में तो तुम्हारी कृपा तथा क्रोध समान ही समझ पड़ते हैं। अपने मित्रों को आप गुणों से बाँध लेते हैं और शत्रुओं को रस्सी से। याचक जब आप के पैर पकड़ता है तब आप उसे नित्य दान दिलाते हैं और शत्रुओं को जब आप पकड़ पाते हैं तो उन्हें रुला देते हैं। कविगण जब आप के सम्मुख दोहा पढ़ते हैं तो आप उनका पालन करते हैं और जो शत्रु आप के सम्मुख हाहाकार करता है उसे क्षमा कर देते हैं।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी की दानशीलता तथा उदारता का आलंकारिक वर्णन है। हित और अनहित से जहाँ एक-सा व्यवहार किया जाय वहाँ तुल्य-योगिता अलंकार होता है। यहाँ पर मित्र और शत्रु के प्रति एक-सा, चमत्कार-पूर्ण वर्णन है। यमक के आधार पर यह वर्णन घटित हुआ है। द्वयर्थक पदावली पर ही सारा चमत्कार आश्रित है।

५०

जिस प्रकार स्त्री, पति के साथ ही शोभायमान होती है, अथवा रात्रि, चन्द्र

के साथ शोभा पाती है और बिजली वर्षा की मेंघ घटाओं से शोभित होती है, या, कीर्ति दान से, सुन्दर रूप ज्ञान से तथा प्रीति, सम्मान प्रदान करने से सुशोभित होती है अथवा शरीर आभूषणों से और कमलिनी प्रातःकालीन सूर्यदेव के प्रकाश से सुशोभित होती है, उसी प्रकार यह बात संसार में चारों ओर विदित है कि हिन्दू राष्ट्र को सुशोभित करनेवाले महाराज शिवाजी हैं।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के गौरव का आलंकारिक बर्णन है। दीपक अलंकार के आधार पर 'हिंदुआन खुमान सिवा सों लसै' के उपमान वाक्य हैं 'कामिनि कंत सो लसै' आदि। इस प्रकार उपमेय और उपमान वाक्यों का एक धर्म है 'लसै'—यह दीपक अलंकार है।

उक्त यश वर्णन में नीति, अनुभव, लोक-व्यवहार तथा प्रकृति का आधार लिया गया है अतः कलात्मकता के साथ ही उसमें जीवन की वास्तविकता भी है। भाषा में प्रसाद तथा माधुर्य गुण प्रमुख हैं। संगठन तथा प्रवाह भी स्पष्ट है। अनुप्रास तथा यमक का स्वाभाविक प्रयोग है।

५१

मस्तक पर मद जल को धारण किए हुए हाथी शोभा से युक्त लगता है और जल से परिपूर्ण मेघ भी शोभा को प्राप्त करता है। भूमि को धारण करने के कारण शेषनाग अत्यन्त शोभा से युक्त होते हैं और ग्रीष्म ऋतु का सूर्य तेज से परिपूर्ण होकर शोभा पाता है। तलवार को धारण करने वाले शोभायमान वीर भले लगते हैं और (भूषण का कथन है कि) गुण को धारण करने वाले लोग समाज को रुचते हैं। इसी प्रकार, दिल्ली का दलन करने से, दक्षिण देश को सहारा देने से और सदैव अपनी टेक की रक्षा करने के कारण शिवाजी सुशोभित होते हैं।

काव्य सौष्ठव—प्रतिवस्तूपमा-अलंकार की सहायता से शिवाजी के यश का आलंकारिक वर्णन है। उपमेय तथा उपमान वाक्यों के धर्म की एकता का कथन विभिन्न शब्दों द्वारा किया गया है। 'बर लागत', 'साजै', 'लसत', 'छाजै तथा 'बिराजै' शब्द एक ही अर्थ रखते हैं। शिवाजी बिराजते हैं और उनके उपमान भी उसी प्रकार सुशोभित हैं।

उपमानों का ग्रहण प्रकृति, पुराण तथा लोक-व्यवहार से किया गया है। क्षेत्र व्यापक तथा जीवनोपयोगी है। शैली ओज पूर्ण है। अधिकतर ह्रस्व ध्वनियों का प्रयोग है जिससे गति में तीव्रता आ गई है। शब्दावली भी ओज तथा प्रवाह-पूर्ण हैं। ३२ मात्राओं का लीलावती छन्द है।

५२

शिवाजी इतने दानी हैं कि कवियों से बिना काव्य सुने ही उन्हें घोड़ों के समूह दान कर देते हैं; उनसे कविता सुन कर उन्हें हाथी प्रदान करते हैं। भूषण कहते हैं कि संसार में शिवाजी महाराज की दान कीर्ति का गान करने के उपरान्त किसी दूसरे राजा की दानशीलता का वर्णन करना फिर नहीं भाता है। वैसे तो कितने ही राजा लोग याचकों को दान देते हैं किन्तु शिवाजी तो प्रसन्न होने पर निहाल ही कर देते हैं, जिस प्रकार नदी नद दूसरी ऋतुओं में थोड़ी बहुत वर्षा होने पर सरस, सजल, हो उठती हैं किन्तु उनमें बाढ़ तो वर्षाऋतु के आने पर हीं आती है।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी की दानवीरता का वर्णन है। दृष्टान्त अलंकार है। उपमेय शिवाजी तथा उपमान पावस ऋतु में समानता है; उपमेय का धर्म, उपमान के धर्म द्वारा प्रतिबिम्बित किया गया है, किन्तु वाचक पद नहीं है। वीर-रस के अन्तर्गत दानवीर का दान-विषयक उत्साह सफलता-पूर्वक व्यंजित हुआ है; नदियों की बाढ़ उपयुक्त उपमान है।

ऐतिहासिक दृष्टि से छन्द का आधार सत्य है। शिवाजी वास्तव में मुक्त-हस्त-दान करते थे। दूसरी ओर तत्कालीन दरबारी कवियों की प्रवृति भी लक्षित होती है। अपनी मंगन-वृत्ति स्वतः स्वीकार की गई है। प्रकृति से उपमान ग्रहण करने के कारण छन्द में मनोरमता है। भाषा भी मधुर सरल, स्वाभाविक है।

५३

भूषण कहते हैं कि औरंगजेब दुर्योधन से भी दुगुना भीषण था और उसने सम्पूर्ण जगत् को अपने छल-पूर्ण व्यवहार से व्याप्त कर रक्खा था। किन्तु, शाहजी के सुपुत्र, धर्मयुद्ध करने में वीर शिवाजी, तू धर्म करने में धर्मराज युधिष्ठिर से,

बल में भीम से, प्रतिज्ञा पालन में अर्जुन से, रूप सौन्दर्य में नकुल से तथा बुद्धि में सहदेव से भी बढ़ कर है; तूने दिल्ली जैसी प्रबल शक्ति को भी विवश बना डाला, तू पुरुषार्थ में पाण्डवों से भी श्रेष्ठ निकला। वे पाण्डव सूने लाक्षागृह से रात में छिप कर निकले यद्यपि वे संख्यामें पाँच थे किन्तु तू दिन के समय लाखों चौकी पहरों को पार करके अकेला ही (औरंगजेब के बंधन से) निकल आया।

काव्य सौष्ठव—पौराणिक आधार लेकर कवि ने शिवाजी के अनेक गुणों का एकत्र वर्णन किया है। पाँचों पाण्डवों का प्रमुख गुण शिवाजी में स्थित किया गया है। उपमान रूप पाण्डव हैं किन्तु उपमेय शिवाजी श्रेष्ठ हैं अतः कतिरेक अलंकार है। उक्त आलंकारिकता से कवि ने शिवाजी के चरित्र को अलौकिकता प्रदान कर दी है। शौर्य, धार्मिकता, शक्ति, प्रतिज्ञापालन, शारीरिक सौन्दर्य तथा बुद्धि बल के एकत्र वर्णन द्वारा कवि ने उन्हें पूर्ण मनुष्यत्व प्रदान किया है। लोकनायक तथा रक्षक के रूप में उनका वर्णन है।

अनुप्रास तथा यमक का स्वाभाविक तथा रुचिकर प्रयोग है। भाषा में माधुर्य तथा प्रसाद गुण खूब है। शैली ओजपूर्ण है। धर्मवीरता, बुद्धिवीरता के आधार पर युद्धवीरता का वर्णन है। वीररस ही प्रधान है।

५४

दरबार खास में औरंगजेब द्वारा दक्षिण की सूबेदारी दिए जाने पर दिल्ली के वजीर आमखास से निकले; उन्होंने आमखास और अपना आनन्द एक साथ ही छोड़ा। उसी के साथ तुरन्त ही, बिना किसी क्रम के, उनके हरम की मर्यादा भी समाप्त हो गई। उनके नेत्रों से आँसू तथा उनका धैर्य भी साथ ही साथ छूट पड़ा। उनके आनन्द की इच्छा तथा मुखमण्डल की शोभा के छूट जाने के कारण दोनों का रंग एक हो गया, दोनों फीकी पड़ गईं। भूषण कहते हैं कि हे पुरुष श्रेष्ठ शिवाजी! तुम्हारे आतंक से ये वजीर ऐसे शिथिल हो गए हैं कि इनके अंगों में शक्ति ही नहीं रह गई है। उन्हें दक्षिण की सूबेदारी क्या मिली है, उन्होंने अब फिर उत्तर भारत को लौटने और अपने प्राणों की आशा एक साथ छोड़ दी है।

काव्य सौष्ठव—सहोक्ति अलंकार के द्वारा शिवाजी के आतंक का सुन्दर वर्णन कवि ने किया है। भयानक रस है। भय के कारण 'छूटने' की क्रिया अनेक स्थानों पर एक साथ घटित होती है। वजीर की दीनता उपहासास्पद बन कर 'विनोद' संचारी के रुप में दृष्टिगत होती है। 'दैन्य' संचारी तो स्पष्ट ही है। भाषा व्यवहारिक तथा साहित्यिक है। विदेशी शब्दों का सफल प्रयोग है। प्रसाद गुण प्रधान है।

५५

अपनी कीर्ति को पुनः नवीन करते हुए, घोड़े पर सवार होकर, शिवाजी ने बीजापुर के सरदार घोरपड़े की बाजी को शक्तिहीन कर दिया और उसे बिना घोड़ों के कर दिया, घोड़े छीन लिए। भूषण कहते हैं कि भोंसले वंश के भूपाल शिवाजी के आतंक से कुतुबशाह (गोलकुंडा के शासकों) का भी हृदय धड़क उठेगा, वे धैर्य न धारण कर सकेंगे। उदयभानु तथा अमर ओर सुजान सिंह, इन दोनों के बिना अर्थात् इनका वध अथवा पराभव करके शिवाजी ने दिल्लीश्वर का महत्त्व मर्यादा रहित कर दिया है। शाहजी के पुत्र, शक्तिशाली शिवाजी मिल कर चले बिना, कौन ऐसा बादशाह है जिसकी प्रभुता नष्ट न से हो गई हो?

काव्य सौष्ठव—ऐतिहासिकता प्रधान छन्द है। घोरपड़े को शिवाजी ने सन् १६४८ में, कुडाल (बम्बई प्रान्त) में परास्त किया था। इसके अतिरिक्त अन्य ऐतिहासिक घटनाओं का भी संकेत हुआ है। इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तियों का भी उल्लेख है। आतंक का वर्णन है। वीर तथा भयानक रसों से पूर्ण वर्णन है। भाषा में मुहाविरों का सफल प्रयोग है। चलती हुई, व्यावहारिक भाषा की पराधीनता है। लाक्षणिकता के कारण रोचकता बढ़ गई है। विनोक्ति अलंकार है, जिसमें किसी वस्तु की अनुपस्थिति में हीनता अथवा श्रेष्ठता वर्णित की जाती है। यहाँ सहायकों की अनुपस्थिति में औरंगजेब की हीनता वर्णित है इसी प्रकार शिवाजी की सलाह की अनुपस्थिति में बादशाही की हीनता वर्णित है। आलंकारिकता का रूप स्वाभाविक है।

५६

भूषण कहते हैं कि हे अज्ञानी बहलोल खाँ, शिवाजी के सम्मुख पड़ने पर तेरी रक्षा नहीं हो सकती इसलिए मेरे निषेध-वचनों को अपने मन में लाकर उन पर विचार कर ले। जिस समय सल्हेर के पास तेरे ही एक भाई (जाति भाई, सहायक, इखलास खाँ) को शिवाजी ने बन्दी बनाया तब तेरा कोई वीर नहीं गरज सका। जो राजाओं का भी महाराज औरंगजेब है और तू जिसकी चाकरी बजा रहा है, जिसकी प्रजा है, उसी के गढ़ों को शिवाजी ने छीन लिया है। वही शाहजी का पुत्र, अफजल खाँ को पदमर्दित करनेवाला, दिल्ली की सेनाओं को परास्त करनेवाला, महाराज शिवा आ गया है (सावधान हो जा)।

काव्य सौष्ठव—इतिहास तथा आलंकारिकता का सुन्दर समन्वय है। छन्द का आधार ऐतिहासिक तथ्य हैं और शिवाजी के आतंक का वर्णन-परिकर अलंकार के द्वारा किया गया है। इस अलंकार में ऐसे विशेषणों का प्रयोग होता है जिनका सम्बन्ध पद की क्रिया से होता है। छन्द के अन्तिम चरण में शिवाजी के ऐसे ही विशेषणों को एकत्र किया गया है। इनसे शिवाजी की विजयशीलता सूचित होती है और बहलोल के लिए निश्चित पराजय।

भाषा की प्रकृति खड़ी बोली की ओर झुकी हुई। बचैगा, तेरा भाई, जिसका, आया, आदि खड़ी बोली के प्रयोग हैं। मुसलमान पात्रों के सानिध्य में यह भाषा स्वाभाविक लगती है। अनुप्रास के सफल प्रयोग से भाषा में प्रवाह भी आ गया है। मुहाविरों का भी व्यावहारिक रूप दिखलाई पड़ता है। ओज तथा प्रसाद गुण प्रमुख हैं।

५७

[शिवाजी पक्ष] जिसके संग श्री शोभित है; श्रेष्ठ लक्षण (गुण) जिसके सहायक हैं; जिसका नाम ही पृथ्वी पर लोगों का भरण-पोषण करता है और जिसे सुनीति ही भाती है। जो शूरों के ही कुल का और कुलभूषण है, बड़े-बड़े रथारोही जिसके दास हैं और जिसकी बाहुओं पर पृथ्वी का भार है। जो शत्रु की कमर को प्रबलता के साथ तोड़ता है और जिसके साथ सदा बाण रहते हैं, जिसके यहाँ

हाथी बँधे रहते हैं और जिसके बल का पार नहीं है। जो शत्रु से तलवार द्वारा ही भेंट करता है और जो लोक पीड़कों को मर्दित करनेवाला प्रख्यात है, वही महाराज शिवाजी राम के अवतार हैं।

[राम पक्ष] जिनके साथ सीताजी सुशोभित हैं, श्रेष्ठ लक्ष्मण जिनके सहायक हैं, पृथ्वी पर जिनके भरत जैसे भाई हैं और जिनकी नीति अत्यन्त श्रेष्ठ है। जो सूर्य कुल के हैं और कुल भूषण हैं, जो दशरथ के पुत्र हैं और जिनकी भुजाओं पर सम्पूर्ण पृथ्वी का भार है। जो जोर के साथ शत्रु की लङ्का को तोड़ते हैं और जिनके साथ सदैव बानर रहते हैं, जिन्होंने सिन्धु को बाँध रखा है और जिनका बल असीम है। भेंट होने पर जो (राक्षसों को) पकड़कर अपने दानव दलन नाम को सार्थक कर देते हैं, ऐसे भगवान् राम के महाराज शिवाजी अवतार हैं।

काव्य सौष्ठव—श्लेष अलंकार के माध्यम से शिवाजी की यश-प्रशस्ति की गई है। द्वयर्थक शब्द हैं, अभङ्ग तथा भङ्ग पद श्लेष। शब्द चमत्कार प्रधान है। कलात्मक छन्द है। मर्यादा रक्षक के रूप में शिवाजी का चित्रण है।

५८

राजाओं को सबक पढ़ा देनेवाले, सैनिकों के भी शासक और युद्ध में सिंह-विक्रम प्रदर्शित करनेवाले (औरंगजेब जैसे वीर पुरुष) भी शिवाजी के आतंक से काँपते रहते हैं, उनके मन में कभी उत्साह उत्पन्न नहीं होता। अफजलखाँ की दुर्दशा, शाइस्ताखाँ की मर्यादा तथा बहलोलखाँ की विपत्तियों को देखकर सारे अमीर-उमरा डर गए हैं। मुसलमान मनसबदार तो दृढ़ निश्चयपूर्वक, यह स्पष्टीकरण देते हुए कि हम (तीर्थ करने) मक्का जा रहे हैं, सागर पार करके देश छोड़ रहे हैं।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी का आतंक वर्णन। भयानक रस प्रमुख है। विनोद वृत्ति संचारीरूप में दृष्टिगत होती है। उमरावों की कायरता, दीनता तथा शाह की चिन्ता, उद्वेग आदि भी संचारी हैं। सरदारों की दुर्दशा आदि का स्मरण उद्दीपन है। बहाने से अपना कार्य सिद्ध करने के कारण पर्यायोक्ति अलंकार है। प्राण बचाने के लिए मक्का जाने का बहाना।

ऐतिहासिक तथ्यों का संकेतात्मक कथन है। शैली में ओज तथा प्रसाद गुण प्रधान हैं। मुहाविरेदार, चलती हुई भाषा का प्रयोग है। प्रभावशालिता तथा प्रवाह समानरूप से देखे जा सकते हैं।

५९

यदि आप हमें पीली-पीली अशर्फियाँ मँगाकर देते हैं तो हमसे भी परख-परख कर सुवर्ण (सुन्दर काव्य) ले लेते हैं। लोग तो पलभर में ही रूखों (वृक्षों) से लाख छुड़ा लेते हैं परन्तु आप इतने बड़े राजा होकर भी लाख रुपये देते समय बड़ी सावधानी बरतते हैं। भूषण कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी, पता नहीं किस कारण से आप दुनियाँ में इतने बड़े दानी प्रसिद्ध हो गये हैं? सभी तो प्रसन्न होकर हँसते हुए हमको हाथी देते (हाथ मिलाते) हैं, क्या एक आप ही ऐसे हैं जो प्रसन्न होकर हँसते हुए हमें हाथी दे देते हों?

काव्य सौष्ठव—व्याज स्तुति अलंकार की सहायता से कवि ने शिवाजी की उदारता, सहृदयता तथा दानवीरता का वर्णन किया है। श्लेष का आधार प्रमुखरूप से लिया गया है। सुवरन, रूख, लाख, हाथी श्लिष्ट शब्द हैं। अभिधा से निन्दात्मक अर्थ आता है किन्तु व्यंजित होता है प्रशंसात्मक अर्थ। छन्द में आलंकारिकता ही प्रधान है। शृङ्गार युग की कलात्मक शैली स्पष्ट है। भाषा मुहाविरेदार तथा चलती हुई है। लोकजीवन के सामान्य दृश्य तथा व्यवहार आधार रूप में लिए गए हैं। लखेरे पीपल के पेड़ों पर से लाख छुड़ा कर उनकी चूड़ियाँ, गोलियाँ आदि बनाते हैं। प्रसन्न होकर हाथ मिलाना प्रचलित व्यवहार है।

६०

औरंगजेब के वजीर उससे इस प्रकार निवेदन करते हैं: पूर्व, उत्तर तथा अत्यन्त बलशाली पश्चिम दिशा के निवासी, कितने ही बादशाहों को परास्त करके हम उनके दुर्ग छीन लेते। पुर्तगाल विजय करने के लिए हम सागर भी पार कर जाते। आप हमको महाराज शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए दक्षिण भेजते हैं, तो श्रीमन्! हम मरने से नहीं डरते (भले ही शिवाजी के

सम्मुख हमारे प्राण न बचें), हम तो सेवक हैं, आज्ञा का रत्ती भर भी प्रतिवाद न करेंगे, (बस इतना ही कहते हैं) कुछ दिन हमारे प्राण और बचे रहते तो हम आप के बहुत से कार्य करते।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के प्रबल शौर्य तथा मुसलमान सरदारों के भय का विनोदपूर्ण वर्णन है। सम्राट् को प्रलोभन देकर अपने प्राणों की रक्षा करने के प्रयत्न में मनोवैज्ञानिकता भी है। वजीरों की डींग और उनका प्राण-रक्षा के बहाने बनाना उन्हें उपहासास्पद बना देता है; यह हास्य का संचारी रूप है। भयानक रस ही प्रमुख है। निषेधाक्षेप अलंकार द्वारा यहाँ पर वजीरों का, शिवाजी से युद्ध करने जाने के प्रति, प्रतिवाद किया गया है। यह द्वितीय आक्षेप या निषेधाक्षेप अलंकार कहलाता है।

भाषा सुसंगठित, प्रवाहपूर्ण, मुहाविरेदार है। विदेशी, प्रचलित शब्दों का प्रयोग भाषा में स्वाभाविकता उत्पन्न करता है। अनुप्रास का भी स्वतः सिद्ध प्रयोग है।

६१

सच्चा दक्षिण-नायक एक तू ही है यद्यपि पृथ्वी रूपी स्त्री को तू अनुकूल नायक के समान प्रिय है। इस पृथ्वी पर तेरे समान दीन-दयालु नहीं है परन्तु यवनों के दीन को तू मार कर मिटा देता है। कवि भूषण कहते हैं कि हे शिवाजी तेरे इस विलक्षण स्वरूप को कोई भी नहीं समझ पाता, तू इतना अद्भुत है। सूर्य-वंश में, वीर-शिरोमणि रूप में, उत्पन्न होकर भी तू कुलचंद कहलाता है !!

काव्य सौष्ठव—इस छन्द का सौष्ठव विरोधाभास अलंकार पर आश्रित है। सुनने में विरोधी प्रतीत होने वाले कथन वास्तव में विरोधी नहीं हैं यही इस छन्द का चमत्कार है। श्लेष की सहायता से यह आलंकारिकता उत्पन्न की गई है। शब्दार्थ के अन्तर्गत श्लेषार्थ स्पष्ट किया गया है। शिवाजी के बीर, यशस्वी रूप को व्यक्त करने के लिए शृंगार, दयावीर, धर्मवीर अद्भुत भावों की सहायता ली गई है। कला प्रधान, आलंकारिक छन्द है।

६२

दक्षिणा का सूबेदार शाइस्ता खाँ, दक्षिण देश पर अपनी धाक जमा कर और अपनी तलवार को दूना बलशाली बना कर, पूना में आ जमा। हिन्दूराष्ट्र के आधार, अनेक दुर्गों के स्वामी तथा सेनाओं को संचालित करने वाले तथा युद्ध करने में दृढ़ महाराज शिवाजी ने उस शाइस्ता खाँ से युद्ध करके असीम यश अर्जित किया। उन्होंने बड़े-बड़े मनसबदारों तथा रक्षकों को परास्त कर दिया और शाइस्ता खाँ के महलों में महाभारत जैसा भारी युद्ध मचा दिया। भूषण कहते हैं कि हे शिवाजी, तुमने केवल दो सौ आदमियों को साथ लेकर सौ हजार (एक लाख) सवारों को जीत लिया, तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है ?

काव्य सौष्ठव—उक्त छन्द का आधार ऐतिहासिक सत्य है। १६६३ ई० में शिवाजी ने केवल दो सौ सैनिक लेकर शाइस्ता खाँ की विशाल सेना को पूना में हराया था। शाइस्ता खाँ को भाग कर प्राण बचाने पड़े थे।

शिवाजी की युद्ध वीरता का ओज पूर्ण वर्णन आलंकारिक शैली में हुआ है। दो सौ व्यक्तियों की सहायता से लाख आदमियों को हराना, अपूर्ण कारण से कार्य पूर्ण करना है, यह भावना अलंकार है। ओज और प्रसाद-गुण प्रमुख हैं। भाषा में मुहाविरों का सुन्दर प्रयोग है। प्रवाह और संगठन विशेष रूप से देखे जा सकते हैं। शब्द-चयन द्वारा भी भाषा में प्रभाव तथा व्यावहारिकता उत्पन्न की गई है।

६३

धर्मवीर शिवाजी जिस दिन युद्ध करने के लिए थोड़ा भी उत्साह प्रदर्शित करते हैं उस दिन सारे संसार के दुष्टों में खलबली मच जाती है। उनके नगाड़े सुन कर शत्रुओं के घरों को छोड़कर, स्त्रियाँ ऐसे भागती हैं कि दरवाजे भी नहीं देखतीं। उनके बालक घर ही में रह जाते हैं; बाल खुल जाते हैं; बालों में गुँथे लाल छूट-छूट कर गिरने लगते हैं—भूषण सुकवि इस दृश्य का वर्णन करने में बड़े आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। शत्रु-नगरों में इस दृश्य के घटित होने के कारण उत्पात होना स्वाभाविक ही है क्योंकि काले घनों के उमड़ने से लाल अँगारों की वृष्टि अस्वाभाविक घटना है और इसलिए उत्पात की सूचक है।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के आतंक का आलंकारिक तथा चमत्कारपूर्ण वर्णन है। मेघ से अँगारे बरसना अनुपयुक्त कारण से कार्य की उत्पत्ति है, यह विभावना अलंकार है। वीर में अद्भुत संचारी रूप में प्रयुक्त हुआ है, इस से चमत्कार की सृष्टि होती है। स्त्रियों की व्याकुलता, अधैर्य, भय, आदि संचारी भाव हैं। भाषा ओजपूर्ण तथा अनुप्रासमयी है, यमक का भी प्रयोग है।

स्त्रियों की दुर्दशा पर हर्षित होकर वर्णन करना शील, मर्यादा का उल्लंघन है; यह शोभनीय नहीं लगता।

६४

उत्सव के अवसर पर औरंगजेब अपने सारे दरबारियों सहित सुसज्जित होकर इस प्रकार बैठा कि यदि उस समय इन्द्र भी आता तो उसकी प्रजा के समान जान पड़ता। उस स्थान पर शिवाजी ने गर्जना आरम्भ कर दी और वहाँ का प्रबन्ध देखकर रत्तीभर भी न घबड़ाया। न तो उसने औरंगजेब को सलाम ही किया और न उसकी आज्ञा ही स्वीकार की। उसने इतनी धूमधाम मचा दी कि कुँवर रामसिंह के मना करने पर भी न माना। सभी दिशाओं के राजा जिससे मेल करके अपनी रक्षा करते हैं उसीसे शत्रुता करके उसके सिंहासन के निकट से महाराज शिवाजी चले आए।

काव्य सौष्ठव—उपर्युक्त घटना सन् १६६६ ई० की है और औरंगजेब के जन्मोत्सव के दरबार में, आगरे में, घटित हुई। शिवाजी का उपयुक्त रीति से स्वागत नहीं हुआ, उन्हें नीची श्रेणी के सरदारों में खड़ा किया गया, उनकी उपेक्षा हुई। वे क्रोधित होकर गरजने लगे और खिलअत पहनना अस्वीकार कर दिया। अत्यन्त क्रोधित होकर वे मूर्छित हो गये और दरबार से बाहर लाए गए। यह सब ऐतिहासिक सत्य है।

रौद्ररस की प्रधानता है। शिवाजी के क्रोध का वीर-संयुक्त वर्णन है। औरंगजेब के दरबार में इस प्रकार की घटना असंभावित सी है, किन्तु यह घटित हुई, यह असंभव अलंकार है। भाषा में अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग है, इससे शाही दरबार का वातावरण स्वाभाविक रूप में बनता है। ओज और प्रसाद गुण प्रधान हैं।

६५

जिस समय महाराज शिवाजी घोड़े पर चढ़ते हैं उस समय अत्यन्त बलवान् शत्रुओं की गरदन झुक जाती है। जब उनकी सेना पृथ्वी पर चलती है तब सम्पूर्ण दुष्टों की छाती पूर्णतया फट जाती है। जब वह दौड़कर अमीर उमरावों पर प्रहार करते हैं तो सारी दिल्ली की सेना की मानों नाक ही कट जाती है और जिस समय सूरत को भस्म करके उन्होंने बादशाह के हृदय में ज्वाला उत्पन्न की उस समय (जलने के बाद की) सारी कालिमा उसकी बादशाही सत्ता के मुख पर पुत गई।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के शौर्य तथा आंतक का आलंकारिक वर्णन। असंगति अलंकार का सुन्दर उदाहरण है। कारण कहीं है और कार्य कहीं होता है। चारों चरणों में स्पष्ट उदाहरण हैं—अन्तिम चरण में जलता है सूरत नगर, दाह होता है बादशाह के हृदय में और कालिख लगती है बादशाही अधिकार के मुख पर।

भाषा में प्रवाह तथा व्यवहारिकता है। मुहावरों, लाक्षणिक प्रयोगों तथा विदेशी शब्दों के प्रयोग से स्वाभाविकता तथा मार्मिकता आ गई है। भयानक, वीर तथा रौद्र भावों की प्रधानता है। प्रसाद और ओज प्रधान गुण हैं।

६६

पंचहजारी मनसबदारों के बीच उसे स्थान दिया गया किन्तु उसके क्रुद्ध होने का कुछ उद्देश्य नहीं ज्ञात हो सका, ऐसा कह कर औरंगजेब अपने वजीरों से बहुत अधिक असंतुष्ट हुआ। उसे (रामसिंह ने) कमर की कटारी नहीं दी और मेरे नाम के प्रभाव ने इस दीवाने खास की रक्षा कर ली। शिवाजी अवश्य ही बड़ा उपद्रव मचाता और अनर्थ कर देता; यह भला ही हुआ कि उसके हाथ हथियार नहीं आया [यह औरंगजेब का कथन है]।

काव्य सौष्ठव—एक ऐतिहासिक दृश्य का चित्रण है। आगरे में औरंगजेब की ५० वीं वर्ष गाँठ के अवसर पर (सन् १६६६ ई०) यह घटना हुई। शिवाजी को अधिक सम्मान मिलने की आशा दिलाई गई थी; पंचहजारी मनसब

पाकर वह कुपित हुआ, हल्ला मचाने लगा और जसवंतसिंह जोधपुर नरेश को जो औरंगजेब के बड़े कृपापात्र थे, मारने के लिए रामसिंह से कटार माँगने लगा। बड़ी कठिनता से उसे शान्त किया जा सका।

औरंगजेब के भय का सफल वर्णन किया गया है। रौद्र रस प्रधान है; शिवाजी का क्रोध स्थायी भाव है। औरंगजेब आलंबन है। भय संचारी है। शिवाजी का कटार खोजना आदि अनुभाव हैं।

भाषा व्यावहारिक तथा प्रवाह पूर्ण है। विदेशी शब्दों का भी प्रयोग सफलता पूर्वक किया गया है—खड़ी बोली के क्रिया-पद तथा विभक्त चिह्न प्रयुक्त हुए हैं। मुसलमानी वातावण अंकित करने के लिए इसका प्रयोग हुआ है।

सम अलंकार है। कटारी नहीं मिली, अनर्थ नहीं हुआ, गुंसलखाना बच गया इत्यादि में उचित सम्बन्ध है। ओजपूर्ण स्वाभाविक दृश्य चित्रण है।

६७

बीजापुर के आदिलशाह ने बेदर, कल्याण से लगाकर परेंडा आदि दुर्ग तक शिवाजी को देकर उन्हें गँवा दिया और मस्तक झुका कर हार मान ली। कुतुब-शाह ने भी हैदराबाद तथा रामगिरी पर्वत प्रदेश शिवाजी को देकर गँवाया। भोंसले वंश के रारा शाह जी के पुत्र, गढ़ों के स्वामी (शिवाजी) ने मुसलमान शासकों से पैंतीस दुर्ग विजय करने में दो दिन भी नहीं लगाए। किन्तु हे महाराज सवाई शिवाजी, तुझे यश सौगुना प्रिय था और उसे लेने के लिए तूने दुर्गों को दिल्लीश्वर को दे दिया।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के यश-विस्तार का ऐतिहासिक तथा आलंकारिक वर्णन है। जयसिंह ने औरंगजेब की ओर से युद्ध करके शिवाजी को बहुत परेशान किया था और सन् १६६५ ई० में पुरंदर की संधि के अनुसार, शिवाजी को अपने २३ दुर्ग उन्हें दे देने पड़े थे।

विचित्र अलंकार है जहाँ प्रयत्न से विपरीत फल की आकांक्षा होती है। गढ़ देकर यश प्राप्ति की आकांक्षा विपरीत फलाशा है। थोड़ा देकर बहुत प्राप्त करने की आकांक्षा परिकृत अलंकार है। ३५ गढ़ देना और सौगुनी कीर्ति लेना। अनुप्रास का भी स्वाभाविक प्रयोग है। भाषा सुसंगठित है।

शिवाजी का एक नीतिज्ञ के रूप में चित्रण है। दुर्ग देकर आगे की युद्ध-नीति के लिए अवसर खोजना उनका अभीष्ट है।

६८

शाहजी के पुत्र महाराज शिवाजी की कीर्ति पृथ्वी की अन्तिम सीमा तक चारों ओर श्वेत चाँदनी के चँदोवे के समान तनी हुई है। वह भोंसले वंश के ऐसे भूपति हैं जिनका द्वार भिक्षुकों को सदैव प्रिय रहता है। इस पृथ्वी पर आयुष्मान् शिवाजी इतने महान् दानी हैं कि उनकी दान-गाथा का बखान इस प्रकार किया जा सकता है—उनसे चाँदी की इच्छा करने पर सोना प्राप्त होता है और घोड़ों की इच्छा करने पर हाथी प्राप्त होते हैं।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी की दानवीरता का वर्णन है। उनका दान विषयक उत्साह स्थायीभाव है। भिक्षुक, याचक आलंबन हैं। भिक्षुकों की भीड़, यश-विस्तारादि उद्दीपन हैं। राजविषयक रति-भाव प्रमुख हैं। शिवा की प्रशंसा अभीष्ट है।

प्रहर्षण अलंकार के द्वारा अभीप्सित वस्तु से अधिक प्राप्ति का वर्णन है। अनुप्रास का स्वाभाविक प्रयोग है। भाषा में प्रवाह की सृष्टि इसके द्वारा होती है। प्रसाद तथा माधुर्य गुण भी स्पष्ट हैं। यद्यपि दान का काव्यात्मक, अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन लगता है तथापि शिवाजी की इस प्रकार की दानशीलता ऐतिहासिक सत्य है।

६९

शिवाजी के राज्य में केवल हाथियों में ही मदोन्मत्तता दृष्टिगत होती है। चंचलता की प्रकृति केवल घोड़ों की ही है। वहाँ पंख केवल बाणों में ही लगाए जाते हैं, अन्यथा कोई किसी का शत्रु नहीं है। वहाँ केवल कोक पक्षी ही बिछुड़ते है अन्यथा किसी के बीच भेद नहीं पड़ता। जहाँ केवल गुणीजन ही चोर हैं और वह केवल चित्त ही चुराते हैं। वहाँ केवल शिवाजी के गुणों की प्रीति की डोरी ही एक मात्र बंधन है। वहाँ कोई भी भय से नहीं काँपता, केवल केले का वृक्ष काँपता है और बैर के दर्शन बेर के वृक्ष में ही होते हैं—ऐसी है न्याय-प्रिय शिवाजी के राज्य की राजनीति !!

काव्य सौष्ठव—राजनीतिज्ञ शिवाजी की कुशल शासन व्यवस्था का आलंकारिक वर्णन है। परिसंख्या अलंकार प्रमुख हैं; अनेक वस्तुओं के धर्मों, गुणों, का केवल एक स्थान में वर्णन परिसंख्या कहलाता है। काव्य कला प्रदर्शन का इसमें अच्छा अवसर रहता है। रीतिकालीन परम्परा का यह छन्द अच्छा उदाहरण है। प्रसाद और माधुर्य गुण प्रमुख हैं। भाषा प्रवाह पूर्ण, कलात्मक तथा व्यावहारिक है।

७०

देश-देश के राजाओं की पत्नियाँ उन्हें दया-पूर्वक यह शिक्षा देती हैं कि हमारे इस परामर्श को मन में धारण करो; तुम दाँतों में तृण दबा कर शिवाजी के सम्मुख दीनता प्रदर्शित करो, हे कान्त ! तुम्हें अनेक बड़ी से बड़ी शपथें हम दिलाती हैं। तुम चाहे दुर्ग में छिपो, चाहे वन के भीतर शरण लो, चाहे अपनी प्रभुता का प्रदर्शन करते हुए सेना एकत्र करो। चाहे और करोड़ों मार्ग क्यों न पकड़ो, शिवा से सन्धि किये बिना तुम्हारी रक्षा असम्भव है।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के प्रभाव की व्यापकता का आलंकारिक चित्रण है। या तो यह करो, या यह करो, इस प्रकार विकल्प अलंकार के द्वारा शिवा को ही अन्तिम आश्रय ठहराया गया है। स्त्रियों के द्वारा उपदेश दिलाना, उपदेशक की आत्मीयता, हित-चिन्ता-वृत्ति को सूचित करता है; साथ ही स्पष्ट-वादिता तथा कटुता का परिहार भी हो जाता है।

शिवाजी की प्रभुता का वर्णन है—राज-विषयक रति-भाव कवि के द्वारा व्यक्त हुआ है। भाषा में प्रवाह तथा संगठन है। अनुप्रास का सफल प्रयोग है।

७१

शिवाजी तो वैर करना ही चाहते थे तब तक शत्रु (अफजल खाँ) ने कठोर कटार से शिवा पर आघात कर दिया। ऐसे ही महाराज शिवाजी म्लेच्छ को नहीं छोड़ते, इस समय तो उनका मन रोष से परिपूर्ण था। अपनी ओर से उपद्रव आरम्भ करके अफजल ने सिंह का पंजा उमेठ दिया था, तब भला उसकी रक्षा कैसे होती। बिछुए के आघात से वह शीघ्रता से गिरने-गिरने हुआ कि तलवार का धक्का देकर शिवाजी ने उसे दबा लिया।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी द्वारा अफजल-वध प्रसिद्ध, ऐतिहासिक सत्य है। यह घटना सन् १६५९ ई० में जावली (जिला सतारा) के निकट प्रतापगढ़ दुर्ग के पास हुई थी। वर्णित घटना प्रायः यथारूप सत्य है।

छन्द में दृश्य-वर्णन की रोचकता है। नाटकीयता का भी समावेश है। क्रोध तथा उत्साह का ओजपूर्ण वर्णन है। ट, ठ, ध आदि वर्णों से परुष भाव की अभिव्यंजना की गई है। मुहाविरों का सफल प्रयोग है।

प्रत्येक चरण में समाधि अलंकार है। यह तो था ही, यह भी हो गया, जिससे कार्य सरल हो गया। कर्ता को दूसरा कारण भी मिल गया जिससे कार्य-सिद्धि में सुगमता हुई। यही 'समाहित' अलंकार भी कहा जाता है।

७२

बिना चतुरंगिणी सेना के, केवल वानरों को साथ लेकर, सागर को बाँधकर, श्रीराम ने लङ्का को भस्म कर दिया। विराट् राजा की नगरी में अज्ञातवास करते हुए पाण्डवों में से पार्थ (अर्जुन) ने अकेले ही द्रोण और भीष्म को जीत कर यश प्राप्त किया। भोंसले वंशज शिवाजी, तूने दीवाने-खास में औरंगजेब की प्रभुता और बादशाही को बिना हथियार के हिला डाला! किन्तु इस घटना के ऊपर भी क्या आश्चर्य करना! क्योंकि वीरों का तो साहस ही उनका हथियार होता है।

काव्य सौष्ठव—राम और कृष्ण की पौराणिक परम्परा में रखकर शिवाजी के महापुरुषत्व को सिद्ध किया गया है। अर्थान्तर न्यास अलंकार की सहायता से राम, कृष्ण तथा शिवाजी के उदाहरण द्वारा वीरों की साहस-पूर्णता प्रमाणित की गई है। ऐतिहासिक सन्दर्भ का संकेत है।

भाषा अनुप्रासमयी तथा मुहाविरेदार है। 'हथ्थर' जैसे शब्द प्राकृताभास हिन्दी की झलक देते हैं। ओज तथा प्रसाद गुण प्रधान हैं। प्रथम चरण में माधुर्य तथा प्रवाह विशेष हैं।

७३

मानसरोवर में निवास करने वाले हंसों के समूह भी (शिवाजी के यश) की समानता नहीं कर सकते; चंदन के साथ घिसा हुआ कपूर भी एक घड़ी नहीं

ठहरता। नारद की सात्विक तथा सरस्वती की शुभ्र हँसी भी उसकी समानता नहीं कर पाती और शरद् ऋतु निर्मल गंगा का श्वेत कमल भी उसकी समानता नहीं करता। इन्द्र का श्वेत हाथी ऐरावत बार-बार क्षीर सागर में डूब-डूब कर थक गया, उसका शरीर फेन से लिप्त हो गया किन्तु उसे शिवा के यश के समान कौन कहे ? श्वेत कैलाश में श्वेत शंकर हैं और उनके शीश पर चन्द्रमा है; वह भी पृथ्वीपति शिवाजी के यश का भागीदार नहीं बन सकता।

काव्य-सौष्ठव—शिवाजी के यश की शुभ्रता का अलौकिक वर्णन है। अद्भुत भाव विशेष व्यक्त होता है। शिवाजी के यश के उपमान अपनी विशेष स्थिति के कारण श्वेतता के प्रतीक हैं। कैलाशवासी शिव स्वयं शुभ्र वर्ण के हैं, उनके मस्तक का चन्द्र विशेष श्वेत होना चाहिए यह कल्पना प्रौढ़ोक्ति अलंकार है। चमत्कार पूर्ण शैली में यशः प्रशस्ति की गई है; पौराणिकता का आधार स्पष्ट है। भाषा व्यावहारिक है; थाह लेना, लोक भाषा का मुहाविरा है, 'सरीक' विदेशी शब्द है। अनुप्रास के स्वाभाविक प्रयोग से भाषा में लालित्य तथा प्रवाह आ गया है। प्रसाद तथा माधुर्य गुण प्रधान हैं।

७४

यदि किसी उपाय से लोमश ऋषि जैसी दीर्घ आयु प्राप्त हो सके, और उसी के साथ-साथ कर्ण जैसा अक्षय कवच धारण किया जा सके; इतने पर भी हजार बाहुएँ हों और उससे भी बढ़कर, भीम से भी हजार गुना साहस हो, दूसरा कोई उपाय न रह गया हो और जीवन व्यर्थ ही न व्यतीत हो रहा हो, तो, उमराव औरंगजेब से कहते हैं, हम शिवाजी से जाकर लड़ें और व्यर्थ ही दक्षिण में प्राण दें।

काव्य सौष्ठव—पौराणिक आधार पर शिवाजी के असीम शौर्य का वर्णन किया गया है। दीर्घायु, अक्षय शरीर, असीम साहस आदि गुणों के प्रतीक रूप में क्रमशः लोमश, कर्ण, भीम को उपस्थित किया गया है।

इतना सब हो तो शिवाजी से युद्ध किया जाय, इस प्रकार का कथन सम्भावना अलंकार के अन्तर्गत आता है। मुहाविरों के प्रयोग ने भाषा को

स्वाभाविकता प्रदान कर दी है। शब्दावली भी व्यावहारिक है। उर्दू के शब्दों का मिश्रण है।

उमराव के भय तथा आतंकपूर्ण भाव का विनोदपूर्ण वर्णन है। ओज और प्रसाद गुणों की प्रधानता है।

७५

सरस्वती (वाणी) की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से है अतः उसे तीनों लोकों में अत्यन्त पवित्र माना गया। इसके उपरान्त भगवान् राम तथा धर्मराज युधिष्ठिर का वर्णन करने के कारण वह वाणी वाल्मीकि तथा व्यास के साथ सुशोभित हुई। विक्रमादित्य तथा भोजराज जैसे यशस्वी राजाओं का गुणगान करने के कारण भी उसकी पवित्रता को जगत् ने जान लिया। वही श्रेष्ठ वाणी, अत्यन्त पुण्यवान् तथा पवित्र महाराज शिवाजी को आशीर्वाद देकर स्वतः पवित्र हो गई।

काव्य सौष्ठव—वाणी की पवित्रता में और भी अधिक वृद्धि का वर्णन है—जहाँ गुण में अधिकाधिक वृद्धि होती है वहाँ अनुगुण अलंकार होता है।

आलंकारिक शैली में शिवाजी की यशः प्रशस्ति है। भाषा में माधुर्य की प्रधानता है। अनुप्रास के प्रयोग से प्रवाह की सृष्टि हुई है। सांस्कृतिक तथा पौराणिक घटनाओं के वर्णन में कवि ने यथाशक्य विदेशी शब्दावली का प्रयोग नहीं किया है। प्रस्तुत छन्द इस तथ्य का उदाहरण है। पवित्र वातावरण की सृष्टि, ऐसी भाषा का उद्देश्य है।

७६

हे औरंगजेब ! दिल्ली की सम्पत्ति प्राप्त करके तू संसार का स्वामी कहलाया परन्तु तू ने अपने पूर्वज बाबर और अकबर के यश को भुला दिया। महाराज शिवाजी से बार-बार युद्ध करके तू ने अपने अत्यन्त सुदृढ़ दुर्ग हार दिए। व्यर्थ ही बड़े-बड़े सरदारों को युद्ध में भेज कर उन बेचारों को तू ने मरवा दिया यद्यपि तेरा एक भी काम नहीं पूरा हुआ। अब (भूषण कहते हैं) मेरे कहने से तू

उनसे मेल कर ले, क्योंकि उनसे बैर करके और उन्हें गैर बना कर तूने व्यर्थ ही अपने नगरों को उजाड़ दिया है।

काव्य सौष्ठव—प्रस्तुत छन्द में कवि ने अपनी नैतिक दृष्टि का परिचय दिया है। औरंगज़ेब की भर्त्सना उसकी अनीति के कारण की गई है, विधर्मी होने के कारण नहीं, बाबर और अकबर की उदारता की ओर संकेत करके यह स्पष्ट कर दिया गया है। नीति-उपदेश की वृत्ति भी स्पष्ट है।

उल्लास अलंकार है; इसमें किसी के गुण-दोष के कारण दूसरे व्यक्ति में गुण दोष उत्पन्न होते हैं। यहाँ शिवाजी से शत्रुता 'एक दोष है उससे नगरों का उजड़ना दोष उत्पन्न होता है।

भाषा ओज पूर्ण तथा व्यावहारिक है। द्वित्ववर्णों तथा संयुक्ताक्षरों द्वारा ओज वृत्ति उत्पन्न की गई है। मुहाविरों तथा उर्दू शब्दों की सहायता से प्रवाह तथा व्यावहारिकता घटित की गई है।

७७

इन्द्र अपने श्वेत रंग के हस्तिराज ऐरावत को खोजते फिरते हैं; विष्णु अपने श्वेत वर्ण के क्षीर सागर को खोज रहे हैं; हंस अपने निवास स्थान, गंगा नदी को खोजते हैं और ब्रह्मा जी अपने वाहन श्वेत हंस को खोज रहे हैं; चकोर शुभ्र चन्द्रमा को देखना चाहता है; किन्तु शाहजी के पुत्र, महाराज शिवाजी तुमने ऐसे महान् पुण्य कार्य किए हैं कि तैंतीस कोटि देवता भी विस्मय-विमुग्ध हैं! तुम्हारे शुभ्र यश की श्वेतता में उक्त सारी श्वेत वस्तुएँ खो गई हैं; भगवान् शंकर अपने पर्वत कैलास को खोज रहे हैं और देवी पार्वती शंकर जी को ही खोज रही हैं!

काव्य सौष्ठव—पौराणिक आधार पर यशः प्रशस्ति का विनोद पूर्ण वर्णन है। काव्य में यश का वर्ण श्वेत माना गया है और प्रताप का लाल। यहाँ पर स्वयं भगवान् शंकर का शिवाजी के शुभ्र यश के बीच में लुप्त हो जाना, उस यश की तीव्रता का सूचक है। पार्वती द्वारा शिवजी की खोज विनोद पूर्ण है।

जहाँ एक रंग की वस्तुएँ इस प्रकार मिल जाँय कि भेद लक्षित न हो, वहाँ

मीलित अलंकार होता है; यहाँ पर यश की श्वेतता में सारी श्वेत वस्तुएँ लीन हो रही हैं; अतः मीलित अलंकार है।

भाषा में मधुरता प्रधान है। कोमल अक्षरों का प्रयोग है। अद्‌भुत भाव प्रमुख है। चमत्कार तथा आलंकारिकता युक्त छन्द है।

७८

वसु को कौन अपने वश में करता है? इस लोक में कौन अत्यन्त बड़ा है? साहस का सागर कौन है? क्षत्रियत्व की मर्यादा सुरक्षित रखने की बुद्धि किसमें है? चक्रवर्ती सम्राट् अथवा चक्रवाक पक्षी को सुख देने वाला कौन है? सब फूलों में कौन निवास करता है? याचक को अष्ट सिद्धियाँ तथा नव निधियाँ कौन प्रदान करता है? संसार के इन प्रश्नों का उत्तर, कविसमूह को मन्त्रणा प्रदान करने वाले कविवर भूषण, इस प्रकार देते हैं: दक्षिण नरेश, महाराज, वीरवर शाहजी के पुत्र, मालोजी मकरन्द के पौत्र, शिवाजी।

काव्य सौष्ठव—प्रश्नोत्तर अलंकार के आधार पर उत्तर इस प्रकार हैं: वसु को कौन वश में करता है? धर्म की पत्नी वसु को धर्मराज (शिवाजी) वश में करते हैं जो दक्षिण मार्ग, धर्म मार्ग, के अनुयायी हैं। वे दक्षिण, उदार सरल पुरुष हैं अतः वसु को वश में किए हैं।

इस लोक में अत्यन्त बड़ा कौन है? दक्षिण नरेश, शिवाजी।

साहस का सागर कौन है? सरजा (सिंह), महाराज शिवाजी।

क्षत्रियत्व की मर्यादा का विचार किसे है? सुभट को; श्रेष्ठ वीर को, शिवाजी को। अष्ट सिद्धि और नव निधियाँ याचक को कौन प्रदान करता है? शिवजी अर्थात् शिवाजी! चक्रवाक अथवा चक्रवर्ती राजा को सुख देने वाला कौन है?

सूर्यवंशी होने के कारण चक्रवाक को और राजपुत्र होने के कारण चक्रवर्ती पिता को सुख देने वाले हैं, शिवाजी।

सुमन में कौन निवास करता है? मकरन्द, शिवाजी के पितामह सत्पुरुषों के मन में निवास करते हैं।

छन्द का अन्तिम चरण शिवाजी का विशेषण है। कलात्मक प्रशस्ति वर्णन-अलंकारिकता प्रधान है।

७९

यदि औरंगजेब भी दक्षिण पर चढ़ाई करे तो उसे भी वहाँ से बिना कपड़े-लत्ते का होकर भागना पड़े। फिर उसने बहादुर खाँ को दक्षिण पर आक्रमण करने का भार दिया है !! भला पूर्ण प्रौढ़ गयन्द के भार को हाथी का बच्चा कैसे धारण कर सकता है ? शाइस्ता खाँ जैसे व्यक्ति जो सात पीढ़ी से इस पृथ्वी पर अपना प्रभुत्व बनाए चले आ रहे थे, वह भी शिवाजी के सामने से हार कर हट गए, अब ये बहादुर खाँ जैसे व्यक्ति सूबेदार बना कर शिवाजी के विरुद्ध भेजे जा रहे हैं !! यह तो वही लोकोक्ति चरितार्थ होती है कि अभी कल ही जोगी हुए और तरबूज़ को काट कर खप्पर बना लिया !! ऐसे लोग खूब ही योग साधेंगे !!

काव्य सौष्ठव—शिवाजी द्वारा शाइस्ता खाँ तथा बाद में बहादुर खाँ की पराजय ऐतिहासिक तथ्य हैं। इन सूत्रों के आधार पर शिवाजी का शौर्य चित्रित किया गया है। आलंकारिकता प्रधान है। छेकोक्ति अलंकार के द्वारा व्यंग्य-पूर्ण शैली में मुसलमान सूबेदारों की असमर्थता का वर्णन है।

भाषा में मुहाविरे तथा कहावतों की प्रधानता है। कप्पर, टप्पर आदि निश्चय ही 'खप्पर' का तुकान्त जोड़ने के लिए प्रयुक्त हुए हैं। 'भुवप्पर' प्रयत्न प्रसूत संधिरचना है। भाषा में प्रवाह तथा ओज है। विदेशी शब्दों का भी व्यावहारिक प्रयोग है।

८०

हे शाहजी के पुत्र ! तेरे वैर के कारण व्याकुल वैरियों से किरात लोग उन्हें वन में देख, विनोद पूर्वक पूछते हैं—कहो तो, क्यों इतने व्याकुल हो ? वे उत्तर देते हैं—हम सरजा के डर से इधर भाग आए हैं। किरात कहते हैं—तो अब सिंह के डर से तुम्हें यहाँ से भी भागना पड़ेगा। वे कहते हैं—हम तो शिव की बात कह रहे हैं और तुम चतुराई से बात बनाते हो। किरात कहते हैं—यदि शिव से शत्रुता है तब तो बड़ी कठिनाई है, उनसे वैर करके तो तुम त्रिलोक में भी नहीं बचोगे !

काव्य सौष्ठव—पौराणिक आधार पर शिवाजी के शौर्य का वर्णन। आलंकारिता प्रधान है। श्लेष वक्रोक्ति अलंकार है। सरजा तथा शिव शब्द श्लिष्ट हैं। शिवाजी के शत्रु 'सरजा' शिवाजी के लिए प्रयुक्त करते हैं, किरात लोग उसका अर्थ सिंह लगाकर उनका उपहास करते हैं। इसी प्रकार 'शिव' शब्द है।

शिव की त्रिपुरदहन सम्बन्धी पौराणिक कथा के आधार पर शिवाजी के व्यापक शौर्य का वर्णन है। वार्तालाप शैली में स्वाभाविक तथा प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया गया है।

८१

आज भी शिवजी मुंडों का हार प्राप्त करते हुए प्रसन्न होते हैं। भूतों को अपना भोजन प्राप्त करके आज भी प्रसन्नता होती है। तलवारों द्वारा आहत काले-काले हाथी आज भी घोर चीत्कार कर रहे हैं। सलहेर के समीप युद्धस्थल में सिंह-विक्रम शिवाजी ने दिल्ली की सेना के सिपाहियों का ऐसा संहार किया है कि रुहेलों के रक्त की नदी आज भी वहाँ बह रही है और यवन सैनिक आज भी सूर्यमंडल को भेद कर वीर गति प्राप्त करते हुए स्वर्गलोक को जाते हैं।

काव्य सौष्ठव—सजीव दृश्य-चित्रण किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से युद्ध की भीषणता यथार्थ है। १६७१ ई० में यह युद्ध हुआ था। पौराणिक परम्परा के आधार पर हिन्दुत्व का पोषण है। ध्वंस के देवता भगवान् शंकर तथा उनके भूतगण का आनन्द वर्णित किया गया है। वीर गति शत्रुओं के लिए भी सुलभ है, ऐसा कहने में भूषण की उदारता व्यक्त होती है।

वर्णन में ओज, प्रवाह तथा माधुर्य गुण एकत्र हैं। अनुप्रास का सफल प्रयोग है। विगत घटनाओं का वर्तमानवत् वर्णन है अतः भाविक अलंकार है।

८२

दुर्गपति शिवाजी के भय से भयभीत बहादुर खाँ (दक्षिण का सूबेदार सन् १६७२-७७ ई०) अपने मित्रों से बहुत आग्रह पूर्वक कहता है कि मित्रों, आगे मत बढ़ो, धोखा न खा जाना; यह वही प्रबल पराक्रम राजा शिवाजी है जिसने लाखों व्यक्तियों के बीच में जिराफ जैसे विशाल शरीर वाले शाइस्ता खाँ को

(१६६३ ई० में) अपमानित कर दिया। हिन्दू राष्ट्र रूपी द्रौपदी की मर्यादा-रक्षा करने का वचन देकर विराट्नगर के समान, अपने दुर्ग प्रतापगढ़ से बाहर आकर, कूट-मंत्रणा करके भीम के समान, अकेले ही अफजल खाँ जैसे कीचक को घमासान युद्ध की कीचड़ में सानकर समाप्त कर दिया।

काव्य सौष्ठव—पौराणिक तथा आलंकारिक आधार पर शिवाजी के आतंक का उदात्त वर्णन है। शिवाजी को भीम कहकर उन्हें बड़प्पन दिया गया है, यह उदात्त अलंकार है।

भाषा में व्यावहारिकता तथा स्वाभाविकता है। उर्दू शब्दावली का सफल प्रयोग है। आतंक का वर्णन करने में भय के आश्रय को उपहासास्पद बना देना कवि की मनोरंजक कला है। भूषण इसमें सफल हैं।

८३

शाहजी के पुत्र शिवाजी ऐसे हाथियों का दान करते हैं जिन्हें पाकर कविराज सारे जीवन के लिए निश्चिन्त हो जाते हैं। उन झूमते हुए हाथियों की पीठ पर स्वर्ण-खचित रेशमी वस्त्र की झूलें झलमलाती रहती हैं और जजीरों से जकड़े हुए वे जिस समय जोर करते हैं तो कड़-कड़ का शब्द उन जंजीरों से उत्पन्न होता है। वे मत्त हाथी मद बहाते हैं अतः उनके माथे पर भौंरे मड़राते हुए भनभनाते हैं, उनके घन्टे बजते रहते हैं, वे झुंड के झुंड हैं अतः उनके पैरों को एक साथ देखकर बरसने वाले बादलों का आभास होता है। उनका गर्जन सुनकर दिग्गज भी हत श्री हो जाते हैं और उनके मद-प्रवाह से बड़े-बड़े पर्वत भी डूब जाते हैं।

काव्य सौष्ठव—हाथियों का उदात्त वर्णन, दरबारी कवियों की विशेषता है। भूषण ने भी सफलता पूर्वक परम्परा का पालन किया है। इस वर्णन में सीमा का उल्लंघन कर दिया गया है अतः अत्युक्ति है। आलंकारिकता ही प्रधान है।

भाषा प्रवाह पूर्ण, चलती हुई है। अनुकरणवाची शब्दों का प्रयोग विशेष किया गया है—इससे वातावरण की सृष्टि होती है। अनुप्रास की सहायता से प्रवाह उत्पन्न होता है। ओज की सृष्टि भी होती है। उर्दू शब्दावली का सफल प्रयोग है।

८४

बादशाह ने गल-गर्जन करते हुए पूछा कि शिवाजी की प्रशंसा और हमारी हीनता का कथन क्यों करता है ?

हे आयुष्मान् शिवाजी, सुनिए, उन (बादशाह) का अहंकार समाप्त करके उन्हें उचित उत्तर देने के लिए कवि भूषणने इस प्रकार अर्ज की। आप यदि उन (शिवाजी) के जासूस को पकड़ पाते हैं तो उसे मरवा डालते हैं (जो अनुचित है) परन्तु वह आप के वजीरों को भी पकड़ कर उन्हें अपनी प्रजा बनाकर छोड़ देता है। आपको तो यही तथ्य स्वीकार करने पर मुक्ति मिल सकती है कि रण में जो कायर है वह कायर ही रहेगा और जो सिंह है वह सिंह ही रहेगा।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के किसी सेवक या गुप्तचर द्वारा औरंगजेब-भूषण-वार्तालाप का वर्णन, नाटकीय शैलीमें, किया गया है। बादशाह के क्रोध और भूषणकी निर्भीकता का सजीव चित्रण है। क्रोध भाव के आलम्बन भूषण हैं, उनकी निर्भीकता संचारी है।

विधि अलंकार के द्वारा एक-पूर्व-प्रतिपादित सिद्धान्त का कथन अन्तिम चरण में किया गया है।

भाषा व्यावहारिक है। ओज तथा प्रसाद पूर्ण है। उर्दू शब्दों का सफल प्रयोग है। अनुप्रास का सफल प्रयोग है—भाषा प्रवाहपूर्ण है।

८५

हे महाराज शिवाजी ! आज इस समय इस पृथ्वी पर तूही देव तुल्य विद्यमान् है। तू जनक के समान जीवन्मुक्त, ययाति के समान प्रतापी वंश परम्परा चलाने वाला और राजा अम्बरीष के समान विष्णु भक्त है। तेरे दान रूपी जल के सागरमें गुणीजनों का दारिद्रय तिनके के समान बह गया है। तेरा यश रूपी श्वेत कमल इतना विशाल है कि चन्द्रमा की किरणें उसकी पराग-केसर हैं, चाँदनी पराग है, नक्षत्र समूह उसमें मकरंद की बूंदों के समान संयुक्त है, कैलाश पर्वत उसका मूल है, आकाश गंगा उसका मृणाल है और आकाश उस पर भ्रमर के समान बैठा हुआ प्रतीत होता है

काव्य सौष्ठव—यशः प्रशस्ति का आलंकारिक तथा पौराणिक वर्णन है। उपमा और रूपक अलंकारों की प्रधानता है। अत्युक्ति की व्याप्ति सारे छन्दमें है, दान, यश आदि का सीमातिक्रमण युक्त वर्णन है। इसको प्रभावशाली बनाने के लिए पौराणिक महापुरुषोंसे तुलना है। भाषा में प्रसाद और माधुर्य का समावेश है। अनुस्वार युक्त वर्णों से मधुरता उत्पन्न की गई है। 'कयलास' जैसे शब्द थोड़ी सी तोड़-मरोड़ के आधार पर बनते हैं, जो अधिक उपयुक्त नहीं होती।

८६

महाराज शिवाजी ने दिल्ली के दलों का निःशंक होकर गंजन कर दिया। उन्होंने डंका बजाते हुए बड़े बांकपन के साथ सूरत शहर को लूट लिया। उनकी विषम वक्रता को देख और उनके ऐसे नगाड़ों को सुन कर दुष्टों के हृदय शंकित हो उठे। वे चकित होकर सोच विचार करने लगे और आँखों से आँसू गिराते हुए भरोच नगर की ओर चलने का उपक्रम करने लगे। अपने उद्देश्य को मन में निश्चित करके और कष्ट पूर्वक उसे प्रयोग में लाकर बार बार हल्ला करते हुए शिवाजी ने सेनाओं को परास्त किया। शीघ्र ही सब दिशाओं में उनके मद का प्रभाव छा गया और उससे दब कर दिल्ली नष्ट हो गई।

काव्य सौष्ठव—अमृत ध्वनि छन्द में २४ मात्राओं के छ चरण होते हैं। एक दोहा और एक काव्य छन्द मिलकर यह छन्द बनता है। इसमें कुण्डलिया का आभास दिखलाई पड़ता है। छेकानुप्रास अलंकार की प्रधानता है। वीर रस पूर्ण ओजगुण सम्पन्न शब्दावली का निर्माण किया गया है। विशेषता यह है कि प्रत्येक शब्द सार्थक है, कोई भी निरर्थक नहीं रक्खा गया है। सूरत की लूट ऐतिहासिक घटना है, उसी का प्रभावशाली वर्णन है।

८७

शिवाजी के योद्धा क्रुद्ध हो रहे हैं और स्फूर्ति से पूर्ण हैं। वे युद्ध में संलग्न हैं और घिरने पर भी मुँह नहीं मोड़ते। तलवार बज रही है और शत्रु वर्ग शरीर त्याग रहा है; झुँड के झुँड वीर स्वर्ग जा रहे हैं। क्रोध युक्त होकर मदोन्मत्तता

पूर्वक योद्धा भिड़ जाते हैं और चीत्कार करते हुए कण-कण कट कर गिर जाते हैं। चतुरंगिणी सेना युद्ध करके शिथिल हो रही है; शिव के साथी भूत प्रेत उनके साथ रक्त-पान करते हुए अनेक रंग कर रहे हैं। इस प्रकार घोर घमासान युद्ध करके अपनी कीर्ति को अटल कर दिया और शाहजी के सुपुत्र शिवाजी ने अपने खड्ग-बल से बीजापुरी सरदार बहलोल खाँ के अत्यन्त सुदृढ़ सैन्य को छिन्न-भिन्न कर दिया।

काव्य सौष्ठव—उपर्युक्त छन्द भी छेकानुप्रास का उदाहरण है छप्पय छंद ओज पूर्ण वीर रस वर्णन के लिए बड़ा उपयुक्त होता है। वर्णों को संयुक्त कर देने से भाषा में परुषता आ जाती है, जो कठोर भावों के लिए बहुत उपयुक्त होती है। क्रुद्ध, जुद्ध, रुद्ध, धुक्कि, कुक्कि आदि ऐसे ही शब्द हैं। युद्धक्षेत्र का सजीव वर्णन है ऐतिहासिक घटना के आधार पर शिवाजी के शौर्य का वर्णन है। यह वीरगाथा काल के युद्ध-वर्णन की प्रवृत्ति है जो शृंगार काल तक चली आई।

८८

सरल है। शिवाजी के भीषण आक्रमणों से छिन्न भिन्न होकर बादशाही महलों में वन्य पशु निवास करने लगे हैं, उसी का वर्णन किया गया है।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के शौर्य का आलंकारिक वर्णन। लाटानुप्रास तथा छेकानुप्रास का उदाहरण। खाने शब्द का एक ही अर्थ में अनेक शब्दों के साथ प्रयोग लाटानुप्रास है।

फारसी, अरबी शब्दों का सफल प्रयोग भाषा सौष्ठव में सहायक है। शाही महलों की स्थान नामावली के लिए इन शब्दों का प्रयोग उपयुक्त वातावरण की सृष्टि करता है।

८९

शिवाजी औरंगजेब के दरबार में आए। द्वारपाल उन्हें देखकर घबरा उठे। दरबार में नियंत्रण रखनेवाले अपना कर्तव्य भूलकर सन्नाटे में आ गए। कोई-कोई सरदार उनके आगे आकर उन्हें सम्मान प्रदर्शित करने को उद्यत हुए।

बादशाह शिवाजी को देखकर चकित रह गया, शिवाजी उसे देखते ही रहे और चारों ओर देखकर चकित हो गए; वहाँ पर विरोध का वातावरण बन गया। श्रीमान् शिवाजी के ग्रीष्मकालीन सूर्य के से प्रताप को देखकर मुसलमानों के नेत्रों की पुतलियाँ नक्षत्रों के समान मुँद गईं…।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी का आतंकपूर्ण चित्र है। औरंगजेब से भेंट होने पर जब उन्हें उचित सम्मान नहीं मिला, उस समय का उनका क्रोधपूर्ण-रूप अंकित किया गया है। औरंगजेब आलम्बन है, दरबार का वातावरण उद्दीपन है, भय, चकना आदि संचारी हैं—भयानक रस प्रमुख है। उपमा अलंकार अंतिम चरणमें स्पष्ट है। भाषा व्यावहारिक, प्रवाहपूर्ण मुहाविरेदार तथा उर्दू के शब्दों से युक्त है।

९०

कोई कहते हैं कि शिवाजी सबकी इच्छाएँ इस प्रकार पूर्ण कर देते हैं जैसे कल्पवृक्ष हों। कोई कहते हैं कि उनका शरीर इतना सुन्दर है मानों वे कामदेव के अवतार ही हों। कोई कहते हैं कि उनका राज्य अत्यन्त विस्तृत और शोभा-यमान है और वे मानों पृथ्वी पर के चन्द्र ही हों। कोई कहते हैं कि शिवाजी रणभूमिमें सिंह के समान युद्ध करते हैं और कोई कहते हैं कि वे मानो नृसिंह के अवतार ही हों।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी का देवतुल्य प्रभाव वर्णित है। महापुरुषत्व और देवत्व का सम्मिश्रण है। अलंकारिक शैली है—उल्लेख अलंकार प्रधान है—एक ही शिवाजी को अनेक व्यक्ति अनेक रूपों में देखते हैं। महिइन्दु में रूपक है। नरसिंह में यमक है।

भाषा मधुर तथा प्रवाह पूर्ण है। कोमल अक्षरों का प्रयोग है। मिलित वर्ण सानुनासिक होने के कारण मधुर हैं। प्रसाद गुण भी सारे छन्द में व्याप्त है। यश की प्रशस्ति है।

९१

दानके अवसर पर ब्राह्मणोंको देखकर शिवाजी के हृदय में स्वर्ण-पर्वत तथा धनके देवता कुबेर द्वारा उपलब्ध सारी सम्पत्ति लुटा देने का उत्साह जाग उठता

है। शाहजी के पुत्र शिवाजी के मुख मण्डल पर शिवजी की गुणावली सुनकर स्नेह झलक उठता है। इस संसार में हिन्दूराष्ट्र की रक्षा करने तथा मुसलमानोंको दण्ड देने के लिए वह वीर बड़ी ओजपूर्ण वाणी में ललकार भरता है। बादशाहों से युद्ध करने की वार्तामात्रसे उनके नेत्रों में उत्साह छलक उठता है।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के व्यक्तित्वमें वीर भाव के विविध अंगों का अंकन है। दानवीर, धर्मवीर, दयावीर तथा युद्धवीर का उदाहरण क्रमशः प्रत्येक चरण में उपलब्ध है। स्वभावसे ही शिवाजी इन कार्यों की ओर प्रेरित होते हैं अतः स्वभावोक्ति अलंकार है।

भाषा में ओज, प्रसाद तथा माधुर्य का संयोग है। अनुप्रास, मुहाविरों सा सफल प्रयोग है।

९२

युद्ध क्षेत्र में कहीं सर कटते हैं, कहीं धड़ नाचते हैं, कहीं हाथी की सूँड़ों की अधिकता से रणभूमि पट जाती है। कहीं गिद्ध शोभा दे रहे हैं, कहीं अत्यन्त प्रसन्न होने के कारण मन में मग्न होते हुए सिद्धगण हँसते हैं। कहीं भूत प्रेत घूम रहे हैं और आपस में बल पूर्वक भिड़ते हैं, वहाँ पर देवदूत इकट्ठे होते हैं। काली रणक्षेत्र में नाच रही है, शिव के गण चारों ओर से घेर कर हल्ला करते हुए आपसमें झगड़ते हैं। इस प्रकार घोर युद्ध मचाकर शाह के पुत्र शिवाजी ने अपना तेज अटल कर दिया और बहलोल खाँ के सुदृढ़ सैन्य को अपने खड्ग बल से छिन्न-भिन्न कर दिया।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के शौर्य का वर्णन। बहलोल दल आलंबन है; युद्ध क्षेत्र उद्दीपन है, जिसका व्यापक, विस्तृत वर्णन किया गया है। शिवाजी का उत्साह स्थायी भाव है। वीर रस प्रधान।

छप्पय में अमृतधुनि का आभास मिलता है—ओज की वृद्धि होती है। भाषा द्वित्व वर्णों से युक्त परन्तु प्रवाह पूर्ण है। अनुप्रास अलंकार ही प्रमुख है।

९३

जिस प्रकार गरुड़, सर्पों के समूह पर अपना अधिकार रखता है अथवा जिस प्रकार हाथियों के समूह पर सिंह अधिकार बनाए रखता है या जिस प्रकार

इन्द्र पर्वतों का अधिकारी है या पक्षियों के समूह पर बाज का अधिकार है अथवा इस पृथ्वी पर व्याप्त नवखण्डों में सूर्य की किरणों ने अन्धकार के समूह पर अधिकार जमाया है, उसी प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, जहाँ भी बादशाह का शासन है वहाँ शिवाजी का अधिकार है।

काव्य सौष्ठव—शिवा-शौर्य का व्यापक क्षेत्रमें प्रसार दिखलाया गया है। पौराणिक तथा प्राकृतिक उपमान-वाक्यों के द्वारा शिवाजी का प्रभाव वर्णित किया गया है। एक धर्मा मालोपमा अलंकार है—'दावा' समान-धर्म है। भाषा में व्यावहारिकता है, प्रचलित शब्दावली का प्रयोग है। अनुप्रास के द्वारा प्रवाह उत्पन्न किया गया है।

९४

चतुरंगिणी सेना सुसज्जित करके और अंगों में स्फूर्ति भरकर महाराज शिवाजी विजय के लिए यात्रा करते हैं। उनके बड़े-बड़े नगाड़ों के शब्द से श्रेष्ठ हाथियों के मस्तक से मद की नदियाँ बह चलती हैं। उनकी सेना चारों ओर देश-देश में, गली-गली में फैल जाती है और खलबली मचा देती है; हाथियों के ठेला ठेल से पर्वत भी उखड़ पड़ते हैं। चारों ओर जो धूल उड़ती है उसके बीच से सूर्य एक नक्षत्र मात्र लगता है और सागर ऐसा चंचल हो उठता है जैसे थाली में पड़ा हुआ पारे का बूँद।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के विजय-अभियान का उदात्त वर्णन है। उत्साह और आतंक का सम्मिलित दृश्यांकन है। अतिशयोक्ति तथा उपमा अलंकार प्रधान हैं। भाषा-सौष्ठव में अनुप्रास का सुन्दर योग है। ओजगुण की प्रधानता है।

९५

प्रेतिनी-पिशाच, निशाचर-निशाचरी सब मिलजुल कर बधाई गाते हैं। बहुत से भीषण भूत-प्रेत जो पर्वताकार तथा भयंकर हैं तथा झुंड की झुंड योगिनियाँ समूह बना कर एकत्र हुई हैं। स्वयं काली किलकार मार कर क्रीड़ा कर रही हैं और दिगम्बर शंकर भगवान् डमरू बजा रहे हैं। यह देख कर देवी पार्वती

पूछती हैं कि यह समाज आज किधर चला ? क्या शिवाजी महाराज ने किसी पर भौं टेढ़ी की है ? (अतः युद्ध होगा और इन भूत-प्रेतों का पेट भरेगा) ।

काव्यसौष्ठव—शिवाजी की विजय यात्रा का अधिभौतिक वर्णन है। स्वयं भगवान् शंकर को उनकी युद्ध यात्रा से प्रसन्नता होती है। उत्साह में हास्य तथा अद्भुत की झलक है।

भाषा ओज तथा प्रसादगुण से पूर्ण है। प्राकृताभास हिन्दी की प्रवृत्ति संयुक्ताक्षरों में मिलती है। व्यावहारिकता तथा प्रवाह पूर्णता मुहाविरों के साथ विद्यमान हैं।

९६

वीरवर शिवाजी ने बादशाहों से बराबरी का दावा किया और अनेक देशों को परास्त करके बादशाह के दरबार से अपने राज्य की सीमा निर्धारित की। उस हठी (शिवाजी) ने महाराष्ट्र में एक भी किला मुसलमानों के हाथ में नहीं रहने दिया; उन्हें पराजित करके और उनके हथियार छीनकर भगा दिया; वे बनों में बनजारों के समान मारे-मारे फिरते हैं। भूत-प्रेतादि मांसाहारी प्रसन्नता पूर्वक ताली बजा-बजा कर नाचते हैं। शत्रुओं की तलवारें तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दी गई है जो नक्षत्रों के समान बिखर गये हैं। हाथी के समान बड़े शरीर वाले सैनिक पर्वत के समान युद्ध-क्षेत्र में गिर रहे हैं। युद्धोन्मत्त सैनिकों के सर ऐसे कट-कट कर गिर रहे हैं जैसे मन्दोन्मत्त व्यक्तियों के झुण्ड गिरते-पड़ते दिखलाई पड़ रहे हों।

काव्यसौष्ठव—शिवाजीके उत्साह तथा युद्ध क्षेत्र का ओजपूर्ण वर्णन है। उपमा, अनुप्रास, यमक अलंकारों की प्रमुखता है। भाषा में मुहाविरोंसे विशेष रोचकता तथा लाक्षणिकता लाई गई है। ओज-गुण प्रमुख है। भाषा प्रवाह-पूर्ण है।

९७

युद्धक्षेत्र में जिस समय तोप, बाण, बन्दूक अथवा कोकबान आदि चलने लगते हैं, उस समय मोर्चों के पीछे बैठकर भी सुरक्षित रहना कठिन हो जाता

है। ऐसे कठिन समय में, भारत द्वेषी शत्रुओं पर अपना अधिकार जताते हुए वीरों को संयुक्त करके शिवाजीने आक्रमण करने की आज्ञा दे दी। उन शिवाजी के साहस का बखान कौन कर सकता है, जिनके सैनिक-समूह में इतना महत्त्व है कि वे मूछों पर ताव देते हुए, दुर्गों के कंगूरों तक कूद जाते हैं और सम्मुख शत्रुओं के मुख पर घाव लगाते हुए उनके किलों में कूद पड़ते हैं।

काव्य सौष्ठव—वीर रस का श्रेष्ठ उदाहरण है। रस के सभी अवयव विद्यमान हैं। शत्रु आलम्बन है, शिवाजी तथा उनके सैनिक आश्रय हैं, युद्ध-क्षेत्र उद्दीपन है, उत्साह स्थायी भाव है, मूछों पर ताव देना, कूदना आदि अनुभाव है, साहस, अमर्ष आदि संचारी भाव हैं।

युद्धक्षेत्र का सजीव वर्णन है। भाषा बड़ी ही ओजपूर्ण है, साथ ही प्रसाद गुण भी विद्यमान है।

९८

शिवाजी ने सलहेरि का युद्ध जीत लिया, यह सुनकर मनुष्य क्या देवताओं का भी हृदय धड़कने लगा। आज भी देवलोक मुग़ल पठानों और शिवाजी के वीरों की तलवारें खटक उठती हैं। बड़े-बड़े भूत प्रेतों के घरों में आज भी चन्दावत सरदारों के शव टँगे हुए झूल रहे हैं। पूर्णतया निर्वस्त्र, छिन्नभिन्न रूप में रणक्षेत्र में पड़े हुए, रक्तरंजित पठान वीरों के शरीर अब भी फड़फड़ा रहे हैं।

काव्य सौष्ठव—भूतकाल के युद्ध का प्रभाव वर्तमानवत् वर्णित हुआ है। भाविक अलंकार है। ऐतिहासिक घटनाका चमत्कारपूर्ण वर्णन है। सलहेरि का भीषण युद्ध १६७० ई० में हुआ।

भाषा अनुप्रासमयी, प्रवाहपूर्व तथा लाक्षणिक है।

वीरता, भय तथा जुगुप्सा के मिश्रित भाव विद्यमान् हैं।

प्रधानता वीर की है। भय तथा जुगुप्सा सहायक हैं।

९९

जिसके फनों की फूत्कार से बड़े-बड़े पर्वत उड़ जाते हैं और जिसके भार से कच्छप अवतार की कठिन पीठ कमल के समान छिन्न-भिन्न हो गई, जिसके

विषजाल में बड़े-बड़े ज्वालामुखियों की ज्वाला लुप्त हो जाती है और जिसके विष की झार से चिंग्घाड़ कर पृथ्वी को धारण करनेवाले दिग्गज मद प्रवाहित करने लगते हैं; जिसने इस सारे संसार को दुग्धपानके समान ग्रहण कर लिया है और जिसने वाराह अवतार को भी व्याकुल कर दिया और सागर के जल को विक्षुब्ध कर दिया है, ऐसे विश्वव्यापी मुगलदल रूपी महाव्याल को, महाराज शिवाजी का खड्ग रूपी गरुड़ निगल गया।

काव्य सौष्ठव—सांग रूपक का उत्तम उदाहरण है। मुगल दल के ऊपर एक विशाल सर्प का रूपक आरोपित किया गया है। शिवाजी के खड्ग पर गरुड़ का रूपक बांधा गया है। सर्वाङ्ग पूर्ण होनेसे रूपक सांग है। 'जनु' के प्रयोग से उत्प्रेक्षा और 'सो' से उपमा (प्रथम तथा तृतीय पंक्ति) अलंकार स्पष्ट होते हैं। अनुप्रास का प्रयोग तो सम्पूर्ण छन्द में है ही।

भाषा में ओज और प्रसाद गुण विद्यमान् हैं।

शिवाजी के प्रभाव की व्यापकता के लिए सुन्दर वातावरण प्रस्तुत किया गया है।

१००

वेदों की ख्याति तथा पुराणों की कीर्त्ति की (शिवाजी ने) रक्षा की। वाणी के तत्व को जानने वाली रसनाओं में उन्होंने रामनाम के उच्चारण की शक्ति सुरक्षित रक्खी। हिंदुओं की धर्म-रक्षा की, सैनिकों को जीविका प्रदान की; द्विजों के यज्ञोपवीत तथा माला (धर्म-चिन्हों) की रक्षा की। मुगलों और बादशाहों को मसल कर, शत्रुओं को पददलित करके, अपने मित्रों को वरदान देने में सदैव मुक्त हस्त रहे। अपने खड्ग-बल से राजाओं की राज्य-सीमा निश्चल रक्खी; देवालयों में देवताओं को स्थापित रक्खा और देश में धर्म की रक्षा की।

काव्य सौष्ठव—शिवाजी के महापुरुषत्व का प्रभावशाली वर्णन है। 'राख्यो' क्रिया पद की उसी अर्थ में बार-बार आवृत्ति होने के कारण पदार्थावृत्ति दीपक अलंकार है।'

भाषा व्यावहारिक तथा प्रवाह पूर्ण है। मुहाविरे तथा प्रचलित शब्दों का सफल प्रयोग है। प्रसाद गुण प्रधान है।

१०१

औरंगजेब निरंतर भय से चकित होकर चौंकता रहता है, सारी दिल्ली में शिवाजी का आतंक व्याप्त है और उनके आक्रमण का समाचार खटकता रहता है। बल्ख का अस्तित्व विलीन-सा हो जाता है, बीजापुर के शाह व्याकुल रहते हैं। और युद्ध करते हुए योरोपियन सैनिकों की भी नाड़ी का रक्त भय के कारण तीव्रता से प्रवाहित होने लगता है। उनके भय से गोलकुंडा के कुतुबशाह थर-थर काँपते हैं और भय के कारण हब्शियों के शाह की सेना भी भड़क उठती है। शिवाजी के नगाड़ों के शब्द से कितने ही बादशाहों के हृदय धड़क उठते हैं।

काव्य-सौष्ठव—भयानक रस का अच्छा उदाहरण है। सारा वातावरण उद्दीपन विभाव है। आतंक का अनुभव, व्याकुलता, नाड़ी फड़कना आदि संचारी हैं; काँपना, चौंकना आदि अनुभाव हैं; भय स्थायी भाव है।

मुहाविरों का सुन्दर प्रयोग है। भाषा में लाक्षणिकता तथा प्रवाह है। शब्दों का उचित चयन है, अनुप्रास का स्वाभाविक रूप दृष्टिगत होता है।

१०२

ये बादल नहीं हैं, दक्षिण की सेना उमड़ आई है; ये घटाएँ नहीं हैं, अभिमानी शिवाजी के हाथी हैं; बिजली की चमक नहीं है, योद्धाओं के खुले हुए खड्ग हैं; इन्द्र-धनुष नहीं है, सवारों की बछियों में लगे लाल-पीले निशान (झंडियाँ) हैं। इस प्रकार वर्षा के दृश्य को देखकर मुगलों की बेगमें भय के कारण घर से भाग चलती हैं, वे वायु के साधारण झोंकों से ही चौंक-चौंक पड़ती हैं। (कहती हैं) हे दिल्लीपति औरंगजेब, धोके में मत पड़ना, ये मेघ नहीं गरजते, सितारा-दुर्गपति शिवाजी के नगाड़े बज रहे हैं।

काव्य-सौष्ठव—शुद्धापह्नुति अलंकार प्रमुख है। वर्ण्य विषय का निषेधपूर्वक गोपन करके अवर्ण्य को आरोपित किया गया है। भयानक रस है। आतंक का सजीव वर्णन है—पावस ऋतु का वर्णन भी बड़ी सफलता के साथ किया गया है। दोनों की गम्भीरता अन्योन्याश्रित है।

भाषा ओजपूर्ण तथा रस के अनुकूल है। संयुक्ताक्षरों का सफल प्रयोग है। अनुप्रास के द्वारा प्रवाह उत्पन्न किया गया है। ओज गुण प्रधान है।

१०३

शत्रु-नारियों के भय का सजीव चित्रण है। प्रसिद्ध छन्द है। भावार्थ सरल है।

काव्य-सौष्ठव—अन्तिम चरण में यमक का कलात्मक प्रयोग है। पूरे छन्द में शिवाजी के आतंक का अभिनयात्मक तथा चित्रात्मक वर्णन किया गया है। शरीर की सुकुमारता तथा परिस्थितियों की कठोरता का विषमतापूर्ण वर्णन करके कवि ने वातावरण का सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। भयानक रस का सहायक करुण है। अनुप्रास का स्वाभाविक प्रयोग है। प्रसाद गुण प्रधान है।

१०४

भावार्थ सरल है—बहु-प्रचलित छन्द है।

काव्य-सौष्ठव—कलात्मक छन्द है। अलंकार की प्रमुखता है। यमक प्रधान है। भय और करुण का भाव मिश्रित है। छन्द भावात्मक से अधिक चमत्कारिक है। कला प्रधान है।

१०५

मालवा, उज्जैन, भीलसा, सिरौंज इत्यादि शहरों तक के लोग शिवाजी के आतंक से भागने लगते हैं। गोंडवाना, तेलंगाना, योरोपीय लोगों की बस्तियाँ, कर्नाटक और रुहेलखण्ड के रुहेले हृदय से भयभीत रहते है। बड़े-बड़े दुर्गपति, शाहजी के सुपुत्र शिवाजी के आतंक-वश धैर्य नहीं धारण कर पाते। बीजापुर, गोलकुण्डा, आगरा और दिल्ली के दुर्गों के द्वार (मारे भय के) केवल किसी-किसी दिन खोले जाते हैं।

काव्य-सौष्ठव—शिवाजी के व्यापक आतंक का चित्रण है। ऐतिहासिक संदर्भों के द्वारा सम्पूर्ण भारत पर शिवाजी का एकच्छत्र शासन प्रदर्शित करने का प्रयत्न है। भयानक रस है। भाषा अनुप्रासमयी है। मुहाविरों का सफल प्रयोग है।

१०६

विदेशियों के प्रदेशों में सदैव चिन्ता व्याप्त रहती है। हब्शियों के प्रदेश में भी

आतंक के कारण, कोई एक घड़ी के लिए भी सो नहीं पाता। बीजापुर की विपत्ति की बात सुनकर सब लोग भयभीत होकर भाग निकले हैं और धर्मकेन्द्र के समान महान् दिल्ली में भी खलबली मची हुई है। राजाधिराज, शाहों के भी शिरोमणि शिवाजी ने आज बादशाही प्राप्त करने की इच्छा की है; फलतः काश्मीर, बल्ख, बुखारे तक शोर मच गया है और रूम, शाम देशों के घर-घर में धूम मच रही है।

काव्य-सौष्ठव—शिवाजी के विजय-अभियान का चित्रण है। भय का भाव ही प्रमुख है। आतंक का व्यापक वर्णन किया गया है। वातावरण का सफल निर्माण किया गया है। अनुप्रास का स्वाभाविक प्रयोग है। विदेशी शब्दों का अच्छा आत्मीकरण है। रसात्मकता तथा चमत्कार का सुन्दर मिश्रण है।

१०७

शिवाजी ने अफजल खाँ को रणक्षेत्र में पराजित किया, जिसके कारण बीजापुर और गोलकुण्डा अत्यन्त अधिक भयभीत हो गए। अंग्रेज, फ्रान्सीसियों को मारकर उन्होंने हब्शियों और अन्य योरोपीयों को भी उनके जहाज उलट कर समाप्त किया। देखते-ही-देखते रुस्तम-ए-जमाँ को पराभूत कर दिया; सलहोर युद्ध की प्रतिध्वनि तो अब भी कानों में गूँजती है। औरंगजेब निरन्तर भयाकुल रहता है, चौंकता है और कहता है कि मित्रो, सचेत रहना, पता लगाए रखना, कहीं शिवाजी यहाँ न आ धमके!

काव्य-सौष्ठव—ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित छन्द है। योरोपीय लोगों के भय का वास्तविक वर्णन किया गया है। वे शिवाजी से इतने ही भयभीत थे जितना कविने वर्णित किया है। रुस्तमे जमाँ के साथ का युद्ध भी ऐतिहासिक घटना है। औरंगजेब के भय में हल्का-सा विनोद का भाव है। उसकी दशा हास्यास्पद है।

भाषा में लाक्षिणकता, मुहाविरों का प्रयोग सफलतापूर्वक किया गया है। शब्दचयन सुन्दर तथा व्यापक है। 'मयदान' में कुछ शब्द को विकृत करने की प्रवृत्ति है। 'दराज' शब्द का प्रयोग बहुत उपयुक्त नहीं है।

१०८

न तो यह दारा के ऊपर आक्रमण करना है, न खजुए की लड़ाई है, न बालक मुरादशाह को बाँध लेना है। न तो यह काशी विश्वनाथ के मंदिर को ध्वंस करना है और न गोकुल ग्राम का निवास है। यह देवी का देवालय या गोपाल मंदिर भी नहीं है। जिसने कितने ही दुर्गम किले जीत लिए हैं, कितने ही बैरियों को काट डाला है, उस शाहों के कुल को पीड़ा पहुँचाने वाले (शिवाजी) को क्या तू नहीं जानता ? हे दिल्लीपति। यह महाकाल शिवाजी का आघात है; दिल्ली डूबती है; अब उसे संभालता क्यों नहीं ?

काव्य-सौष्ठव—दिल्लीपति के भ्रम का निषेधपूर्वक निवारण करके सत्य बात का उद्‌घाटन किया गया है। भ्रान्त्यापह्नुति अलंकार है। शिवाजी से महाकाल का रूपक भी बाँधा गया है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर रचित है। १६६९-७० में देश के अनेक मंदिरों का विध्वंस औरंगजेब की आज्ञा से हुआ। लाक्षणिक शैली में औरंगजेब की लघुता व्यक्त की गई है। व्यंग्य के द्वारा आक्षेप किया गया है।

भाषा प्रवाहपूर्ण, अनुप्रास की स्वाभाविकता से युक्त है। शब्दावली व्यावहारिक है। प्रसाद और ओज गुण प्रमुख हैं।

१०९

किसी दूसरे राजा पर सदल-बल आक्रमण करेंगे और उसके श्रेष्ठ योद्धा समूह से युद्ध करेंगे। रूम, बल्ख, बुखारे जाने को भी प्रस्तुत हैं और सागर पार करके श्याम और चीन देश भी जा सकते हैं। इस प्रकार सारे उमराव एक मत निश्चित करके शाहंशाह औरंगजेब के पास आकर कहते हैं कि हजरत ! हम भीख माँगकर खा लेंगे, बिन मनसब के भी रह लेंगे, किन्तु महाशक्तिशाली शिवाजी से युद्ध करने न जायँगे।

काव्य-सौष्ठव—शिवाजी के आतंकवश सारे अमीर-उमरा प्रतिज्ञा करते हैं कि वे शिवाजी से लड़ने न जायेंगे; यहाँ पर प्रतिज्ञाबद्ध स्वभाव का परिचय मिलता है। सरदारों के भय का स्वाभाविक चित्रण है। भाषा में अनुप्रास, यमक, लोकोक्ति, मुहाविरों का अच्छा समावेश है। प्रसाद गुण प्रधान है।

११०

राणा (उदयपुर) केतकी पुष्प के समान हुए, अन्य राजे बेले के पुष्प के समान हुए। भ्रमर के समान औरंगजेब स्थान-स्थान पर इनके द्वारा सुख-साधन प्राप्त करता रहता है। सारा अमीर-वर्ग परागपूर्ण कुन्द पुष्प के समान हुआ; इस पुष्प-समाज पर बादशाह भौंरे के समान मँडराता है। केवल एक शिवाजी ने देश-देश की लज्जा का एकत्रीकरण दक्षिण में कर रक्खा है। जिस प्रकार भौंरा चम्पा-पुष्प को छोड़कर दूर भागता है उसी प्रकार औरंगजेब भ्रमर हुआ और शिवाजी चम्पा-पुष्प हुए।

काव्य-सौष्ठव—उपमा, रूपक तथा स्वभावोक्ति अलंकारों के द्वारा शिवाजी-औरंगजेब का जन्म-जात वैर ध्वनित किया गया है। प्राकृतिक उपमानों की सहायता से स्वाभावोक्ति घटित की गई है। भ्रमर-चम्पा का विरोध कवि-प्रौढ़ोक्ति है।

भाषा में माधुर्य तथा प्रसाद गुण प्रमुख हैं। आलंकारिक छन्द है।

१११

जो सभी अमीर-उमरावों से ऊपर स्थान पाने योग्य था, उसे छैहजारी मंसबदारों के निकट खड़ा किया गया। इस कार्य को अत्यन्त अनुचित जानकर (शिवाजी) मन में कुपित हुए; न तो उन्होंने बादशाह को सलाम किया और न शीतल वाणी से बात ही की। दरबार में जब वह गरजने लगा तो सारी बादशाही के प्राण सूख गए। क्रोधावेश में शिवाजी का लाल मुख देखकर औरंगजेब का मुख काला पड़ गया और सिपाहियों के मुख पीले पड़ गए।

काव्य-सौष्ठव—ऐतिहासिक आधार पर रचित छन्द है। १६६६ ई० में शिवाजी ने आगरे में औरंगजेब से भेंट की थी। दरबार मे उनका अपमान हुआ था—उक्त वर्णन उसी घटना से संबंधित है।

विपरीत कारण से कार्य की उत्पत्ति होती है; लाल मुख देख कर बादशाह का मुख काला पड़ जाता है, अतः विभावना अलंकार है।

शिवाजी का सजीव चित्र तथा दरबार का आतंक से अभिभूत दृश्य सफलता से अंकित हुआ है।

भाषा व्यावहारिक, मुहाविरेदार तथा सजीव है।

११२

युद्धक्षेत्र में कुपित होकर, हाथ में तलवार लेकर, शिवाजी औरंगजेब के दरबार में कूद पड़े। उन्होंने विकट योद्धाओं को काट दिया और हाथियों की सूँड़ें काट-काटकर रणभूमि में डाल दीं और उनसे युद्धभूमि पाट दी। उन्होंने शत्रुओं को सितारा गढ़ में काट डाला। रेवा के तट पर उन्होंने शत्रुओं को इस प्रकार छिन्न-भिन्न किया कि चौंसठों योगिनियाँ आनन्दपूर्वक नृत्य करने लगीं, जिसे देख शिवाजी सन्तुष्ट हुए। भूत-प्रेत आदि आँतों की तन्त्री, शवों की खाल के मृदंग तथा खोपड़ियों पर ताल बजाते हुए उत्सव मनाने लगे।

काव्य-सौष्ठव—उक्त छन्द ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर रचित है। १६७३ ई० में शिवाजी ने सतारा पर अधिकार किया था। १६७५ ई० में उन्होंने नर्मदा (रेवा) पार करके भड़ौच को लूटा था, जहाँ विदेशियों की बस्ती थी।

उनकी शिवभक्ति इस छन्द में संकेतित है। शंकर के गणों को प्रसन्न करके वे सन्तुष्ट होते हैं।

युद्धोत्साह का ओजपूर्ण चित्रण है।

भाषा भी ओज, प्रवाह तथा व्यावहारिकता से युक्त है।

११३

सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में आदि से अन्त तक जैसे राजे वे सब हुए, वैसे कोई न हुए। बाबर, अकबर, हूमायूँशाह ने अपने शासन में बड़े प्रेम-पूर्वक स्वर्ण-रत्नों से उसे सुसज्जित किया था। परन्तु उन सब मुगलों की प्रजा ने शिवाजी को चौथ दी और मराठों ने दौड़-दौड़कर उस विस्तृत नगर का घर-घर लूट लिया। अब वही सूरत शरीर में राख लगा कर बैठी हुई दिन-रात (बि) सूरती रहती है, शिवाजी ने उसे इस प्रकार मार-मारकर हतप्रभ कर दिया है।

काव्य-सौष्ठव—ऐतिहासिक छन्द है। शिवाजी ने सूरत को दो बार, सन् १६६४ तथा १६७० ई० में लूटा था। यह बड़ी सम्पन्न नगरी थी और शिवाजी

ने यहाँ से करोड़ों रुपए की सम्पत्ति लूटी। वास्तव में मराठों ने सूरत की दुर्दशा कर डाली थी। स्वाभाविक वर्णन है।

यमक तथा अनुप्रास अलंकार प्रधान है।

भाषा मुहाविरेदार तथा प्रवाहपूर्ण है।

११४

लाल कमल के समान अरुण नेत्रों से प्रवाहित होने वाले, काजलयुक्त आँसुओं की धारा, यमुना के समान प्रवाहित होती है। गले से मोतियों की मालाएँ छूटकर झूलती हुई, गंगा की (श्वेत) धारा की शोभा धारण करती हैं। सिन्दूर का अरुण रंग सरस्वती के समान प्रतीत होता है। शिवाजी के सुयश-वर्णन के लिए यह उक्ति उचित ठहरती है कि जहाँ-जहाँ तुम्हारे भय से शत्रुओं की पत्नियाँ भागती हैं, वहाँ-वहाँ मार्ग में त्रिवेणी का निर्माण होता जाता है।

काव्य-सौष्ठव—आलंकारिक यश-वर्णन सम्बन्धी छन्द है। रूपक तथा अन्तिम चरण में उत्प्रेक्षा अलंकार है। अनुप्रास के प्रयोग से माधुर्य गुण उत्पन्न किया गया है। भय तथा शृङ्गार का सम्मिश्रण है। भयका सहायक करुण भी है। चमत्कार प्रधान है।

११५

डाढ़ी रखनेवालों की छाती निरन्तर जलती रहती है; जैसे-जैसे हिन्दूराष्ट्र का विस्तार हुआ है उसीके अनुरूप उसकी मर्यादा बढ़ी है। प्रजा के हृदय का क्षोभ बहुत कुछ शान्त हो गया है और तुरकाने का अभिमान मिट गया है। दिल्ली-पति का हृदय, पुरुषश्रेष्ठ शिवाजी की धाक सुन-सुनकर, धड़कता रहता है। रणभूमि में मारे गए यवनों के शीश चबाकर चण्डी मोटी हो गई है और चगताई वंश की यश-सम्पत्ति क्षीण पड़ गई है।

काव्य-सौष्ठव—शिवाजी के आतंक का ओजपूर्ण वर्णन है। धर्मवीर तथा युद्धवीर का रूप प्रधानतया अंकित किया गया है। इस प्रकार वे लोकरक्षक हैं। भाषा बड़ी ही ओजपूर्ण है। अनुप्रास का सफल प्रयोग है। परुष वर्णों की भी आवृत्ति है। मुहाविरों का भी सुन्दर प्रयोग है। भाषा संगठित और प्रवाहपूर्ण है।

११६

कितने ही देश अपने दल के बल से पददलित कर दिए। सम्पूर्ण दक्षिण को अपने चंगुल में पकड़ कर चख गया। गुजरात का सारा यश, वैभव छीन लिया और सूरत का सम्पूर्ण रस चूसकर छोड़ा। अपने पंजों से पछाड़कर म्लेच्छों को दलमल दिया; केवल वही बच सके जिन्होंने दीन वाणी से प्राण-भिक्षा माँग ली। सौ रंगों वाले वीर शिवाजी के सामने नौरंग वाले औरंगजेब का एक रंग भी शेष न रह सका।

काव्य-सौष्ठव—शिवाजी की यशःप्रशस्ति। उनकी बहुमुखी तथा प्रभावशाली प्रतिभा का चित्रण चमत्कारपूर्ण, आलंकारिक शैली में किया गया है। काव्यलिंग अलंकार है। युक्तिपूर्वक अर्थ-समर्थन, अर्थात् शिवाजी का सौरंगत्व प्रमाणित किया गया है। नौरंगत्व का हरण कर लेने के कारण सौरंगत्व स्थापित हुआ। अनुप्रास तथा मुहाविरों के कारण भाषा सुसंगठित हो गई है।

११७

रावराजा चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल ने युद्ध-यात्रा की है, उनके बड़े-बड़े हाथी उत्साह से उद्दीप्त हो रहे हैं। इतनी धूल उड़ी है कि भाद्र मास के मेघों के समान आकाश धूलि-मंडित हो गया है। योद्धागण बर्छियाँ और तलवारें फिरा रहे हैं जो बिजली के समान चमक रही हैं। बड़े-बड़े खान, उमराव तथा राजाओं के हृदय पर हथौड़े के समान चोट करने वाली और शत्रु-स्त्रियों को व्याकुल कर देने वाली, उनके नगाड़ों की धमक शत्रुओं के निवासस्थानों की चहारदीवारी को लाँघकर घर में प्रवेश करती है।

काव्य-सौष्ठव—पूर्णोपमा अलंकार।

छत्रसाल बुन्देला की वीरता का उदात्त, ओजपूर्ण वर्णन है। उत्साह का सफल चित्रण है। अनुप्रास के सफल प्रयोग से भाषा में ओज और प्रवाह उत्पन्न किया गया है। युद्धयात्रा का सजीव वातावरण अंकित किया गया है।

११८

बड़ी-बड़ी सर्वाङ्गपूर्ण सेनाओं को अचानक चकित कर देने वाली, चंपतराय के पुत्र छत्रसाल की धाक, उन (सेनाओं) के चारों ओर चक्कर लगाती रहती है। बादशाही प्रभुत्व को उसने पूर्णतया परास्त कर दिया है, किसी भी उमराव ने उसके सम्मुख तलवार उठाने का साहस नहीं किया। उस यशस्वी छत्रसाल की बसाने और उजाड़ने की स्वभावगत रीति को सुन-सुनकर बड़े-बड़े विजेता राजा भी करद होकर उस महेवा महिपाल के सेवक बन गए।

काव्य-सौष्ठव—उपमा तथा अनुप्रास प्रधान अलंकार हैं।

छत्रसाल की युद्ध-वीरता का ओजपूर्ण शैली में वर्णन है।

मुहाविरों के कारण भाषा में मनोरम लाक्षणिकता है तथा ओज गुण प्रधान है।

११९

बेतवा के रणक्षेत्र में छत्रसाल क्रोधपूर्वक अस्त्र ग्रहण करके उतर पड़े; उधर पठान भी क्रोधित होकर झपट पड़े। असीम साहसी उनके योद्धा कबड्डी के खिलाड़ियों के समान, अपने सैकड़ों हजारों प्रतिद्वन्द्वी योद्धाओं को हजारों बार चपेट देने लगे। रणचण्डी प्रसन्न होकर आशीर्वाद देने लगी और शंकर के गण नरमुण्डों को प्राप्त करने के लिए झपटने लगे। सागर के समान अब्दुस्समद की सेना पर बुन्देलों की बर्छियाँ तथा तलवारें बड़वानल की लपटों के समान चमकने लगीं।

काव्य-सौष्ठव—पूर्णोपमा अलंकार है। अनुप्रास का बड़ा सुसंगठित तथा सफल प्रयोग है।

वीर तथा रौद्र का समन्वित वर्णन है। वीर प्रधान है।

ऐतिहासिक घटना पर आधारित छन्द है। छत्रसाल की स्वाभाविक तथा वास्तविक वीरता का सजीव चित्रण है। वातावरण का सुन्दर चित्रण है।

भाषा में ओज गुण प्रमुख है। मुहाविरों के प्रयोग ने भाषा को व्यावहारिकता प्रदान की है।

१२०

भुजा रूपी सर्पराज की समवयस्का सखी, सर्पिणी, के समान शत्रुओं के भयंकर तथा बड़े-बड़े दलों को भगा-भगाकर भक्षण कर जाती है, योद्धाओं के कवचों तथा लौह वर्मों को इस सरलता से चीर देती है जिस प्रकार मछली जल के प्रवाह को तैरकर पार कर जाती है। रावराजा चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल के बल-समूह का बखान कौन कर सकता है? पर-कटे पक्षियों के समान क्षीण होकर शत्रुयोद्धा रणक्षेत्र में पड़े हैं; तेरी बरछी ने दुष्टों का बल क्षीण कर दिया है।

काव्य-सौष्ठव—छत्रसाल की वीरता का आलंकारिक वर्णन है। रूपक, उपमा, यमक तथा अनुप्रास प्रमुख अलंकार हैं। बर्छी की शक्ति से छत्रसाल की शक्ति ध्वनित की गई है। बर्छी की युद्धवीरता का ओजपूर्ण वर्णन है। वीर रस प्रधान है। अन्तिम चरण में यमक, अनुप्रास के आधार पर भाषा-चमत्कार उत्पन्न किया गया है। कलात्मक छन्द है।

१२१

छत्रसाल का अखंड तेज सुशोभित हो रहा है, उनका सुयश चारों ओर छाया हुआ है, उनके यहाँ बड़े-बड़े हाथी गरजते रहते हैं जो पृथ्वी को अपने मस्तक पर धारण करनेवाले हाथियों के हृदय में भी शूल उत्पन्न कर देते हैं। उनके प्रताप के सम्मुख सूर्य भी मन्द पड़ जाता है और दुष्ट शत्रु अपनी सारी वीरता भूल कर चिन्तायुक्त हो जाते हैं। हाथी-घोड़ों और पैदलों की कतार को अनेक प्रकार से सुसज्जित करके उन्होंने दान कर दिया है, ऐसा दीनों का पालन करने वाला दूसरा कौन हो सकता है? (अतः) अन्य राव-राजाओं की ओर ध्यान न देकर अब या तो शाहूजी की सराहना करूँगा या महाराज छत्रसाल की।

काव्य-सौष्ठव—छत्रसाल की दानवीरता का वर्णन प्रधान है। शिवाजी के पौत्र शाहूजी की दानवीरता छत्रसाल की दानवीरता के समकक्ष रखी गई है। छत्रसाल के यहाँ भूषण सं० १७३१ में गये थे। छत्रसाल ने इनको विदा करते समय इनकी पालकी के डण्डे में अपना कन्धा लगा दिया था, उसी समय यह छन्द भूषण ने पढ़ा था।

प्रशस्ति-वर्णन का सुन्दर छन्द है। अतिशयोक्ति अलंकार है। भाषा व्यावहारिक तथा प्रवाहपूर्ण है।

१२२

अपने बाल्यकाल में ही उसने तहव्वर खाँ को सेना समेत ध्वस्त कर डाला। युवावस्था में रुंडी और खुंडी को समाप्त किया और समद खाँ को भी समाप्त कर दिया, परन्तु उसके बल की थाह न मिली। वृद्धावस्था में भूख बढ़ जाने से बगश खाँ को वंश समेत चबा गया और कितने ही म्लेच्छों के छोकरों को खा जाने पर भी उस डोकरे ने डकार भी न ली; सबको हजम कर गया।

काव्य-सौष्ठव—ऐतिहासिक आधार पर लिखा हुआ छन्द है। छत्रसाल की युद्धवीरता का विनोदपूर्ण वर्णन है। मुहाविरों तथा अन्तिम चरण में लोकोक्ति का उपयुक्त प्रयोग है।

१२३

म्यान से निकलते ही प्रलयकालीन सूर्य के समान किरणें बिखराती है और हाथियों के झुण्ड को अन्धकार-समूह के समान छिन्न-भिन्न कर देती है। शत्रुओं को कण्ठ में लपलपाती हुई सर्पिणी के समान जा लगती है और भगवान् शंकर को मुण्डमाल अर्पित करती हुई उन्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न करती है। हे युवराज दीर्घबाहु वीर छत्रसाल, तेरी तलवार का वर्णन कहाँ तक किया जाय! कितने ही वीर शत्रुयोद्धाओं को काट-काटकर कालिका के समान, किलकारी मारती हुई, वह काल को भोजन प्रदान करती है।

काव्य-सौष्ठव—तलवार-वर्णन, वीर-रस के अन्तर्गत एक आवश्यक अंग है। बर्छी वर्णन के समान इसके द्वारा भी युद्धवीर नायक का शौर्य चित्रित किया गया है। पूर्णोपमा अलंकार प्रधान है। अनुप्रास का प्रयोग स्वाभाविक रूप में हुआ है; अन्तिम चरण में वह प्रयत्न-प्रसूत है। ओज गुण प्रधान है। आलंकारिक शैली तथा पौराणिक वातावरण की पृष्ठभूमि ग्रहण की गई है।

१२४

प्रस्तुत छन्द बूँदी नरेश छत्रसाल हाड़ा की वीरता पर लिखा गया है। सन

१६५८ ई० में ये दारा की ओर से सामूगढ़ की लड़ाई में औरंगजेब से लड़े और मारे गए। ये छत्रसाल बुंदेला से भिन्न थे।

काव्य-सौष्ठव—पूर्णोपमा, पदार्थवृत्ति दीपक, परिसंख्या तथा पर्याय अलंकार।

युद्धक्षेत्र का उत्तेजनापूर्ण वातावरण चित्रित किया गया है। भाषा स्वाभाविक तथा प्रवाहपूर्ण है। अनुप्रास का सफल प्रयोग है।

१२५

अत्यन्त सम्माननीय पद पर प्रतिष्ठित पिता शाहजहाँ को कैद करके मानों मक्के में ही आग लगा दी। अपनी ही माता से उत्पन्न, सगे भाई दारा को पकड़कर मार डाला और कुछ भी दया न दिखलाई। पहले कसम खाकर मुराद को अपने पक्ष में कर लिया और बाद में उसके साथ भी छल कर डाला। हे औरंजेब ! इस प्रकार की अनीति करके तुम्हें बादशाही मिली है।

काव्य-सौष्ठव—औरंगजेब की अनीतियों का स्पष्ट कथन है। भूषण ने यह छन्द निर्भीकतापूर्वक औरंगजेब के सन्मुख पढ़ दिया था। १६५८ ई० में शाहजहाँ को कैद किया गया। (देखिए छन्द १०८) ऐतिहासिक तथ्यों की विशेषता है।

१२६

हाथ में माला लेकर सबेरे भजन करता हुआ सा प्रतीत होता है परन्तु मन की सारी कपट-लीला उस जप करने में स्मरण करता रहता है। आगरे में दारा को चौक में चुनवा दिया, बूढ़े पिता को मारकर उसका राज-पद छीन लिया। शुजा को विचलित किया और और मुराद का वध किया। इसी प्रकार कितने ही संबंधियों को चुपके से मार डाला। अब आप उसी प्रकार सच्चे शाह हो गए हैं जिस प्रकार सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली तप करने बैठती है।

काव्य-सौष्ठव—ऐतिहासिक आधार पर निर्मित छन्द है। लोकोक्ति के आधार पर व्यंग्य द्वारा औरंगजेब की अनीतियों का स्पष्ट कथन है। उदाहरण अलंकार है। शब्दों में कहीं-कहीं तोड़-मरोड़ है (सूजा, चपके इत्यादि)—भर्त्सना का भाव स्पष्ट है।

१२७

संसार से सिपाहियों का प्रेमी उठ गया; सब प्रकार से वीरता का वेश धारण करने वाला उठ गया; पृथ्वी पर से धर्म उठ गया; विख्यात राव-राजाओं को अलंकृत करने वाला उठ गया; सुकवियों को शील प्रदान करने वाला उठ गया; यशपूर्ण शरीर उठ गया, (फलतः) मध्य देश में मुसलमानों का समूह फैल गया; भिक्षुकों के भाग्य फूट गए। रणक्षेत्र में भगवंतराय की मृत्यु हुई; हिन्दूराष्ट्र के के कुल को धारण करने वाला स्तम्भ अरारा कर टूट गया।

काव्य-सौष्ठव—पदार्थवृत्ति दीपक तथा प्रतिवस्तूपमा अलंकारों के द्वारा भगवंतराय (असोथर नरेश) का निधन वर्णित किया गया है। भाषा में व्यावहारिकता प्रधान है। उर्दू शब्दों का प्रयोग तथा मुहावरों की लाक्षणिकता से भाषा मनोरम हो उठी है। करुण प्रधान है। स्मृति संचारी है। युद्धवीर, धर्मवीर, दानवीर के रूप में भगवन्तराय का स्मरण किया गया है।

१२८

यदि अपने दर्शन-मात्र देकर तुम जीवन नष्ट करते हो, तो मैंने जान लिया कि तुम्हारा जीवन-द नाम केवल कहानी में कहने भर को ही है। अथवा जिन्हें भी घनश्याम कहा जाता है, वे सब मुझे कष्ट देने वाले हैं, यह बात आज मैंने निश्चय करके अपने हृदय में जान ली। किन्तु किसी पर क्रोध क्या किया जाय ? यह तो अपने भाग्य का ही दोष है। जैसे पानी से आग उठती है। कितनी पीड़ा है कि हे मेघराज ! तुम्हारे आने पर सारी पृथ्वी शीतल हुई किन्तु जलती हुई मैं शीतल न हो सकी।

काव्य-सौष्ठव—वियोगिनी की उक्ति है। मेघ उद्दीपन हैं। स्मृति विषाद, संचारी भाव है। वियोग शृंगार का सुन्दर छन्द है। अतिशयोक्ति, सन्देह तथा श्लेष अलंकार हैं। भाषा अनुप्रासमयी तथा माधुर्य, प्रसाद गुणों से युक्त है। 'निज' का 'नीज' उचित प्रयोग नहीं है।

१२९

यमराज की (दक्षिण) दिशा से आने के कारण और यमराज का सम्बन्धी

होने के कारण मलय समीर प्रलय मचाने वाला बना हुआ है। मलय वृक्ष में सर्प निवास करते हैं, अतः मलय पवन सर्पों का साथी है; चन्दन के समान ही स्पर्श मात्र से डस लेता है; अतः इस मलय समीर में विष का गुण विशेष प्रबल है। चन्द्रमा सागर का सुपुत्र है, कल्पवृक्ष का भाई है, विराट् भगवान् का नेत्र है और उसके शरीर में अमृत का स्रोत विद्यमान् है। हे चन्द्र, तू पृथ्वी का भूषण, द्विजेश, कलानिधि कहा जाता है, फिर तू यह बधिक का कार्य क्यों करता है ?

काव्य-सौष्ठव—वियोगिनी की उक्ति है। वसन्त का दक्षिण पवन तथा चन्द्र की शीतल चाँदनी वियोगाग्नि को और भी उद्दीप्त करते हैं। ये सब उद्दीपन हैं। वियोग के संचारी विषाद, दीनता आदि हैं। वियोग की व्याधि, मरण दशाओं का वर्णन है।

ऊहात्मक वर्णन हैं। काव्यलिंग तथा अतिशयोक्ति अलंकार हैं। भाषा मधुर तथा प्रवाहपूर्ण है।

१३०

भावार्थ सरल है।

काव्य-सौष्ठव—वियोग शृंगार। वियोगिनी की उक्ति पथिक के प्रति। वसन्त ऋतु का उद्दीपन-रूप। शृंगार-युगीन कवियों ने वसन्त का ऋतुराज-रूप में प्रचुर वर्णन किया है। यद्यपि ये वर्णन परंपरागत हैं, किन्तु श्रेष्ठ कवियों ने ऋतु का वातावरण उत्पन्न करने में पर्याप्त सफलता पाई है। पथिक-दूत के द्वारा सन्देश भेजने में उद्धव-सन्देश का भी आभास है। वसन्त आगमन की ओर संकेत करके 'कंत' से घर आने का निवेदन ध्वनित किया गया है।

भाषा का माधुर्य तथा प्रसाद गुण स्पष्ट है।

१३१

बार-बार माँगने पर भी ऐसी देह पुनः प्राप्त न होगी। वही इस पृथ्वी पर लौटकर न आएगा जो मीन-मेख नहीं जानता; इधर-उधर की नहीं करता [उसी का पुनर्जन्म न होगा]। जितने मणिमाणिक्य हैं उन्हें, मन में समझ कर कहते

हैं, कि वे पृथ्वी पर ही धरे रहेंगे और वहीं उन्हें रहना भी चाहिए। मनुष्य को केवल एक (ईश्वर की) भूख रखनी चाहिए, आभूषणों की भूख नहीं रखनी चाहिए। यही इच्छा रखनी चाहिए कि भूषण को राजा बना दिया जाय (कवियों को प्रचुर दान दिया जाय)। आकाश मार्ग से चलने के समय यमराज मणि-माणिक्यों को गिनने नहीं देगा; नग्न ही इस संसार को छोड़ना पड़ेगा, साथ में हाथी नहीं चलेंगे।

काव्य-सौष्ठव—शान्त रस है। संसार की असारता का प्रदर्शन करके, तथा श्मशान वैराग्य द्वारा निर्वेद उत्पन्न किया गया है। उद्‌बोधन की प्रवृत्ति स्पष्ट है। शृंगार-युगीन प्रवृत्ति, कविराजों का दान माँगना भी व्यक्त होता है। अनुप्रास और यमक की छटा दर्शनीय है।

———